कल्पमेधा

*कोई वस्तु अच्छी या बुरी नहीं होती,
अच्छाई और बुराई का आधार हमारे विचार ही हैं।*
– शेक्सपीयर

विरोध की चिंगारी

ईरान की सड़कों पर फिर से सत्ता विरोधी हुंकार सुनाई देने लगी है। जगह-जगह विरोध प्रदर्शन और हिंसा की घटनाएं सामने आ रही हैं। हालात का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि पिछले दो सप्ताह के दौरान हिंसक झड़पों में अब तक पांच सौ से अधिक लोगों की मौत हो जाने और दस हजार से ज्यादा लोगों को हिरासत में लेने का दावा किया जा रहा है। इसी बीच ईरान का अमेरिका और इजराइल के साथ तनाव भी बढ़ता जा रहा है। अमेरिका ने तो यह चेतावनी भी दे डाली है कि अगर प्रदर्शनकारियों पर बल प्रयोग किया गया, तो वह ईरान पर हमले की कार्रवाई करेगा। सवाल है कि आखिर ईरान में लोगों का शीर्ष नेतृत्व के खिलाफ सड़कों पर उतरने का कारण क्या है? विरोध प्रदर्शन का झंडा बुलंद करने वालों को कहना है कि लोग देश की आर्थिक बदहाली और बढ़ती महंगाई से त्रस्त हैं। वहीं, ईरान सरकार का आरोप है कि यह सब अमेरिका के इशारे पर हो रहा है, ताकि उनके देश को अस्थिर किया जा सके।

ईरान में विरोध प्रदर्शनों पर एक सवाल यह भी उठ रहा है कि वहां की सरकार की ओर से आंतरिक मामलों को सुलझाने और जनता का भरोसा जीतने का समय रहते प्रयास क्यों नहीं किया गया? इस मुल्क में ऐसे ही विरोध प्रदर्शन वर्ष 2022 में भी देखे गए थे, जब महसा अमीनी नामक एक महिला की पुलिस हिरासत में मौत हो गई थी। महसा पर आरोप था कि उसने हिजाब के कानून को नहीं माना, जिस कारण उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था। इस घटना के बाद देश भर में महिलाएं सड़कों पर उतर आई थीं। इस बार भले ही मुद्दा अलग है, लेकिन विरोध प्रदर्शनों में पहले की तरह महिलाएं बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रही हैं। तनाव बढ़ने के बाद कई शहरों में इंटरनेट पर पाबंदी लगा दी गई है, सड़कों पर सुरक्षाबल मोर्चा संभाले हुए हैं और इस दौरान हिंसक झड़पें भी हो रही हैं। इसी बीच सोमवार को सरकार समर्थक भी सड़कों पर उतर आए, जिससे हालात और बिगडने की आशंका है। ऐसे में ईरान सरकार को चाहिए कि अंदरूनी मसलों को सुलझाने के लिए सुरक्षा बलों की ताकत का सहारा लेने के बजाय शांतिपूर्ण तरीके से समाधान के रास्ते तलाशे जाएं।

दूसरी ओर ईरान में विरोध प्रदर्शनों को वहां के सर्वोच्च धार्मिक नेता अयातुल्ला अली खामेनेई को सत्ता से हटाने की कोशिशों से जोड़ कर भी देखा जा रहा है। इसके पीछे अमेरिका और इजराइल का हाथ होने की आंशका इसलिए जोर पकड़ रही है, क्योंकि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने हाल में जारी एक बयान में कहा है कि ईरान की जनता आजादी चाहती है, जो उसने पहले कभी महसूस नहीं की। साथ ही प्रदर्शनकारियों पर बल प्रयोग करने पर कार्रवाई की धमकी भी दी है। इस पर ईरान ने भी चेतावनी दी है कि अगर हमला हुआ, तो अमेरिका के ठिकानों को निशाना बनाया जाएगा। हालांकि दोनों देशों में बढ़ते तनाव के बीच फिलहाल राहत की बात यह कि अमेरिका के राष्ट्रपति ने दावा किया कि ईरान वर्तमान हालात को लेकर बातचीत के लिए तैयार हो गया है। अब देखना होगा कि क्या ईरान कोई ऐसा रास्ता निकाल पाता है, जिससे विरोध प्रदर्शन खत्म हो जाएं और मौजूदा संकट भी टल जाए?

नफरत की हिंसा

बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे लक्षित हमलों के बीच अब पाकिस्तान में एक हिंदू किसान की गोली मार कर हत्या कर देने की घटना ने दुनिया भर में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ा दी है। इससे पहले कनाडा और आस्ट्रेलिया जैसे देशों में भी भारतीय मूल के लोगों विशेषकर हिंदुओं के साथ भेदभाव और नस्ली हमलों की खबरें आती रही हैं। पाकिस्तान के सिंध प्रांत में जिस हिंदू व्यक्ति की हत्या की गई, वह आर्थिक रूप से कमजोर था। इस घटना से वहां हिंदू समुदाय के लोगों में आक्रोश है। गौरतलब है कि पाकिस्तान में हिंदू समुदाय के लोगों को जबरन धर्मांतरण और भूमि संबंधी विवादों का अक्सर सामना करना पड़ता है। उन्हें अपनी सुरक्षा और नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ता है, जिसकी कीमत कई बार जान देकर चुकानी पड़ती है। पड़ोसी देशों में जिस तरह से अल्पसंख्यकों को लगातार निशाना बनाया जा रहा है, वह न केवल सांप्रदायिक उन्माद फैलाने का प्रयास है, बल्कि नागरिकों के जीने के अधिकार का भी उल्लंघन है।

मौजूदा वैश्विक परिदृश्य में अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अल्पसंख्यक नागरिकों खासकर हिंदुओं की सुरक्षा और उनके मौलिक अधिकारों के लिए आवाज उठाना अब जरूरी हो गया है। इस तरह की घटनाओं की निंदा करने और सिर्फ चिंता जताने भर से बात नहीं बनेगी। भारत को संबंधित देशों में अपने प्रतिनिधिमंडल भेजने से लेकर द्विपक्षीय वार्ताओं में इस मुद्दे को प्रमुखता से उठाना होगा। यह सच है कि भारत शांतिप्रिय देश है और वह सदियों से दुनिया को समरसता और मैत्री का संदेश देता आया है। मगर अब वक्त यह याद दिलाने का है कि दुनिया के किसी भी कोने में अल्पसंख्यकों के साथ हिंसा और मानवता को शर्मसार करने वाली घटनाओं को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। तमाम देशों की यह जिम्मेदारी है कि वहां के अल्पसंख्यक नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए ठोस कदम उठाए जाएं। धर्म और नस्ल के आधार पर नफरत फैलाने और हिंसा को बढ़ावा देने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जानी चाहिए, ताकि मानवाधिकारों की रक्षा की जा सके।

अंतरिक्ष में बढ़ते कचरे से उपजे खतरे

संचार उपग्रहों से लेकर मौसम पूर्वानुमान, आपदा प्रबंधन और सैन्य निगरानी तक, आज की आधुनिक दुनिया की धड़कन अंतरिक्ष से जुड़ी है। मगर इस प्रगति के साथ अंतरिक्ष में बढ़ रहे मलबे से सुरक्षा का संकट भी पैदा हो गया है।

विजन कुमार पांडेय

अंतरिक्ष अब मानव सभ्यता की दूरस्थ सीमा नहीं रहा। आज यह हमारे रोजमर्रा के जीवन, राष्ट्रीय सुरक्षा, अर्थव्यवस्था और भू-राजनीति का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। संचार उपग्रहों से लेकर मौसम पूर्वानुमान, आपदा प्रबंधन और सैन्य निगरानी तक, आधुनिक दुनिया की धड़कन अंतरिक्ष से जुड़ी है। मगर इसी प्रगति के साथ एक ऐसा संकट भी जन्म ले चुका है, जिस पर गंभीरता से चर्चा नहीं होती। वह है- अंतरिक्ष में बढ़ रहा कचरा और उससे अंतरिक्ष यात्रियों की सुरक्षा को खतरे का मसला। यह केवल तकनीकी चुनौती नहीं, बल्कि मानव जीवन, वैश्विक सहयोग और भविष्य की अंतरिक्ष नीति से जुड़ा प्रश्न है। आज जब दुनिया चंद्रमा, मंगल और उससे आगे मानव की उपस्थिति को लेकर योजना बना रही है, तब यह पूछना अनिवार्य हो जाता है कि क्या हमने पृथ्वी के आसपास के अंतरिक्ष को सुरक्षित रखा है?

पिछले छह दशकों में अंतरिक्ष गतिविधियों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। हजारों उपग्रह, सैकड़ों प्रक्षेपण और अनगिनत प्रयोग। इन सबका एक अनचाहा परिणाम है-अंतरिक्ष में फैल रहा मलबा। निष्क्रिय उपग्रह, टकराव से बने टुकड़े और सूक्ष्म कण आज पृथ्वी की कक्षा में एक अनियंत्रित जाल की तरह फैल चुके हैं। समस्या केवल संख्या की नहीं, बल्कि शृंखलाबद्ध खतरे की है। दो वस्तुओं की टक्कर से मलबा और बढ़ता है, जो आगे और टकराव को जन्म देता है। वैज्ञानिक इसे 'केसलर सिंड्रोम' कहते हैं। यानी एक ऐसी स्थिति, जहां कक्षा में मलबा इतना बढ़ जाए कि अंतरिक्ष गतिविधियां ही असंभव हो जाएं। इस परिदृश्य में सबसे पहले और सबसे ज्यादा खतरे में होंगे मानवयुक्त मिशन और अंतरिक्ष यात्री।

अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आइएसएस) मानव सभ्यता की सबसे जटिल संरचना है। मगर यह उपलब्धि भी एक असुरक्षित वातावरण में टिकी है। लगभग चार सौ किलोमीटर की ऊंचाई पर यह स्टेशन उसी कक्षा में है, जहां सबसे अधिक मलबा मौजूद है। यह विडंबना ही है कि अत्याधुनिक तकनीक से लैस अंतरिक्ष यात्री एक ऐसे वातावरण में काम करते हैं, जहां पेंट का एक कण भी प्राणघातक बन सकता है। सात से आठ किलोमीटर प्रति सेकंड की रफ्तार से घूमता मलबा किसी भी मानवीय प्रतिक्रिया से कहीं तेज है। यानी खतरे की स्थिति में निर्णय का समय सेकंड से भी कम होता है। यहां यह सवाल उठता है कि क्या हम अंतरिक्ष यात्रियों की सुरक्षा को केवल तकनीकी प्रबंधन का विषय मान कर संतुष्ट हो सकते हैं या यह एक गहरे नीति-स्तरीय हस्तक्षेप की मांग करता है?

आज अंतरिक्ष मलबे से बचाव का सबसे अहम आधार है- निगरानी और पूर्व चेतावनी। शक्तिशाली रडार और दूरबीन हजारों वस्तुओं की निगरानी करते हैं। मगर इस व्यवस्था की एक मौलिक सीमा है। केवल बड़े टुकड़ों का ही सटीक रूप से पता किया जा सकता है। लाखों छोटे कण ऐसे हैं, जो निगरानी तंत्र से बाहर हैं। मगर उनके टकराने की संभावना बनी रहती है। इसका अर्थ यह हुआ कि अंतरिक्ष यात्रियों की सुरक्षा एक आंशिक जानकारी पर आधारित है, पूर्ण नियंत्रण पर नहीं। जब पृथ्वी की कक्षा में घूमता कोई अंतरिक्ष मलबा अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के बहुत पास से गुजरने वाला होता है, तब स्टेशन की कक्षा को थोड़ी देर के लिए बदला जाता है। यह उपाय अब अंतरिक्ष यात्रियों की सुरक्षा का एक नियमित हिस्सा बन चुका है। मगर यही तथ्य अपने-आप में यह बताने के लिए काफी है कि अंतरिक्ष कचरे की समस्या कितनी गंभीर हो चुकी है।

> **दुनिया को यह बात समझनी होगी कि अंतरिक्ष में बढ़ते मलबे से निपटने का स्थायी समाधान बचाव नहीं, बल्कि सफाई है। मगर यही वह बिंदु है, जहां वैश्विक राजनीति और राष्ट्रीय हित आड़े आ जाते हैं। किसका मलबा हटाया जाए? कौन खर्च उठाए? ये सवाल तकनीक से ज्यादा राजनीतिक हैं। जब तक अंतरिक्ष को साझा विरासत मान कर जिम्मेदारी तय नहीं की जाती, तब तक यह पहल सीमित प्रयोगों तक ही सीमित रहेगी। भारत जल्द ही गगनयान मिशन की ओर बढ़ रहा है। इसका अर्थ है कि अंतरिक्ष मलबा अब भारत के लिए भी सैद्धांतिक नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष मानवीय जोखिम बन चुका है।**

कक्षा बदलना देखने में भले ही एक छोटा सा तकनीकी कदम लगे, लेकिन इसके पीछे बड़ी कीमत छिपी होती है। अंतरिक्ष स्टेशन अपने आप नहीं घूमता, बल्कि उसे सही कक्षा में बनाए रखने के लिए लगातार ईंधन की जरूरत पड़ती है। जब भी स्टेशन को ऊपर या नीचे किया जाता है, तो इंजन चलाए जाते हैं। इससे कीमती ईंधन खर्च होता है। यह ईंधन सीमित होता है और भविष्य की आपात स्थितियों के लिए भी बचा कर रखना पड़ता है। यानी हर बार कक्षा बदलने से स्टेशन की जीवन अवधि थोड़ी कम हो जाती है। इसका दूसरा असर स्टेशन के संसाधनों पर पड़ता है। कक्षा बदलने की प्रक्रिया के दौरान वैज्ञानिक प्रयोगों को रोकना पड़ता है।

दीर्घकालिक अभियानों के लिए यह समस्या और भी गंभीर हो जाती है। अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन को दशकों तक काम करने के लिए तैयार किया गया है। मगर बार-बार होने वाले कक्षा परिवर्तन उसकी संरचना, उपकरणों और योजनाओं पर दबाव डालते हैं। जितनी बार ऐसे बदलाव होंगे, उतना ही अधिक जोखिम भविष्य के अभियानों के लिए पैदा होगा। दूसरे शब्दों मे कहें तो मलबे से बचने की कोशिश करते-करते हम खुद अपनी अंतरिक्ष क्षमता को सीमित कर रहे हैं। सबसे अहम बात यह है कि कक्षा बदलना समस्या का समाधान नहीं, बल्कि उसका अस्थायी इलाज है। अंतरिक्ष स्टेशन की कक्षा बदलने की बढ़ती घटनाएं एक बड़ी चेतावनी हैं। वे बताती हैं कि अंतरिक्ष में कचरे का बढ़ता दायरा अब भविष्य का खतरा नहीं, बल्कि वर्तमान की समस्या बन चुका है।

इसलिए कक्षा बदलने को तकनीकी सफलता मानने के साथ-साथ इसे एक चेतावनी संकेत के रूप में भी देखना जरूरी है कि अंतरिक्ष को हमने जितनी तेजी से इस्तेमाल किया है, उतनी ही तेजी से उसे साफ और सुरक्षित बनाने की जिम्मेदारी भी निभानी होगी। हालांकि अंतरिक्ष स्टेशन को विशेष ढालों से सुरक्षित किया गया है, जो छोटे मलबे को झेल सकती हैं, लेकिन बड़ा मलबा अब भी गंभीर खतरा बना हुआ है। आपात स्थितियों के लिए अंतरिक्ष यात्रियों को कठोर प्रशिक्षण दिया जाता है। मगर यह प्रशिक्षण भी उस स्थिति में सीमित हो जाता है, जब टकराव अचानक और विनाशकारी हो। अंतरिक्ष में बढ़ते कचरे से निपटने का स्थायी समाधान बचाव नहीं, बल्कि सफाई है। मगर यही वह बिंदु है, जहां वैश्विक राजनीति और राष्ट्रीय हित आड़े आ जाते हैं। किसका मलबा हटाया जाए? कौन खर्च उठाए? क्या किसी देश का निष्क्रिय उपग्रह दूसरे देश द्वारा हटाया जा सकता है? ये सवाल तकनीक से ज्यादा राजनीतिक हैं। जब तक अंतरिक्ष को साझा विरासत मान कर संयुक्त जिम्मेदारी तय नहीं की जाती, तब तक मलबा हटाने की पहल सीमित प्रयोगों तक ही सिमटी रहेगी।

भारत गगनयान मिशन की ओर बढ़ रहा है। इसका अर्थ है कि अंतरिक्ष मलबा अब भारत के लिए भी सैद्धांतिक नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष मानवीय जोखिम बन चुका है। यह चेतावनी भी है और अवसर भी। चेतावनी इसलिए कि लापरवाही भविष्य में भारी पड़ सकती है। अवसर इसलिए कि भारत जिम्मेदार और नैतिक अंतरिक्ष शक्ति के रूप में वैश्विक नेतृत्व दिखा सकता है। अंतरिक्ष मानवता की साझा संपदा है, न किसी एक देश की और न किसी एक पीढ़ी की। इसने हमें संचार, विज्ञान और भविष्य के सपने दिए हैं, लेकिन आज वही अंतरिक्ष मलबे से भरता जा रहा है। अंतरिक्ष को गंदा करना आसान है, पर सुरक्षित रखना कठिन। इसके लिए दूरदर्शिता चाहिए, ताकि तात्कालिक लाभ से ऊपर उठकर भविष्य को बचाया जा सके। संयम चाहिए, ताकि हर देश जिम्मेदारी से व्यवहार करे और वैश्विक सहयोग चाहिए, क्योंकि अंतरिक्ष किसी सीमा में नहीं बंधा है।

न्याय की खातिर

दुनिया मेरे आगे

महिमा सामंत

अन्याय केवल एक शब्द नहीं, बल्कि वह चुभन है, जो मनुष्य के आत्मसम्मान को भीतर तक घायल कर देती है। कई बार अन्याय इतनी खामोशी से होता है कि पीड़ित को भी देर से एहसास होता है कि उसके साथ गलत हुआ है। कई दफा यह इतना गहरा और स्पष्ट होता है कि व्यक्ति का मन क्रोध, दुख और घुटन से भर जाता है। किसी भी समाज का स्वास्थ्य केवल अस्पतालों और सड़कें बनाने से नहीं मापा जाता, बल्कि इस बात से आंका जाता है कि वहां रहने वाले लोग कितनी बराबरी, सम्मान और सुरक्षा का अनुभव करते हैं। जब किसी व्यक्ति को उसके हक से वंचित किया जाता है, उसकी आवाज दबा दी जाती है, या उसे उसकी क्षमता के अनुसार मौके नहीं दिए जाते, तो यह न केवल उस व्यक्ति के लिए अन्याय है, बल्कि पूरे समाज के लिए चेतावनी है। क्योंकि, अन्याय कभी अकेला नहीं आता; वह असमानता, क्रोध, हिंसा और टूटे हुए विश्वास को जन्म देता है।

अन्याय का सबसे खतरनाक रूप वह है, जो सामान्य माना जाने लगता है। जैसे- लड़कियों को कुछ सपने देखने से रोका जाना, गरीब को हर मोड़ पर तिरस्कार झेलना, किसी कर्मचारी की मेहनत का श्रेय किसी और को मिल जाना, या किसी छात्र की प्रतिभा को जाति, भाषा या पृष्ठभूमि के आधार पर कम आंकना। ये बातें बाहर से मामूली दिखाई दे सकती हैं, लेकिन वास्तव में यही वे छोटी-छोटी ईंटें हैं, जिनसे बड़े और कठोर अन्याय की दीवार खड़ी होती है। समाज को बदलने के लिए सबसे पहले इस तरह के ह्यछोटे अन्यायह्न को पहचानना जरूरी है, जो असल में उतने छोटे होते ही नहीं। समाज में आज भी यह अवधारणा मौजूद है कि बेटे की पढ़ाई पर पैसा खर्च करना 'निवेश' माना जाता है, जबकि बेटी की पढ़ाई पर वही राशि खर्च करना अनावश्यक खर्च। कई बार घर में निर्णय लेने का अधिकार सिर्फ पुरुषों के पास होता है, जबकि महिलाएं योग्य होने के बावजूद केवल सुनने तक सीमित रहती हैं। यह सब इतने सामान्य तरीके से होता है कि लोग इसे अन्याय मानना ही छोड़ देते हैं।

> **कई लोग सोचते हैं कि दूसरों के लिए आवाज उठाना समय की बर्बादी है। लेकिन सच यह है कि अगर आज हम किसी और के लिए खड़े नहीं होंगे, तो कल हमारे लिए भी कोई खड़ा नहीं होगा। समाज आपस में जुड़े धागों की तरह है- कहीं एक धागा कमजोर पड़ा तो पूरी बुनावट टूटने लगती है।**

कार्यस्थलों पर भी स्थिति अलग नहीं है। कई दफा ऐसे कर्मचारी होते हैं, जो पूरी टीम का काम संभालते हैं, समय पर सब कुछ पूरा करते हैं, फिर भी उन्हें पदोन्नति नहीं मिलती। किसी नए कर्मचारी की छोटी गलती पर जोर दिया जाता है, लेकिन पुराने और प्रभावशाली कर्मचारियों की बड़ी गलतियों को नजरअंदाज कर दिया जाता है। नौकरी के मामले में कई लोगों को साक्षात्कार में सिर्फ इसलिए नकार दिया जाता है, क्योंकि उसके पास कोई सिफारिश नहीं होती। दूसरी ओर, कम योग्यता या कम प्रतिभा होने के बावजूद अधिक प्रभावशाली व्यक्ति को आसानी से नौकरी मिल जाती है। ये उदाहरण दर्शाते हैं कि कौशल और मेहनत के बावजूद भी अवसर हमेशा बराबर नहीं होते। समाज में भी हम कई तरह के अन्याय रोज देखते हैं। अस्पतालों में आम मरीज घंटों कतार में खड़े रहते हैं, जबकि सिफारिश वाले लोगों को तुरंत उपचार मिल जाता है। पुलिस थाने में शिकायत लेकर जाने वाला आम आदमी कई बार चक्कर लगाता है, जबकि प्रभावशाली लोगों की बात तुरंत सुनी जाती है। सड़क पर अगर किसी गरीब रिक्शेवाले से गलती हो जाए, तो लोग उसे डांटकर भगा देते हैं, लेकिन किसी महंगी कार वाले से कोई कुछ नहीं कहता।

अन्याय का एक सबसे गहरा रूप रिश्तों में दिखता है। कई बार एक साथी रिश्ते में कदम-कदम पर समझौता करता रहता है और दूसरा हमेशा सही माना जाता है। एक दोस्त हमेशा रिश्ते को निभाने के लिए तत्पर रहता है, जबकि दूसरा सिर्फ काम पड़ने पर ही याद करता है। महिलाओं के साथ होने वाला अन्याय तो समाज में इतना गहरा है कि उसे 'सामान्य' मान लिया जाता है। लड़की का जन्म होने पर कुछ चेहरे उतर जाते हैं। कार्यस्थल पर महिलाओं को अक्सर कमजोर माना जाता है। समाज में तभी बदलाव आ सकता है, जब लोग इन छोटे-छोटे अन्याय को पहचानना शुरू करें, उनका विरोध करें, और बराबरी की सोच को सामान्य बनाएं। अन्याय तब कम होगा, जब हम सिर्फ कानूनी नहीं, बल्कि मानवीय दृष्टि से भी न्याय को महत्त्व देंगे। जब हम उन लोगों के लिए आवाज उठाएंगे, जो बोल नहीं पाते, जब किसी दुर्बल को उसका हक दिलाने में मदद करेंगे और किसी गलत के सामने चुप रहने के बजाय सही के साथ खड़े होंगे।

यह बात भी उतनी ही सच है कि कोई भी समाज उस दिन कमजोर हो जाता है, जब उसके ईमानदार लोग चुप रहने लगते हैं। चुप्पी कभी-कभी शांति लग सकती है, पर यह भीतर ही भीतर अन्याय को शक्ति देती है। अन्याय को मिटाने के लिए केवल कानून काफी नहीं; उसके लिए संवेदना, साहस और समझ भी जरूरी है। कानून व्यवस्था समाज की रीढ़ है, पर यदि इंसान के भीतर न्याय के प्रति सम्मान नहीं है, तो अन्याय समाप्त नहीं होगा। न्याय केवल अदालतों में ही नहीं मिलता; जब हम अपने व्यवहार में ईमानदारी रखते हैं, किसी कमजोर के पक्ष में खड़े होते हैं, किसी को व्यक्ति को उसके व्यक्तित्व और गुणों के आधार पर तवज्जो देते हैं, तो वह भी न्याय कहलाता है। कई लोग सोचते हैं कि दूसरों के लिए आवाज उठाना समय की बर्बादी है। लेकिन सच यह है कि अगर आज हम किसी और के लिए खड़े नहीं होंगे, तो कल हमारे लिए भी कोई खड़ा नहीं होगा। समाज आपस में जुड़े धागों की तरह है- कहीं एक धागा कमजोर पड़ा तो पूरी बुनावट टूटने लगती है। इसी तरह, न्याय के धागे को मजबूत रखने के लिए हम सब की भागीदारी जरूरी है। न्याय तभी संभव है, जब हर व्यक्ति यह समझे कि उसका एक कदम, एक शब्द या एक निर्णय किसी और के जीवन को बदल सकता है। क्योंकि, जब समाज न्यायपूर्ण होता है, तभी वह वास्तव में मजबूत और श्रेष्ठ होता है।

डिजिटल साक्षरता

जब इंटरनेट का दौर नहीं था, तब अखबारों से लोगों को घटनाओं की सूचना मिलती थीं। मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन के लिए साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक पत्रिकाएं पाठकों को मिलती थीं। बेसब्री से उनके आने का इंतजार रहता था। जब से इंटरनेट का दौर शुरू हुआ है, तब से सूचनाओं का आदान-प्रदान तीव्र गति से हो रहा है। लोग बिना सोचे-समझे आधी-अधूरी जानकारी पर विश्वास कर तेजी से प्रतिक्रिया देते हैं। यह सच है कि सोशल मीडिया ने हर व्यक्ति को अपनी बात रखने और बोलने का मंच तो दे दिया है, पर सच और झूठ के बीच की रेखा को धुंधला कर दिया है। इंटरनेट के दुरुपयोग का जीता-जागता प्रमाण अभी हाल ही में दिल्ली में हुई हिंसक घटना से देखने को मिला, जिसमें सोशल मीडिया पर अफवाह फैलाई गई। समस्या यह नहीं है कि लोगों ने सूचनाओं को परखने की शक्ति छोड़ दी है। मगर सच की जिम्मेदारी संस्थानों से ज्यादा आम नागरिकों की है कि वे हर संदेश पर आंख मूंद कर विश्वास न करें। डिजिटल साक्षरता आज वक्त की मांग है और उतनी ही जरूरी है, जितना कि पढ़ना-लिखना।

– वेद प्रकाश, गुरुग्राम, हरियाणा

समाधान के रास्ते

इन दिनों 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। फिर चाहे वह अमेरिका-वेनेजुएला विवाद हो या फिर हाल ही में केंद्रीय एजंसी की कार्रवाई के दौरान मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का दखल। मुख्यमंत्री का कहना है कि यह कार्रवाई आगामी चुनाव में उनकी छवि बिगाड़ने के लिए की गई है और इसकी वजह से भाजपा को अगले विधानसभा चुनाव में खासा नुकसान होगा। अगर ये मान भी लें कि ममता बनर्जी जो कह रही हैं, वह सही है, फिर भी यह सवाल तो उठेगा कि केंद्रीय जांच एजंसी की कार्रवाई में मुख्यमंत्री का इस तरह से हस्तक्षेप करना क्या सही है? चुनाव से पहले पक्ष-विपक्ष के बीच तनातनी आम बात है, मगर इस तरह जांच एजंसी के काम में बाधा डालना कई आशंकाओं को जन्म देता है। ऐसे टकराव को रोकने के लिए निश्चित रूप से स्थायी समाधान के रास्ते तलाशने होंगे।

– अभिषेक जैसवाल, मैहर, मप्र

संप्रभुता का उल्लंघन

वेनेजुएला के तेल उद्योग पर अमेरिका का प्रत्यक्ष नियंत्रण और उसकी बिक्री को अपनी निगरानी में कराने का प्रयास वैश्विक राजनीति में अराजकता की पराकाष्ठा है। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि वेनेजुएला पर अमेरिका के हमले का उद्देश्य लोकतंत्र या मानवाधिकार नहीं, बल्कि उसके विशाल तेल संसाधनों पर कब्जा जमाना था। इतिहास साक्षी है कि अमेरिका ने इससे पहले भी तेल पर नियंत्रण के लिए इराक जैसे संप्रभु राष्ट्र पर हमला किया था, जिससे पूरे क्षेत्र में वर्षों तक अस्थिरता, हिंसा और मानवीय संकट बना रहा। आज वही नीति वेनेजुएला के साथ दोहराई जा रही है, जो अंतरराष्ट्रीय कानूनों और राष्ट्रों की संप्रभुता का खुला उल्लंघन है। अमेरिका की यह मनमानी वैश्विक शांति के लिए खतरा है। सैन्य और आर्थिक दबाव के बल पर किसी देश के प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण की सोच न केवल अनैतिक, बल्कि भावी संकट का संकेत है।

– हिमांशु शेखर, गयाजी

बढ़ती दूरियां

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था कि हम दोस्त बदल सकते हैं, लेकिन पड़ोसी नहीं। पिछले कुछ वर्षों से हमारे देश की विदेश नीति 'पड़ोस प्रथम' की रही है, लेकिन पता नहीं इस नीति में कहां गलती हो रही है कि पाकिस्तान और चीन तो हमारे एक तरह से दुश्मन थे ही, अब नेपाल, श्रीलंका और बांग्लादेश से भी हमारी दूरियां बढ़ती जा रही हैं। जिस बांग्लादेश के निर्माण में पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की अहम भूमिका थी, वह भी हमसे दूर हो रहा है। वहां कभी पश्चिमी पाकिस्तान के हुक्मरानों ने बेइंतहा जुल्म ढाए थे। तब भारत ने बांग्लाभाषियों को पाकिस्तान से अलग कर बांग्लादेश बनाने में मदद की थी। आज उसी देश में भारत के विरुद्ध आवाज उठ रही है। वहां अक्सर निर्दोष हिंदुओं की हत्या की खबरें आ रही हैं। भारत सरकार को इसमें दखल देना चाहिए।

– चरनजीत, नरेला, दिल्ली

संवाद
जनसत्ता | 13 जनवरी, 2026

पर्यटन

सोनमर्ग में बर्फबारी के बाद का नजारा। ठंड में जम चुकी नदी के पास मौसम का आनंद उठाते पर्यटक।

बोल

हिंसा और खूनखराबा इसलिए हुआ, ताकि अमेरिकी राष्ट्रपति को हस्तक्षेप का बहाना मिल सके। बातचीत आपसी हितों और चिंताओं की स्वीकार्यता पर आधारित होनी चाहिए, न कि एकतरफा, एकपक्षीय और तानाशाही आधारित।

– अब्बास अराघची, ईरान के विदेश मंत्री

बोल

ईरान के खिलाफ हम साइबर और सैन्य हमले पर विचार कर रहे हैं। हम बहुत सख्त विकल्पों पर भी विचार कर रहे हैं। अगर ईरान ने दुस्साहस किया, तो हम उन्हें ऐसा जवाब देंगे, जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की होगी।

-डोनाल्ड ट्रंप, अमेरिका के राष्ट्रपति

सम-सामयिक

ग्रीनलैंड : आसानी से अमेरिका के हाथ नहीं आएगी दुर्लभ संपदा

जनसत्ता संवाद

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पहले व्यक्ति नहीं हैं, जिन्होंने ग्रीनलैंड की खनिज संपदा को पहचाना है। अगर वे ग्रीनलैंड की सत्ता पर कब्जा कर भी लेते हैं, तो इसका मतलब यह नहीं होगा कि द्वीप की खनिज संपदा जादुई रूप से दुनिया के लिए उपलब्ध हो जाएगी। सवाल है कि ये खनिज अब तक जमीन के नीचे क्यों दबे रहे। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप एक बार फिर ग्रीनलैंड पर कब्जा करने की बात कर रहे हैं , जरूरत पड़ने पर बलपूर्वक भी। इससे इसके प्रसिद्ध भूमिगत खनिज संपदा के बारे में नए सिरे से जिज्ञासा पैदा हो गई है – जो इन सभी सदियों से जमीन के नीचे ही छिपी हुई है।

अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के अनुसार, ग्रीनलैंड में दुर्लभ खनिजों का विश्व का आठवां सबसे बड़ा भंडार है, साथ ही तेल और गैस, सोना, निकल और कोबाल्ट के भंडार भी मौजूद हैं। दुर्लभ खनिज सुपरकंडक्टर चिप्स, इलेक्ट्रिक वाहनों, हरित ऊर्जा प्रौद्योगिकियों और सैन्य प्रौद्योगिकियों के निर्माण के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। वर्गीकृत 34 दुर्लभ खनिजों में से लगभग 23 ग्रीनलैंड में पाए जाते हैं।

वर्तमान में इन तत्वों पर चीन का एकाधिकार है और अमेरिका विकल्पों की तलाश में बेताब है। हालांकि, अगर ट्रंप ग्रीनलैंड पर कब्जा भी कर लें, तो भी अमेरिका कई दशकों तक चीन की बराबरी नहीं कर पाएगा।

ग्रीनलैंड की दूरस्थता और कठोर आर्कटिक वातावरण खनन के लिए मूलभूत बाधाएं हैं। द्वीप का अधिकांश भाग बर्फ से ढका हुआ है, और यहां तक कि बर्फ-मुक्त क्षेत्रों में जहां खनिज भंडार पाए जाते हैं। वहां कोई रेलवे नहीं है, सड़कें बहुत कम हैं। बंदरगाह सीमित हैं, बिजली ग्रिड लगभग न के बराबर हैं। औद्योगिक खनन के लिए प्रशिक्षित कार्यबल बहुत छोटा है।

ग्रीनलैंड में आधुनिक खदान स्थापित करना आस्ट्रेलिया, ब्राजील या चीन में खदान खोलने जैसा आसान नहीं है। सड़कें, हवाई अड्डे, ऊर्जा आपूर्ति और श्रमिकों के आवास जैसी हर बुनियादी संरचना को भारी लागत पर नए सिरे से बनाना पड़ता है। खनिजों के निर्यात के लिए कुशल परिवहन व्यवस्था आवश्यक है, लेकिन ग्रीनलैंड के समुदाय बिखरे हुए हैं और कुछ कस्बों का आपस में कोई सीधा संपर्क नहीं है।

अयस्क के प्रसंस्करण में चीन को व्यापक विशेषज्ञता प्राप्त है। इसके बाद, इसे परिवहन द्वारा वैश्विक बाजारों से जोड़ा जाता है। बुनियादी ढांचे के अभाव में, अन्वेषण परियोजनाएं निष्क्रिय पड़ी रहती हैं या बेहद धीमी गति से आगे बढ़ती हैं, जिससे बड़े पैमाने पर निवेश हतोत्साहित होता है। यहां किसी भी खनन परियोजना को निष्कर्षण के उपयोग में आने से पहले वर्षों तक धन और श्रम लगाना होगा।

ट्रंप के आने से बहुत पहले ही ग्रीनलैंड अपने खनिज संपदा का उपयोग करना चाहता था। द्वीप के खनिज संसाधन प्राधिकरण की वेबसाइट पर इसे एक ऐसा देश बताया गया है जिसकी संपदा का अभी तक पूरी तरह से पता नहीं चला है। यहां लाइसेंसिंग की प्रतिस्पर्धी व्यवस्था, स्थिर राजनीतिक वातावरण, कम निवेश जोखिम और खनन समर्थक आबादी और सरकार है। हालांकि, श्रमिकों के लिए कठोर जलवायु के अलावा, इसमें शामिल भारी जोखिमों और लागतों के कारण निवेशक इसमें निवेश करने के लिए आगे नहीं आ रहे हैं।

स्थानीय कानून

ग्रीनलैंड में ऐसे कानून हैं जो प्राकृतिक संसाधनों के दोहन को प्रतिबंधित करते हैं। बड़े पैमाने पर खनन गतिविधियों से बर्फ से ढके द्वीप के नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र को खतरा हो सकता है और बर्फ की चादरों के पिघलने की गति तेज हो सकती है, जो वैश्विक तापमान वृद्धि के कारण पहले से ही हो रहा है। इसलिए, 2021 में, ग्रीनलैंड ने जलवायु परिवर्तन को मुख्य कारण बताते हुए, नए अपतटीय तेल और गैस खोज पर प्रतिबंध लगा दिया।

शोध

जलवायु परिवर्तन से बढ़ा मानव-वन्यजीव संघर्ष

जनसत्ता संवाद

एक अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया कि सूखा किस प्रकार से मानव-वन्यजीव संघर्ष पर असर डालता है और किन प्रजातियों पर इसका प्रभाव सबसे अधिक होता है। यह शोध कैलिफोर्निया के 'वाइल्डलाइफ इंसीडेंट रिपोर्टिंग' (डब्ल्यूआइआर) डेटाबेस पर आधारित था, जिसमें साल 2017 से 2023 के बीच दर्ज लगभग 31,904 सामग्रियां शामिल थीं।

सूखा प्राकृतिक संसाधनों को घटाकर वन्यजीवों को मानव बस्तियों की ओर धकेलता है, जिससे संघर्ष बढ़ता है और संरक्षण की चुनौतियां गहराती हैं। सूखे के कारण संघर्ष में 57 फीसद वृद्धि की आशंका है। जलवायु परिवर्तन का प्रभाव केवल मानव समाज पर ही नहीं, बल्कि वन्यजीवों और उनके प्राकृतिक आवासों पर भी गहराई से पड़ रहा है। सूखे की बढ़ती आवृत्ति और तीव्रता उन परिस्थितियों को जन्म दे रही है, जिनमें लोगों और वन्यजीवों के बीच टकराव बढ़ता जा रहा है।

हाल ही में साइंस एडवांसेज नामक शोध पत्रिका में प्रकाशित एक अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया कि सूखा किस प्रकार से मानव-वन्यजीव संघर्ष पर असर डालता है और किन प्रजातियों पर इसका प्रभाव सबसे अधिक होता है। यह शोध कैलिफोर्निया के 'वाइल्डलाइफ इंसीडेंट रिपोर्टिंग' (डब्ल्यूआइआर) डेटाबेस पर आधारित था, जिसमें साल 2017 से 2023 के बीच दर्ज लगभग 31,904 सामग्रियां शामिल थीं। अध्ययन के अहम निष्कर्षों में से एक यह था कि प्रति 25 मिलीमीटर बारिश में कमी आने पर मानव-वन्यजीव संघर्ष लगभग 2.11 फीसद बढ़ जाता है। इसका मतलब है कि जितना अधिक सूखा पड़ेगा, उतना ही ज्यादा वन्यजीव मानव क्षेत्रों की ओर आकर्षित होंगे और संघर्ष की घटनाएं बढ़ेंगी।

सूखे के दौरान प्राकृतिक संसाधनों – जैसे पानी, घास, छोटे शिकार, फलों और अन्य खाद्य पदार्थों की उपलब्धता कम हो जाती है। वन्यजीवों को जीवित रहने के लिए अधिक दूर तक भटकना पड़ता है और कई बार यह उनकी यात्रा उन्हें मानव बस्तियों, खेतों, बगीचों या कचरा स्थलों के पास ले आती है।

लोगों की बसाहट में अक्सर ऐसे संसाधन उपलब्ध होते हैं जो सूखे से कम प्रभावित होते हैं, जैसे सिंचाई का पानी, पशुधन, फसलें या कचरे के ढेर। यही आकर्षण संघर्ष की आशंका को बढ़ाता है। संघर्ष में बढ़ोतरी में शिकार से जुड़ी घटनाएं, उपद्रव वाली शिकायतें और मानव सुरक्षा से जुड़ी संभावित घटनाएं शामिल हैं। सभी में बारिश कम होने पर वृद्धि दर्ज की गई।

अध्ययन में पाया गया कि जिन क्षेत्रों में घने पेड़ों का कवर, अधिक जनसंख्या घनत्व और उच्च मध्यम घरेलू आय ये तीनों मौजूद हैं। वहां संघर्ष की घटनाएं अधिक थीं। संभव है कि इन क्षेत्रों में मनुष्य वन्यजीवों को देखने या रपट करने में अधिक सक्रिय हों, साथ ही शहरी संरचना और हरियाली वन्यजीवों को भी आकर्षित कर सकती है।

अध्ययन में अलग-अलग प्रजातियों पर सूखे के प्रभाव को भी परखा गया। मांसाहारी जानवरों इस प्रभाव से सबसे ज्यादा प्रभावित पाए गए। कारण स्पष्ट है कि सूखे के दौरान उनके प्राकृतिक शिकार कम हो जाते हैं, जिससे वे पशुधन या पालतू जानवरों की ओर बढ़ने लगते हैं।

चार प्रजातियां सूखे से सबसे ज्यादा प्रभावित बताई गई – बाबकैट में 2.97 फीसद की वृद्धि, अमेरिकन ब्लैक बियर की 2.56 फीसद, कोयोट में 2.21 फीसद, माउंटेन लायन में 2.11 फीसद।

मई से अक्तूबर तक, जब कैलिफोर्निया में गर्मी और सूखा चरम पर होता है संघर्ष की घटनाएं सबसे तेजी से बढ़ीं। यह बढ़ोतरी सालाना बारिश के स्तर से स्वतंत्र पाई गई। इसका मतलब है कि चाहे साल कितना भी शुष्क या नम क्यों न हो, गर्मियों में संघर्ष अपने आप बढ़ते हैं।

(फाइल फोटो)

विश्व परिक्रमा

ग्रोक : भारत ही नहीं, पूरी दुनिया में लोग परेशान

जनसत्ता संवाद

मस्क का एआइ चैटबाट 'ग्रोक' लोगों की अश्लील डीपफेक तस्वीरें जारी करने को लेकर वैश्विक विरोध के कारण अपने ज्यादातर उपयोगकर्ताओं को किसी भी प्रकार की तस्वीर बनाने या संपादित करने से रोक रहा है। भारत में सरकार के दबाव के बाद उसे सामग्रियां हटानी पड़ी हैं और कई खाते बंद करने पड़े हैं।

मस्क के सोशल मीडिया मंच 'एक्स' के माध्यम से उपयोग किए जाने वाले चैटबाट ने पिछले कुछ हफ्तों में उन उपयोगकर्ताओं के अनुरोधों को स्वीकार किया है जिन्हें शोधकर्ता दुर्भावनापूर्ण मानते हैं। इनमें तस्वीरों को संपादित करना शामिल है, जैसे कि महिलाओं को बिकनी में या यौन संकेत देने वाली स्थितियों में दिखाना। शोधकर्ताओं ने आगाह किया है कि कुछ मामलों में, कुछ तस्वीरों में बच्चों को दर्शाया गया प्रतीत होता है।

दुनिया भर की सरकारों ने इस प्लेटफार्म की निंदा की है और जांच शुरू कर दी है। शुक्रवार को, 'ग्रोक' तस्वीर में बदलाव करने के अनुरोधों का जवाब देते हुए यह संदेश जारी कर रहाः 'तस्वीर निर्माण और संपादन की सुविधा फिलहाल केवल शुल्क अदा करने वाले ग्राहकों के लिए उपलब्ध है। इन सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए आप सदस्यता ले सकते हैं।'

'ग्रोक' के ग्राहकों की संख्या सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं है, लेकिन कुछ दिनों पहले की तुलना में 'ग्रोक' द्वारा निर्मित डीपफेक तस्वीरों की संख्या में उल्लेखनीय कमी आई है। यूरोपीय संघ ने 'ग्रोक' के 'अवैध' और 'स्तब्ध करने वाले' व्यवहार की कड़ी निंदा की है, जबकि फ्रांस, भारत, मलेशिया के अधिकारियों और ब्राजील के एक सांसद ने जांच की मांग की है।

जानें-समझें

ईरान संकट

बगावत में क्यों बदल गया महंगाई का विरोध

जनसत्ता संवाद

गहरे आर्थिक संकट से जूझ रहे ईरान में बगावत बेकाबू होने लगी है। ईरान के कई शहरों में जारी हिंसक प्रदर्शनों में मरने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी और मुद्रा की भारी गिरावट ने आम लोगों का गुस्सा भड़का दिया है। विरोध-प्रदर्शनों की शुरुआत कुछ हफ्ते पहले हुई, जब ईरान की मुद्रा रियाल टूटकर इतिहास के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई। एक अमेरिकी डालर की कीमत करीब 14.2 लाख रियाल हो गई। इसके बाद खाने-पीने की चीजों के दाम तेजी से बढ़ गए और व्यापार करना बेहद मुश्किल हो गया। इसी के विरोध में तेहरान के ग्रैंड बाजार और मोबाइल फोन बाजार के दुकानदारों ने हड़ताल कर दी और अपनी दुकानें बंद कर दीं। फिर आंदोलन तेहरान से निकलकर इस्फहान, शिराज, यज्द और केरमानशाह जैसे बड़े शहरों तक फैल गया।

आर्थिक बदहाली

ईरान में महंगाई 2025 में 30 फीसद से ज्यादा बढ़कर 52 फीसद से अधिक हो गई, जिसमें औसत मासिक खाद्य महंगाई सात फीसद तक पहुंच गई। ईरानी रियाल ने पिछले वर्ष की तुलना में अपने मूल्य का आधे से अधिक हिस्सा खो दिया और इस सप्ताह अमेरिकी डालर के मुकाबले गिरकर 1.46 मिलियन के रेकार्ड निचले स्तर पर पहुंच गया। जब विरोध प्रदर्शनों ने सरकार-विरोधी रंग ले लिया तब अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि उनका देश प्रदर्शनकारियों की मदद के लिए पूरी तरह तैयार है। तेहरान ने इसे और अन्य अमेरिकी नेताओं के बयानों को विदेशी हस्तक्षेप का सबूत माना।

प्रासंगिक सवाल

ईरान में हो रहे विरोध प्रदर्शनों के तेजी से और व्यापक रूप से सत्ता-विरोधी स्वरूप में बदलने को देखते हुए, यह सवाल हमेशा प्रासंगिक रहा है कि क्या वे ईरानी राजनीतिक व्यवस्था में बड़ा बदलाव ला सकते हैं। इस बात के बहुत कम प्रमाण हैं कि ईरानी लोग सार्वजनिक प्रशासन के लिए जिम्मेदार राज्य की नौकरशाही संस्थाओं को पलटने के लिए तैयार हैं। ईरान के सामने कई कमजोरियां हैं। भू-राजनीतिक रूप से, सीरिया में अपने एक सहयोगी देश (बशर अल असद शासन) के पतन, लेबनान में अपने प्रमुख गैर-सहयोगी देश (हिज्बुल्लाह) के विघटन और ट्रंप प्रशासन द्वारा समर्थित इजराइल के बढ़ते प्रभुत्व के कारण, यह संभवतः 1979 के बाद से अपने सबसे कमजोर दौर में है।

अलग-अलग कारक

इस्लामी गणराज्य में आर्थिक कठिनाई हमेशा असंतोष का एक कारण रही है। पिछले दो दशकों में तेहरान के तेजी से सत्तावादी शासन के कारण इसमें शासन-विरोधी भावनाओं का अंतर्प्रवाह भी देखने को मिला है। जब भी कोई मजबूत आर्थिक, सामाजिक या राजनीतिक कारण सामने आया है, बड़े पैमाने पर प्रदर्शनों ने शासन के अंत की मांग को जन्म दिया है। ईरान में इस तरह के राष्ट्रव्यापी विरोध प्रदर्शन आखिरी बार 2022-23 में हुए थे। तब इसका कारण सामाजिक था – शासन द्वारा कार्यकर्ता महसा अमिनी की हत्या, क्योंकि उन्होंने कठोर हिजाब कानूनों का पालन नहीं किया था।

तेहरान का वर्तमान दृष्टिकोण

सरकार विरोधी जन प्रदर्शनों से निपटने के मामले में ईरान ने एक लंबा और कठिन समय बिताया है। 1979 की क्रांति की उपज, इस्लामी गणराज्य ने हमेशा प्रदर्शनकारियों की मांगों पर सीमित रियायतें ही दी हैं। क्रमिक रियायतों ने ही राजशाही की पकड़ को कमजोर किया और विपक्ष को एकजुट होने का अवसर दिया (अन्य कारकों के साथ)। इसने आम तौर पर हिंसक दमनकारी कार्रवाइयों को अंजाम दिया है, कभी-कभी बासिज (मिलिशिया जो आमतौर पर विरोध प्रदर्शनों को दबाने के लिए आक्रामक सैनिकों की आपूर्ति करता है) द्वारा नेतृत्व किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप प्रदर्शनकारियों की बड़ी संख्या में मौत हुई है।

(फाइल फोटो)

ईरान अगर कमजोर पड़ता है तो बहुध्रुवीय दुनिया के लिए झटका है। पश्चिम एशिया में और अस्थिरता बढ़ सकती है। इराक, लीबिया और सीरिया में सत्ता परिवर्तन कर अमेरिका ने क्या अपना वहां दबदबा बढ़ा लिया? पश्चिम एशिया में कई देश कृत्रिम तरीके से बनाए गए हैं और ऐसा पश्चिम के देशों ने ही किया है।

– अश्विनी महापात्रा, पश्चिम एशिया मामलों के जानकार

भारत की विदेश नीति के लिए ईरान सबसे बड़ी चुनौती है। ईरान भारत के लिए अहम है। खास कर मध्य एशिया और अफगानिस्तान पहुंचने के लिए, व्यापार मार्ग के लिहाज से बहुत अहम है। लेकिन जब हम फारस की खाड़ी की बात करते हैं तो ईरान हमारे लिए एक बोझ बन जाता है। इस इलाके का कोई भी देश ईरान को पसंद नहीं करता है।

– तलमीज अहमद, पूर्व राजनयिक

समर्थकों की नाराजगी

इस बार सबसे अहम बात यह है कि आंदोलन की शुरुआत बाजारी समुदाय से हुई, जो ऐतिहासिक रूप से इस्लामिक गणराज्य का समर्थक रहा है। ईरान में बाजारी और धार्मिक नेतृत्व के बीच पुराना गठबंधन रहा है। इतिहास में दुकानदारों ने कई बार सत्ता परिवर्तन में निर्णायक भूमिका निभाई है।

इस बार मुद्रा अस्थिरता और गिरती अर्थव्यवस्था ने उनके व्यापार को इतना प्रभावित किया कि वही वर्ग अब सड़कों पर उतर आया। यही विरोध आगे चलकर हिंसक रूप ले बैठा। वहीं, सरकार आर्थिक मांगों को लेकर प्रदर्शन कर रहे लोगों और शासन परिवर्तन की मांग करने वालों के बीच फर्क करने की कोशिश कर रही है। ईरान द्वारा इस बार प्रदर्शनकारियों की वैध मांगों को तुरंत स्वीकार करना एक आश्चर्यजनक बदलाव है, जबकि बल प्रयोग का सिलसिला जारी है। ईरान में विरोध प्रदर्शनों का संगठनात्मक ढांचा अभी अव्यवस्थित है।

व्यक्तित्व

नरेंद्र कुमार : मेक्सिको की सबसे ऊंची चोटी फतह कर इतिहास रचा

जनसत्ता संवाद

भारतीय पर्वतारोही नरेंद्र कुमार के नेतृत्व में एक दल ने हाल में मेक्सिको की सबसे ऊंची चोटी पिको डी ओरिजाबा को फतह किया है। दल ने जमापा ग्लेशियर के कठिन मार्ग से चढ़ाई की। यह रास्ता पिएद्रा ग्रांडे रिफ्यूज से शुरू होता है और आम तौर पर इसे पार करने में सात से आठ घंटे लगते हैं। कठिन परिस्थितियों के बावजूद दल ने संयम, तकनीक और आपसी तालमेल के साथ शिखर तक पहुंच बनाई। नरेंद्र कुमार हरियाणा के रहने वाले हैं। उन्होंने चोटी फतह करने वाले भारतीय पर्वतारोही दल का नेतृत्व करके नाम कमाया है। यह अभियान अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारतीय पर्वतारोहण के लिए महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ है। जमापा ग्लेशियर मार्ग को पर्वतारोहियों के लिए बेहद चुनौतीपूर्ण माना जाता है। इस रास्ते पर फिसलन भरी चट्टानें, बर्फीले ढलान और ताजा बर्फ से ढके हिस्से आते हैं। चढ़ाई के दौरान क्रैम्पान और आइस-ऐक्स जैसे तकनीकी उपकरणों का उपयोग करना जरूरी होता है। टीम ने पूरी सावधानी के साथ इन बाधाओं को पार किया।

5,636 मीटर ऊंचा पिको डी ओरिजाबा उत्तरी अमेरिका का सबसे ऊंचा ज्वालामुखी है। पर्वतारोहण की दुनिया में इसे 'वोल्कैनिक सेवन समिट्स' की तैयारी के लिए अहम प्रशिक्षण स्थल माना जाता है। इस अभियान के तुरंत बाद नरेंद्र कुमार ने 30 दिसंबर को माउंट एवरेस्ट के बेस कैंप (5,364 मीटर) पर भीषण ठंड और -40 डिग्री सेल्सियस तापमान में भारतीय तिरंगा फहराकर देश का मान बढ़ाया। इस साहसिक अभियान की शुरुआत 24 दिसंबर 2025 को हुई थी। अभियान के दौरान खराब मौसम, तेज बर्फबारी और अत्यधिक ठंड जैसी विषम परिस्थितियों का सामना करने के बावजूद नरेंद्र कुमार ने अदम्य साहस, दृढ़ इच्छाशक्ति और अनुशासन के साथ इस अभियान को सफलतापूर्वक पूरा किया। वे मूल रूप से हरियाणा के अंतर्गत हिसार के नलवा हलके के गांव मिंगनी खेड़ के निवासी है।

इंस्टाग्राम पर उनके 26 हजार से भी ज्यादा प्रशंसक हैं। वे अन्नपूर्णा और माउंट किलिमंजारो और माउंट ल्होत्से भी फतह कर चुके हैं। वह इंस्टाग्राम पर अपने वीडियो के जरिए पर्वतारोहण सिखाते हैं तथा इसको लेकर लोगों का मार्गदर्शन भी करते हैं। नरेंद्र कुमार ने कहा कि पर्वतारोहण की उनकी यात्रा की शुरुआत वर्ष 2019 में 'अटल बिहारी वाजपेयी इंस्टीट्यूट आफ माउंटेनियरिंग', मनाली से शुरुआती पाठ्यक्रम पूरा करके की। इसके बाद उन्होंने 2021 में 'हिमालयन माउंटेनियरिंग इंस्टीट्यूट, दार्जिलिंग' से विस्तृत पाठ्यक्रम पूरा किया।

कैंपा बजट को खर्च करने में उत्तराखंड वन विभाग फिसड्डी

कुलदीप सिंह राणा
देहरादून, 12 जनवरी।

सत्तर फीसद वन क्षेत्र वाला उत्तराखंड राज्य का वन विभाग बजट को खर्च करने के मामले में फिसड्डी सबित हुआ है। प्रतिवर्ष केंद्र सरकार द्वारा प्रदेश के वन विभाग को वनरोपण निधि प्रबंधन व योजना प्राधिकरण (कैंपा) के अंतर्गत विशेष सहायता राशि प्रदान की जाती है, जिसे राज्य में पर्यावरण संरक्षण और वन विकास से संबंधित गतिविधियों में खर्च करना होता है।

चालू वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए कैंपा के अंतर्गत केंद्र की ओर से उत्तराखंड को 253 करोड़ की राशि जारी की गई थी लेकिन नौ माह बीत जाने के बाद भी वन विभाग 93 करोड़ रुपये ही खर्च कर पाया है। वित्तीय वर्ष पूरे होने में अब मात्र तीन माह बचे है। ऐसे में अब विभागीय अधिकारी शेष राशि को खर्च करने की कवायद में जुट गए हैं।

क्षेत्र स्तर पर भी आंकड़े बेहद निराशाजनक हैं। गढ़वाल स्तर पर यमुना वृत्त और कुमायूं मंडल में उत्तर कुमायूं वृत्त कैंपा में आबंटित राशि का एक तिहाई ही खर्च हो सका है। क्षेत्रीय स्तर पर खर्च के ये आंकड़े वन अधिकारियों की कार्य दक्षता पर भी सवाल खड़े करते हैं। बड़ा सवाल यह उठ रहा है कि वित्तीय वर्ष 2025-26 की अंतिम तिमाही में वन विभाग शेष बचे 64 फीसद बजट को कैसे इस्तेमाल कर पाएगा।

> ऐसा पहली बार नहीं है जब वन विभाग के अधिकारी कैंपा के अंतर्गत आबंटित निधि का उपयोग करने में विफल रहे हों। वित्तीय वर्ष 2024-25 में भी अधिकारियों का प्रदर्शन निराशाजनक रहा था।

ऐसा पहली बार नहीं है जब वन विभाग के अधिकारी कैंपा के अंतर्गत आबंटित निधि का उपयोग करने में विफल रहे हों। वित्तीय वर्ष 2024-25 में भी अधिकारियों का प्रदर्शन निराशाजनक रहा था, जहां आबंटित चार सौ करोड़ में से लगभग 30 फीसद राशि का इस्तेमाल नहीं हो पाया था।

भारत की 'जेन जी' रचनात्मकता और ऊर्जा से भरी है : प्रधानमंत्री

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 12 जनवरी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत की 'जेन जी' रचनात्मकता, नवाचार विचार, ऊर्जा और किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए युवा आगे बढ़ रहे हैं। वहीं, देश के युवा राष्ट्र निर्माण में सबसे आगे हैं।

विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद के समापन सत्र को संबोधित करते हुए सोमवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत और विदेश के युवाओं के साथ संवाद किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह पहल कम समय में महत्वपूर्ण मंच बन गया है। उन्होंने कहा, हर साल 12 जनवरी को स्वामी विवेकानंद के सम्मान में राष्ट्रीय युवा दिवस मनाते हैं, जिनका जीवन और शिक्षाएं हमें प्रेरित करती रहती हैं। उनसे प्रेरणा लेकर विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद की स्थापना की गई है। प्रधानमंत्री ने कहा कि केंद्र सरकार ने युवाओं पर स्पष्ट ध्यान केंद्रित करते हुए लगातार योजनाएं शुरू कीं और इसके बाद भारत में स्टार्टअप क्रांति ने गति पकड़ी। उन्होंने कहा, रचनात्मकता, नवाचार विचार, ऊर्जा और किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए युवा आगे बढ़ रहे हैं। भारत आरेंज इकोनामी में उल्लेखनीय वृद्धि देख रहा है, जो संस्कृति, कंटेंट और रचनात्मकता में निहित है। उन्होंने कहा, पिछले एक दशक में हमने जो सुधारों की श्रृंखला शुरू की थी, वह अब एक रिफार्म एक्सप्रेस बन गई है। इन सुधारों के केंद्र में हमारी युवा शक्ति है। यह मंच एक राष्ट्रीय मंच है, जिसे भारत के युवाओं और राष्ट्रीय नेतृत्व के बीच संरचित जुड़ाव को सुविधाजनक बनाने के लिए किया गया है। 9 से 12 जनवरी तक आयोजित संवाद में देश भर के पचास लाख से अधिक युवाओं ने विभिन्न स्तरों पर भाग लिया है।

नई दिल्ली में विकसित भारत युवा नेता संवाद के समापन सत्र के दौरान उपस्थित प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व अन्य।

> प्रधानमंत्री ने कहा कि केंद्र सरकार ने युवाओं पर स्पष्ट ध्यान केंद्रित करते हुए लगातार योजनाएं शुरू कीं और इसके बाद भारत में स्टार्टअप क्रांति ने गति पकड़ी। उन्होंने कहा, रचनात्मकता, नवाचार विचार, ऊर्जा और किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए युवा आगे बढ़ रहे हैं। भारत आरेंज इकोनामी में उल्लेखनीय वृद्धि देख रहा है, जो संस्कृति, कंटेंट और रचनात्मकता में निहित है।

करूर भगदड़ मामले में सीबीआइ ने विजय से की छह घंटे पूछताछ

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 12 जनवरी।

तमिलगा वेत्री कषगम (टीवीके) प्रमुख और अभिनेता विजय से केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआइ) ने सोमवार को करूर भगदड़ मामले के संबंध में लगभग छह घंटे तक पूछताछ की। अधिकारियों ने बताया कि तमिल अभिनेता को दोबारा पूछताछ के लिए बुलाया जाएगा क्योंकि कुछ सवालों के जवाब अभी और स्पष्ट करने बाकी हैं।

सीबीआइ चाहती थी कि अभिनेता मंगलवार को पूछताछ के लिए उपस्थित हों, लेकिन उन्होंने पोंगल का हवाला देते हुए दूसरी तारीख मांगी। अधिकारियों ने बताया कि एजंसी ने उनका अनुरोध मान लिया है और उन्हें नई तारीख दी जाएगी। तमिल अभिनेता सुबह 11:29 बजे एक काली रेंज रोवर में भारी सुरक्षा घेरे में सीबीआइ मुख्यालय पहुंचे।

आवश्यक औपचारिकताओं को पूरा करने के बाद, उन्हें एजंसी की भ्रष्टाचार विरोधी इकाई की एक टीम के पास ले जाया गया, जो 27 सितंबर, 2025 को तमिलनाडु के करूर में हुई भगदड़ की जांच कर रही है, जिसमें 41 लोगों की जान चली गई और 60 से अधिक लोग घायल हो गए। अधिकारियों ने बताया कि लगभग छह घंटे तक अधिकारियों की एक टीम द्वारा पूछताछ किए जाने के बाद वह शाम लगभग 6.15 बजे सीबीआइ मुख्यालय से रवाना हुए, जहां उनसे उस रैली से संबंधित विभिन्न प्रश्न पूछे गए जिसमें यह दुखद घटना घटी थी। सीबीआइ ने इस मामले में तमिलनाडु के पूर्व एडीजी (कानून और व्यवस्था) एस डेविडसन देवसिरवथम से भी पूछताछ की।

शौर्य
जयपुर में 78वें सेना दिवस से पहले 'अपनी सेना को जानो' प्रदर्शनी के दौरान जवानों ने युद्ध कौशल का प्रदर्शन किया।

नौसेना के पूर्व प्रमुख को नोटिस पर चुनाव आयोग ने दी सफाई

गणना प्रपत्र में शामिल नहीं थे अनिवार्य विवरण

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 12 जनवरी।

गोवा में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) के तहत नौसेना के पूर्व प्रमुख एडमिरल (सेवानिवृत्त) अरुण प्रकाश को नोटिस जारी किया गया है।

नोटिस के बाद सोमवार को निर्वाचन आयोग ने स्पष्ट किया कि अरुण प्रकाश के गणना प्रपत्र फार्म में अनिवार्य विवरण शामिल नहीं था। विवरण की कमी की वजह से उन्हें नोटिस जारी किया गया था। नोटिस में आयोग ने अरुण प्रकाश को अपनी पहचान सिद्ध करने के लिए बुलाया गया था, ऐसे कई मामले सामने आने के बाद अरुण प्रकाश ने सोशल मीडिया में इस पर चिंता जाहिर की थी। सेवानिवृत्ति के बाद से प्रकाश कुमार गोवा में रह रहे थे। जहां एसआइआर प्रक्रिया के दौरान उनकी ओर से आयोग के पास गणना प्रपत्र जमा कराया गया था। मामले में निर्वाचन पंजीकरण अधिकारी मेडोरा एरमोमिला डीकोस्टा ने स्पष्टीकरण में कहा कि विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) के दौरान कोर्टालिम विधानसभा क्षेत्र के भाग संख्या 43 के बूथ स्तरीय अधिकारी (बीएलओ) ने अरुण प्रकाश से संबंधित गणना प्रपत्र एकत्र किया था।

> बीएलओ आनलाइन फार्म में कोई भी गड़बड़ी होती है तो खुद ही जारी हो जाता है नोटिस।

जांच में सामने आया कि उक्त गणना प्रपत्र में पिछले एसआइआर से संबंधित अनिवार्य विवरण शामिल नहीं थे, जिनमें मतदाता का नाम, ईपीआइसी नंबर, रिश्तेदार का नाम, विधानसभा क्षेत्र का नाम और संख्या, भाग संख्या और मतदाता सूची में क्रम संख्या शामिल हैं। इन आवश्यक पहचान विवरणों के अभाव में, 'बीएलओ एप्लिकेशन' प्रस्तुत गणना प्रपत्र और मौजूदा मतदाता सूची डेटाबेस के बीच स्वचालित संबंध स्थापित करने में असमर्थ था। आयोग के मुताबिक पिछली एसआइआर से संबंधित सभी जानकारियां नहीं दी गई थीं, इसलिए सिस्टम ने गणना प्रपत्र को 'अनमैप' श्रेणी के अंतर्गत वर्गीकृत किया।

पंजाबी मूल के गिरोहबाज की कनाडा में हत्या

चंडीगढ़, 12 जनवरी (ब्यूरो)।

पंजाबी मूल के गिरोहबाज की कनाडा में गोली मारकर हत्या कर दी गई है। गिरोहबाज नवप्रीत सिंह धालीवाल को ब्रिटिश कोलंबिया के एबाट्सफोर्ड शहर में घर में घुसकर अज्ञात हमलावरों ने गोलियों से भून दिया।

नवप्रीत का परिवार मूलतः लुधियाना के गांव सुधार का रहने वाला है। कनाडा की इंटीग्रेटेड होमिसाइड जांच टीम (आइएचआइटी) के अधिकारियों के मुताबिक, शुरुआती जांच में यह साफ हुआ है कि यह कोई सामान्य वारदात नहीं, बल्कि सुनियोजित हत्या थी। पुलिस को नौ जनवरी को दोपहर करीब 12:38 बजे सिस्किन ड्राइव के 3200 ब्लाक में गोली चलने की सूचना मिली थी। अधिकारियों को घर के अंदर एक युवक गंभीर रूप से घायल मिला। बाद में उसकी मौत हो गई। कनाडा पुलिस अधिकारियों के अनुसार, मृतक नवप्रीत सिंह धालीवाल वहां जाना-पहचाना नाम था और ब्रिटिश कोलंबिया के एक बदमाश गिरोह से जुड़ा हुआ था।

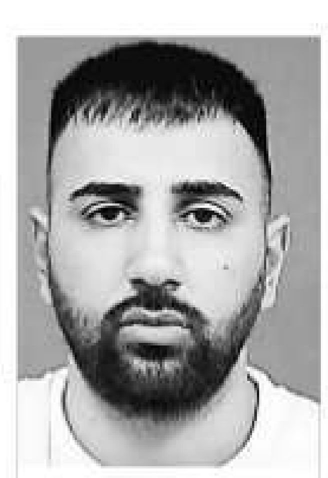

> पुलिस की शुरुआती जांच में यह साफ हुआ है कि यह कोई सामान्य वारदात नहीं, बल्कि सुनियोजित हत्या थी।

जांचकर्ताओं ने पुष्टि की कि यह हत्या बड़े ब्रिटिश कोलंबिया गिरोह विवाद से जुड़ी है। अधिकारी इलाके में वीडियो की जांच कर रहे हैं, लेकिन सोमवार तक इस मामले में कोई गिरफ्तारी नहीं हुई है। पुलिस ने कहा कि सिस्किन ड्राइव का घर उनके लिए जाना-पहचाना था, क्योंकि 2024 में धालीवाल की जमानत रिहाई के दौरान इसे जमानत के तौर पर सूचीबद्ध किया गया था। बताया जा रहा है कि नवप्रीत धालीवाल और उसके साथी अनमोल संधू को 2022 के अंत में पुलिस की ओर से शुरू की गई कार्रवाई के दौरान बड़े पैमाने पर मादक पदार्थों की तस्करी में गिरफ्तार किया गया था।

अकाली दल बादल के वरिष्ठ नेता मेहर सिंह धालीवाल ने बताया कि नवप्रीत रिश्तेदारी में उनका पौत्र लगता था। उसके दादा नाजर सिंह चचेरे भाई थे। नवप्रीत के पिता गुरजिंदर सिंह धालीवाल गांव सुधार से 1995 में कनाडा चले गए थे। उसका जन्म कनाडा में ही हुआ था।

वाशिंगटन से दिल्ली लाया गया एअर इंडिया का नया बोइंग विमान

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 12 जनवरी।

एअर इंडिया का नया (लाइन-फिट) बोइंग 787-9 सोमवार को वाशिंगटन से दिल्ली लाया गया। करीब 17 घंटे की सीधी उड़ान के बाद चार पायलटों (चालक दल) ने इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर विमान को उतारा। खास तौर पर एअर इंडिया के लिए तैयार इस विमान में कुल 296 सीटें है, जिसमें यात्रियों को विश्वस्तरीय सुविधाएं मिलेंगी।

एअर इंडिया के बेड़े में छह बड़े विमानों (बोइंग और एअरबस) शामिल किए जा रहे हैं। इसके अलावा 26 विमानों का नवीनीकरण (रेट्रोफिट) किया जाएगा। इन विमानों में यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए 60 फीसद से बदलाव किया जाएगा। पहले बोइंग विमान के उतरने के बाद विमानन क्षेत्र में एअर इंडिया ने एक बार फिर अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम बढ़ाया। एअर इंडिया का पहला लाइन-फिट (विशेष रूप से एअर इंडिया के लिए तैयार) बोइंग 787-9 विमान वाशिंगटन स्थित बोइंग की एवरेट फैक्ट्री से उड़ान भरकर दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरा। वाशिंगटन से दिल्ली के बीच उड़ान 16 घंटे और 58 मिनट में बगैर रुके पहुंची।

एअर इंडिया के प्रवक्ता के मुताबिक, 296 सीटों वाले इस विमान में तीन अलग अलग श्रेणियों में यात्रियों को सफर का अनुभव मिल सकेगा।

पेज 1 का बाकी

भारत-अमेरिका के बीच आज होगी व्यापार वार्ता

वर्षों में राजदूत के रूप में मेरा लक्ष्य एक अत्यंत महत्वाकांक्षी एजंडे को आगे बढ़ाना है। हम इसे सच्चे रणनीतिक साझेदारों के रूप में करेंगे, जहां दोनों पक्ष अपनी ताकत, सम्मान और नेतृत्व के साथ आगे आएंगे। गोर (38) ने इस बात पर जोर दिया कि ट्रंप और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बीच दोस्ती 'सच्ची' है और यह उन 'मतभेदों' को सुलझाने में मदद करेगी, जिनके कारण पिछले दो दशकों में संबंधों का सबसे खराब दौर देखने को मिला।

उन्होंने कहा कि सच्चे मित्रों के बीच असहमति हो सकती है, लेकिन वे अंततः अपने मतभेद सुलझा लेते हैं। द्विपक्षीय संबंधों में यह गिरावट तब शुरू हुई जब ट्रंप ने भारत पर 50 फीसद शुल्क लगाया, जिसमें भारत द्वारा रूस से कच्चे तेल की खरीद पर 25 फीसद अतिरिक्त शुल्क भी शामिल था। शुल्क के अलावा भारत-पाकिस्तान संघर्ष को मई में समाप्त कराने के ट्रंप के दावे और अमेरिका की नयी आव्रजन नीति एवं कई अन्य मुद्दों पर भी द्विपक्षीय संबंधों में गंभीर तनाव देखा गया। गोर ने कहा कि अमेरिका और भारत केवल साझा हितों से ही नहीं जुड़े हैं बल्कि यह रिश्ता सर्वोच्च स्तरों पर आधारित है। सच्चे मित्रों में असहमति हो सकती है, लेकिन अंततः अपने मतभेद सुलझा लेते हैं। अमेरिकी दूतावास के कर्मचारियों ने नए राजदूत का गर्मजोशी से स्वागत किया और जब वह दूतावास की मुख्य इमारत में दाखिल हुए, तब सैम और डेव का मशहूर गाना 'होल्ड आन, आइ एम कमिंग' बज रहा था। गोर ने यह भी कहा कि भारत और अमेरिका प्रस्तावित द्विपक्षीय व्यापार समझौते पर सक्रिय रूप से बातचीत कर रहे हैं। यह टिप्पणी ऐसे समय आई है जब कुछ दिन पहले अमेरिका के वाणिज्य मंत्री हावर्ड लटनिक ने संकेत दिया था कि वाशिंगटन इस समझौते को जल्द अंतिम रूप देने को लेकर बहुत उत्सुक नहीं है। व्यापार पर बात करते हुए अमेरिकी राजदूत ने विदेश मंत्री मार्को रुबियो की उस टिप्पणी का भी उल्लेख किया, जिसमें उन्होंने इसे 'परस्परता का वर्ष' बताया था। गोर ने कहा कि हम कूटनीति के मानकों को ऊंचा कर रहे हैं। इसका मतलब है निष्पक्ष व्यापार, पारस्परिक सम्मान और साझा सुरक्षा। आप में से कई लोगों ने मुझसे जारी व्यापार वार्ताओं पर जानकारी मांगी है। दोनों पक्ष सक्रिय रूप से बातचीत कर रहे हैं। वास्तव में, व्यापार पर अगली बातचीत मंगलवार को होगी। बहरहाल, गोर ने यह स्पष्ट नहीं किया कि यह बातचीत दोनों देशों के व्यापार वार्ताकारों के बीच टेलीफोन पर होगी या किसी अन्य माध्यम से। भारत दुनिया का सबसे बड़ा देश है। इसलिए इसे (व्यापार वार्ता को) अंतिम चरण तक पहुंचाना आसान काम नहीं है लेकिन हम इसे पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। व्यापार हमारे संबंधों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है, लेकिन हम सुरक्षा, आतंकवाद-रोधी सहयोग, ऊर्जा, प्रौद्योगिकी, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे अन्य अहम क्षेत्रों में भी मिलकर काम करते रहेंगे। ट्रंप के करीबी लोगों में से एक समझे जाने वाले गोर ने 'पैक्स सिलिका' पहल का भी उल्लेख किया, जिसे अमेरिका ने पिछले महीने शुरू किया था। जापान, दक्षिण कोरिया, ब्रिटेन, इजराइल और कई अन्य देश पहले ही इसमें शामिल हो चुके हैं। उन्होंने कहा कि आज मुझे यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि अगले महीने भारत को इस समूह में पूर्ण सदस्य के रूप में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जाएगा। दुनिया नई प्रौद्योगिकी को अपना रही है, ऐसे में यह आवश्यक है कि भारत और अमेरिका इस पहल की शुरुआत से ही कंधे से कंधा मिलाकर काम करें। गोर ने कहा कि वह इस 'उल्लेखनीय राष्ट्र में अपने राजदूत कार्यकाल की शुरुआत गहरे सम्मान के साथ और दो महान राष्ट्रों के बीच साझेदारी को अगले स्तर पर ले जाने के स्पष्ट मिशन के साथ कर रहे हैं।'

उपग्रहों को निर्धारित कक्षा में स्थापित करने में विफल

निर्धारित कक्षा में स्थापित करने का मिशन पूरा नहीं हो सका और सभी 16 उपग्रह अंतरिक्ष में खो गए। यह लगातार दूसरी बार है, जब पीएसएलवी मिशन तीसरे चरण के दौरान आई गड़बड़ी के कारण विफल हो गया। मई 2025 में की गई इसी तरह की पिछली कोशिश (पीएसएलवी-सी61/ईओएस-09 मिशन) भी नाकाम हो गई थी, क्योंकि 'मोटर के चैंबर दबाव में अचानक आई गिरावट' के कारण राकेट को सही गति और दिशा नहीं मिल पाई थी। इसरो के मुताबिक, मिशन के लिए 22.5 घंटे की उलटी गिनती पूरी होने के बाद 44.4 मीटर ऊंचे चार-चरणीय राकेट ने तय कार्यक्रम के अनुसार सुबह 10:18 बजे श्रहरिकोटा स्थित अंतरिक्ष केंद्र से उड़ान भरी। अंतरिक्ष एजंसी ने बताया कि इस मिशन का उद्देश्य लगभग 17 मिनट की उड़ान के बाद एक प्राथमिक पृथ्वी अवलोकन उपग्रह और 15 सह-यात्री उपग्रहों को 512 किलोमीटर ऊंची सूर्य-समकालिक कक्षा में स्थापित करना था।

इसरो ने बताया कि मिशन निदेशक से अनुमति मिलने के बाद पीएसएलवी-सी62 की स्वचालित प्रक्षेपण प्रक्रिया शुरू हुई। राकेट के उड़ान भरने के दौरान इसरो के वैज्ञानिक वास्तविक समय में इससे जुड़ी जानकारी देते रहे। राकेट उड़ान के शुरुआती चरण में योजना के अनुसार आगे बढ़ा। हालांकि, 'तीसरे चरण के प्रज्वलन' की घोषणा के बाद मिशन नियंत्रण केंद्र में असहज शांति कायम हो गई।

केंद्र में अपने संबोधन में नारायणन ने कहा कि पीएसएलवी चार चरणों वाला यान है, जिसमें दो ठोस और दो तरल चरण हैं। तीसरे चरण के अंत तक यान का प्रदर्शन उम्मीद के मुताबिक था। हालांकि, इस चरण के पूरा होने से पहले हमें यान में गड़बड़ी दिख रही है और अंततः यह पाया गया है कि वाहन उड़ान पथ से भटक गया है। इसरो ने अपने 'एक्स' हैंडल पर मिशन की विफलता की पुष्टि की। उसने लिखा कि पीएसएलवी-सी62 मिशन को राकेट के पीएस3 (तीसरे चरण) के अंत में गड़बड़ी का सामना करना पड़ा।

पुनरीक्षण : बंगाल में बीएलओ ने प्रदर्शन कर जताया विरोध

और इसके काम का भार उनके स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव डाल रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि कई अधिकारी सख्त समयसीमा, व्यापक फील्ड सत्यापन और बड़ी मात्रा में डेटा की जांच से जुड़े तनाव के कारण प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान हिम्मत हार गए। आंदोलनकारी बीएलओ ने पुनरीक्षण प्रक्रिया शुरू होने के बाद से विभिन्न जिलों में अधिकारियों की कई मौतों की खबरों का भी हवाला दिया।आयोग की प्रतिक्रिया पर सवाल उठाते हुए प्रदर्शनकारियों ने पूछा कि संशोधन संबंधी कर्तव्यों का पालन करते समय बीमार पड़ने या जान गंवाने वाले बीएलओ के लिए मुआवजे की घोषणा क्यों नहीं की गई है। एक प्रदर्शनकारी ने कहा कि राज्य सरकार चुनाव ड्यूटी के दौरान हताहत होने पर मुआवजा देती है।

दोनों देशों के बीच प्रौद्योगिकी और रक्षा समेत 19 समझौते

आर्थिक एवं निवेश समिति में एकीकृत सीईओ फोरम स्थापित करने का फैसला लिया। अहम व उभरती प्रौद्योगिकियों में सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम साझेदारी, महत्त्वपूर्ण खनिजों व दूरसंचार पर घोषणा पत्रों पर हस्ताक्षर हुए।ऊर्जा क्षेत्र में भारत की एएम ग्रीन व जर्मनी की 'यूनिपर ग्लोबल कमोडिटीज' के बीच ग्रीन अमोनिया के लिए आफटेक समझौता हुआ। पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस नियामक बोर्ड व जर्मन तकनीकी-वैज्ञानिक संघ के बीच नवीकरणीय ऊर्जा पर समझौते पर हस्ताक्षर हुए। दूसरी ओर, उच्च शिक्षा रोडमैप अपनाया गया। हैदराबाद के राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थान में नवीकरणीय ऊर्जा कौशल के लिए राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र बनेगा। जर्मनी ने 'हरित एवं सतत विकास साझेदारी' के तहत नवीकरणीय ऊर्जा, ग्रीन हाइड्रोजन, पीएम ई-बस सेवा व जलवायु-लचीले शहरी बुनियादी ढांचे के लिए अतिरिक्त 1.24 अरब यूरो देने का वादा किया। पहले 2030 साझेदारी के तहत 10 अरब यूरो (ज्यादातर रियायती ऋण) का वादा था, जिसमें 2022 से अब तक करीब पांच अरब यूरो खर्च या तय हो चुके। अक्षय ऊर्जा निवेश के लिए भारत-जर्मनी मंच के तहत बैटरी स्टोरेज कार्यकारी समूह शुरू होगा।प्रधानमंत्री ने एक वक्तव्य में कहा कि आज उच्च शिक्षा पर बना समग्र रोडमैप शिक्षा के क्षेत्र में हमारी साझेदारी को नई दिशा देगा। प्रधानमंत्री ने जर्मनी के विश्वविद्यालयों को भारत में अपने परिसर खोलने के लिए भी आमंत्रित किया। भारत की अपनी पहली यात्रा पर आए जर्मन चांसलर फ्रेडरिक मर्ज ने कहा कि महात्मा गांधी की विरासत भारतीयों और जर्मनों को दोस्तों के रूप में एकजुट करती है और उनकी शिक्षाओं की आज पहले से कहीं अधिक आवश्यकता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और जर्मनी के चांसलर मर्ज ने सोमवार सुबह अहमदाबाद में साबरमती आश्रम पहुंचकर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की। कुछ मिनट पहले ही आश्रम पहुंचे प्रधानमंत्री मोदी ने जर्मन चांसलर का वहां पहुंचने पर स्वागत किया।

उत्तर भारत में शीतलहर जारी, दिल्ली में न्यूनतम पारा तीन डिग्री

है। विभाग ने बताया कि अगले दो दिन तक राजधानी में शीत लहर की स्थिति बने रहने का अनुमान है। हरियाणा, पंजाब और चंडीगढ़ में दिन में सुबह कोहरे और दिन व रात में शीतलहर ने परेशान किया। मौसम विभाग के मुताबिक पंजाब और हरियाणा में अगले तीन दिन तक भीषण ठंड जारी रहने की संभावना है।

पंजाब, हरियाणा और चंडीगढ़ में मंगलवार को कुछ स्थानों पर शीतलहर और पाला पड़ने की संभावना है। हिमाचल प्रदेश के अधिक ऊंचे व मध्यम ऊंचाई वाले कई भागों में बीती रात तापमान में थोड़ा उछाल दर्ज किया गया। मौसम विभाग ने 16 जनवरी से एक पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होने का पूर्वानुमान लगाया है। इससे प्रदेश के अधिक ऊंचाई वाले इलाकों में हल्की बर्फबारी हो सकती है। कश्मीर में न्यूनतम तापमान में कुछ डिग्री की बढ़ोतरी के चलते घाटी को भीषण शीत लहर से कुछ राहत मिली है। हालांकि, पारा हिमांक बिंदु से नीचे ही रहा। मौसम विभाग के अनुसार शून्य से नीचे के तापमान और साफ आसमान के कारण डल झील और घाटी में स्थित अन्य जल निकायों के कुछ हिस्से जम गए। दक्षिण कश्मीर का पुलवामा शहर घाटी में सबसे ठंडा स्थान रहा, जहां न्यूनतम तापमान शून्य से 6.5 डिग्री सेल्सियस नीचे दर्ज किया गया।

पहलगाम पर्यटन स्थल में न्यूनतम तापमान शून्य से 3.4 डिग्री सेल्सियस कम दर्ज किया गया। राजस्थान में कड़ाके की सर्दी का दौर जारी है, जहां कई जगह तापमान जमाव बिंदु तक गिर गया है। बीती रात सीकर के फतेहपुर में न्यूनतम तापमान शून्य से नीचे 0.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मौसम विभाग के अनुसार बीते चौबीस घंटे में लगभग पूरे राजस्थान में शीत लहर दर्ज की गई।

प्रेरणा

आप आगे बढ़ने के लिए पंख नहीं, हौसला खोजिए, उड़ान अपने आप आ जाती है। - खलील जिब्रान

संपादकीय

'रेयर-अर्थ' का बढ़ रहा है भू-राजनीतिक महत्व

वॉशिंगटन में जी-7 के संपन्न देशों के वित्त-मंत्रियों की बैठक में सुरक्षा के अलावा अन्य उद्योगों की रीढ़ बने रेयर-अर्थ मटैरियल्स के उत्पादन को युद्ध स्तर पर शुरू करने की गुहार लगाई गई है। इस बैठक में सात प्रमुख देशों के अलावा भारत सहित चार और देश भी आमंत्रित हैं। दरअसल चंद दिनों पहले चीन द्वारा जापान को क्रिटिकल मिनरल्स और रेयर-अर्थ की आपूर्ति रोकने की घटना से अमेरिका सतर्क हो गया है। वैसे तो चीन ने यूएस से सोयाबीन व मक्का खरीद बढ़ा दी है और रेयर-अर्थ तत्वों की सप्लाई भी जारी रखी है, लेकिन वेनेजुएला में अमेरिकी दखलंदाजी के बाद चीन सख्त हो सकता है। अमेरिका ने पिछले जून में भी कनाडा बैठक में यह मुद्दा उठाया था लेकिन उस समय किसी भी सदस्य ने चीन को नाराज नहीं करने की मनोस्थिति के कारण इस संकट पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। बहरहाल, अब ट्रम्प को रेयर-अर्थ की सप्लाई को लेकर चीन से खतरा नजर आ रहा है। फिलहाल चीन दुनिया के कुल रेयर-अर्थ मटैरियल्स का 47 से 87% तक शोधित-संवर्धित करता है। पहली बार अमेरिका ने रेयर-अर्थ उत्पादन को सुरक्षा के एजेंडा में रखकर इसे सबसे उच्चतम वरीयता दी है। इस बैठक के परिणाम से ही यह पता चल सकेगा कि क्या अमेरिका इन सब के लिए ऑस्ट्रेलिया, कनाडा या भारत को आर्थिक और तकनीकी मदद देगा?

जीने की राह

पं. विजयशंकर मेहता
humarehanuman@gmail.com

सत्संग में मौजूद हर व्यक्ति का सम्मान होना चाहिए

श्रोता बड़ा हो या छोटा, कथा-सत्संग में उसका सम्मान बराबरी का होना चाहिए। भेदभाव के मामले में अब कोई जगह नहीं बची। छोटे-बड़े का चक्कर घर में और बाहर समान रूप से चल रहा है। तुलसीदास जी ने वो दृश्य लिखा है, जिसमें गरुड़ जी भुशुंडि जी से कथा सुनने गए थे- कथा अरंभ करै सोइ चाहा, तेही समय गयउ खगनाहा। भुशुंडि जी कथा आरंभ करना ही चाहते थे कि उसी समय पक्षीराज गरुड़ जी वहां पहुंच गए। उन्हें देखकर सब हर्षित हुए। उनका बहुत आदर-सत्कार, स्वागत किया गया। बैठने के लिए सुंदर आसन दिया गया। यह व्यवहार प्रत्येक उस व्यक्ति के साथ होना चाहिए, जो सत्संग में उपस्थित रहे। लेकिन आजकल कथा के मंचों से कही जा रही और की जा रही बातें बड़बोल और तमाशे का रूप ले रही हैं। सुधि वक्ता और गंभीर श्रोता, दोनों इससे दुःखी हैं- क्योंकि ये एकमात्र आयोजन और स्थल बचा था, जहां पहुंचकर आदमी अपनी आत्मा तक की यात्रा आसानी से कर सकता था।

• Facebook:Pt. Vijayshankar Mehta

दूरदृष्टि • देश से प्रतिभाओं का पलायन जारी है

अच्छी विकास दर के बावजूद तेजी से नहीं बढ़ रहे हैं हम

इकोनॉमी

रुचिर शर्मा
ग्लोबल इन्वेस्टर व लेखक
breakoutnations@gmail.com

ये सच है कि भारत अभी भी अच्छी आर्थिक वृद्धि दर दर्ज कर रहा है। लेकिन अब उसे पहले जैसा उत्साह या भरोसा नहीं मिल रहा है। देश में विदेशी पूंजी का प्रवाह सूखता जा रहा है, जो इस बात का संकेत है कि बाहरी निवेशकों को लगता है, 8% से अधिक बताई जा रही जीडीपी वृद्धि दर के पीछे कुछ बुनियादी कमजोरियां छिपी हैं। सबसे आश्चर्य की बात यह है कि आम तौर पर किसी भी देश में कॉर्पोरेट राजस्व अर्थव्यवस्था के साथ-साथ ही बढ़ता या घटता है। लेकिन पिछले साल भारत में सूचीबद्ध कंपनियों की कॉर्पोरेट राजस्व वृद्धि दर, जीडीपी वृद्धि की तुलना में मुश्किल से आधी रही। जीडीपी आंकड़ों से संतुष्ट होने के बजाय भारत के नीति-निर्माताओं को समस्याओं पर ध्यान देना होगा।

कमजोरी के प्रमुख संकेतों में एक यह है कि भारत से पहले की तुलना में ज्यादा लोग पलायन कर रहे हैं और वह बहुत कम पूंजी आकर्षित कर पा रहा है। इस दशक में हर साल औसतन 6.75 लाख लोग भारत से बाहर जाकर बस रहे हैं, जबकि 2010 के दशक में यह संख्या 3.25 लाख थी। पाकिस्तान, बांग्लादेश और यूक्रेन ने ही इससे बड़ा पलायन देखा है। चीन अभी भी पिछले दशक की तरह ही सालाना लगभग 3 लाख लोगों को खो रहा है। भारत से बाहर जाने वालों में एक बड़ा हिस्सा 'ब्रेन ड्रेन' का है- यानी ठीक वे ही कुशल पेशेवर, जिनकी जरूरत उसे उन्नत क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा करने के लिए है। इसका नतीजा यह है कि आज सिलिकॉन वैली के तकनीकी कार्यबल का लगभग एक-तिहाई हिस्सा भारतीयों का हो गया है।

युवाओं को नौकरियां नहीं मिल रही हैं। यहां तक कि प्रतिष्ठित आईआईटी में भी 2024 में 38% छात्र ऐसे रहे, जिन्हें कैम्पस प्लेसमेंट के दौरान नौकरी का एक भी प्रस्ताव नहीं मिला। बेहतर रोजगार की तलाश में कई भारतीय उन गिने-चुने देशों की ओर जा रहे हैं, जो अभी भी प्रवासियों के प्रति अपेक्षाकृत अनुकूल हैं- जैसे यूएई और सऊदी अरब- जहां कंस्ट्रक्शन-बूम ने उन्हें अपनी ओर आकर्षित किया है।

भारत लंबे समय से विदेशों से सीमित मात्रा में पूंजी ही आकर्षित कर पाया है, जिसका एक बड़ा कारण अब भी बना हुआ 'लाइसेंस राज' है। यह जमीन हासिल करने या श्रमिकों को नियुक्त करने या हटाने की प्रक्रिया को अत्यधिक महंगा और जटिल बना देता है। जिन एशियाई अर्थव्यवस्थाओं ने तेज और टिकाऊ वृद्धि दर्ज की है- जैसे पहले चीन और हाल के वर्षों में वियतनाम- उनके उछाल के दौर में शुद्ध एफडीआई जीडीपी के 4% से ऊपर पहुंच गया था। भारत में यह आंकड़ा कभी भी 1.5% से आगे नहीं बढ़ पाया और अब तो यह घटकर मात्र 0.1% रह गया है। पिछले एक दशक में, शुद्ध एफडीआई/जीडीपी के आधार पर भारत की रैंकिंग 25 सबसे बड़े उभरते देशों में 12वें स्थान से फिसलकर 19वें स्थान पर आ गई है।

बिजनेस के लिए एक मुश्किल जगह होने की भारत की पुरानी छवि के अलावा कुछ नए जोखिम भी विदेशी निवेशकों को रोक रहे हैं। इनमें पड़ोसी देशों के साथ नई दिल्ली के बिगड़ते रिश्ते, अमेरिका के साथ टैरिफ युद्ध और भारत की तकनीकी क्षमता को लेकर संदेह शामिल हैं। चीन और ताइवान अपनी जीडीपी का 2.5% से अधिक रिसर्च एवं विकास (आरएंडडी) पर खर्च करते हैं; जबकि भारत में यह खर्च पिछले वर्ष मात्र 0.65% रहा। ऐसे में हैरानी की बात नहीं कि एआई के क्षेत्र में भारत के पास कोई बड़े नाम नहीं हैं।

इन कमजोरियों का असर वित्तीय बाजारों पर भी पड़ रहा है। लंबे सूखे के बाद, उभरती अर्थव्यवस्थाओं के शेयर बाजारों में पिछले वर्ष अंततः शुद्ध निवेश प्रवाह लौटा। लेकिन भारत ने इसके उलट 19 अरब डॉलर का रिकॉर्ड नेट आउट-फ्लो देखा। विदेशी निवेशकों की भारी बिकवाली का सामना घरेलू निवेशकों ने किया, जहां परिवारों ने इक्विटी में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने में ऐतिहासिक रूप से कम रुचि दिखाई। इसके बावजूद, भारतीय शेयर बाजार पिछले वर्ष अपने समकक्ष देशों की तुलना में काफी पीछे रहा।

युवाओं को नौकरियां नहीं मिल रही हैं। आईआईटी में भी 2024 में 38% छात्र ऐसे रहे, जिन्हें कैम्पस प्लेसमेंट के दौरान नौकरी का एक भी प्रस्ताव नहीं मिला। बेहतर रोजगार की तलाश में कई भारतीय दूसरे देशों की ओर जा रहे हैं।

तेज ग्रोथ के लिए भारत को कहीं अधिक विदेशी पूंजी की आवश्यकता है, क्योंकि उसका घरेलू बचत आधार पर्याप्त नहीं है। पूर्वी एशिया के आर्थिक चमत्कारों के विपरीत भारत का मैन्युफैक्चरिंग क्षेत्र कमजोर रहा है, इसलिए वह कभी निर्यात महाशक्ति नहीं बन सका और लगभग हमेशा चालू खाते के घाटे में रहा। यह कोई संयोग नहीं है कि पिछले एक दशक में भारत में घरेलू निजी निवेश भी सुस्त रहा है। भारत किसी 'आर्थिक चमत्कार' के रास्ते पर तभी दिखाई देगा, जब उसके यहां अधिक पूंजी आएगी और उसके यहां से कम प्रतिभाएं बाहर जाएंगी।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

नजरिया • इसके बिना चुनाव-सर्वेक्षण सटीक नहीं होंगे

वोटरों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का जायजा लेना जरूरी

निर्वाचन

संजय कुमार
प्रोफेसर व राजनीतिक टिप्पणीकार
sanjay@csds.in

चुनाव-सर्वेक्षण मूल रूप से मौसमी होते हैं। चुनाव खत्म होते ही एग्जिट पोल आदि पर बहस खत्म हो जाती है और अगले चुनाव के वक्त ही लौटती है। इस साल अप्रैल-मई में असम, बंगाल, तमिलनाडु, केरल, पुडुचेरी में होने जा रहे चुनाव के चलते एग्जिट पोल पर चर्चा फिर से शुरू हो सकती है। लेकिन समस्या यह है कि अब वे पहले की तुलना में अधिक बार गलत साबित हो रहे हैं। 2024 के लोकसभा चुनाव में सभी एग्जिट पोल औंधे मुंह आ पड़े थे। हरियाणा चुनाव में भी वे वोटरों का मन नहीं जान पाए। बिहार चुनाव में इनकी सटीकता का रिकॉर्ड मिला-जुला रहा। अधिकतर ने एनडीए की जीत तो बताई, लेकिन इतने भारी बहुमत का अनुमान शायद ही कोई लगा पाया। 2024 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में भी एग्जिट पोल के अनुमान बहुत सटीक साबित नहीं हुए थे।

इसका कारण यह है कि ये सर्वेक्षण आज भी मतदान के जाति, वर्ग, लिंग और क्षेत्र जैसे पुराने और स्थिर फैक्टर्स पर टिके हैं। यह सही है कि ये पारंपरिक फैक्टर अब भी मतदाता की पसंद तय करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। लेकिन एआई और सोशल मीडिया संचालित प्रचार अभियानों से पैदा होने वाले व्यक्तिगत प्रभाव भी इस पर असर डाल रहे हैं। एग्जिट पोल के लिए इस तरह के प्रभावों को मापना कठिन हो रहा है।

बीते कुछ चुनावों से राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों ने एआई आधारित डेटा एनालिटिक्स में भारी निवेश किया है, ताकि मतदाताओं को छोटे-छोटे वर्गों में बांटकर उनके लिए अलग-अलग संदेश तैयार किए जा सकें। वोटरों के इस लक्षित मोबिलाइजेशन के लिए सियासी दल उनकी सोशल मीडिया गतिविधियों, उपभोक्ता व्यवहार और ऑनलाइन डेटा का इस्तेमाल कर रहे हैं। यह माइक्रो-टारगेटिंग वोटरों को पहली बार के मतदाता, महत्वाकांक्षी उद्यमी या खास सरकारी योजना के लाभार्थी जैसे समूहों में बांट देती है। और इन वोटरों की पसंद जल्द अपनी परंपरागत वोटिंग से हटकर इन नए वर्गों में शिफ्ट हो जाती है। ऐसी माइक्रो लेवल टारगेटिंग और मोबिलाइजेशन को सर्वे के परंपरागत तरीकों से समझ पाना मुश्किल है, क्योंकि ये समूह व्यवहार आधारित डेटा से संचालित होते हैं।

सर्वे करने वाले आमतौर पर पारंपरिक तरीके से सैंपलिंग करते हैं तो उन मतदाता समूहों के रुझान और स्विंग का अंदाजा नहीं लगा पाते, जिन्हें सियासी दल बेहद आक्रामक तरीके से टारगेट कर रहे हैं। सर्वे के पारंपरिक तरीकों से शायद ही यह ठीक से आंका जा सकता है कि वोटर कौन-सा डिजिटल प्लेटफॉर्म इस्तेमाल करते हैं, किस इंफ्लुएंसर्स को फॉलो करते हैं या कैसा सियासी कंटेंट देखते हैं। और इसीलिए वे यह समझने में गच्चा खा जाते हैं कि ऑनलाइन जगत और वायरल ट्रेंड्स कैसे एक ही जाति और इलाके में भी लोगों की राय को विभाजित कर रहे हैं। बाद में जब विश्लेषक महज सामाजिक और जनसांख्यिकीय मानकों पर प्रतिक्रियाओं को तौलते हैं तो वे इन विभाजनों को हल्के में ले जाते हैं। ऐसे में उनके अनुमान कागज पर तो संतुलित नजर आते हैं, लेकिन धरातल और सोशल मीडिया पर वोटरों के अस्थिर मन से मेल नहीं खाते।

मसलन, 2024 के लोकसभा चुनाव में वरिष्ठ नेताओं और सेलेब्रिटीज के फर्जी वीडियो और ऑडियो क्लिप तेजी से फैले। जब तक तथ्यपरक जानकारी प्रभावित वोटरों तक पहुंचती, वे व्यापक रूप से फैल चुके थे। इसने बताया कि प्रचार के आखिरी दिनों में ऐसे कंटेंट कैसे जनमानस को प्रभावित कर सकते हैं। चूंकि ओपिनियन पोल और एग्जिट पोल वोटिंग की समाप्ति से काफी पहले ही अपना फील्डवर्क रोक देते हैं या बूथ से दूर पोस्ट-पोल सर्वे की तरह एग्जिट इंटरव्यू करते हैं, इसलिए वे इस गलत सूचना के प्रसार और सुधार, दोनों को ही नहीं पकड़ पाते। खासकर उन मार्जिनल सीटों पर, जहां 1-2 प्रतिशत का स्विंग ही निर्णायक होता है।

चुनाव-सर्वेक्षणों की मैथडोलॉजी और विश्लेषण के तरीकों में बदलाव लाना जरूरी है, ताकि मतदाताओं के व्यवहार पर सोशल मीडिया के प्रभाव का आकलन किया जा सके। बदलते दौर के मद्देनजर इससे प्रणाली में सुधार आएगा।

नतीजतन, कांटे की टक्कर वाली सीटों पर पुराने, अपेक्षाकृत अधिक स्थिर मानकों पर बने सर्वे मॉडल बाद में वायरल कंटेंट के जरिए पैदा हुई लहर को सही तरीके से नहीं आंक पाते। इसीलिए वे नतीजों का अनुमान लगाने मे गलती कर बैठते हैं। हाल के चुनावों में शायद ऐसा ही हुआ, जब अनुमानों और वास्तविक परिणाम में बड़ा अंतर देखने को मिला।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

इस लेख को मोबाइल पर सुनने के लिए **QR कोड** को स्कैन करें।

दैनिक भास्कर — अब आप NYT के सभी आर्टिकल DB एप पर हर मंगलवार पढ़ सकते हैं। डाउनलोड करें डीबी एप।

© The New York Times

दैनिक भास्कर से विशेष अनुबंध के तहत

इस हफ्ते चर्चा में...

वेनेजुएला में अमेरिकी कंपनियों का मोटा निवेश

9 लाख करोड़ रु. का निवेश कराना चाहते हैं अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प वेनेजुएला में अमेरिकी तेल कंपनियों से।

135 लाख करोड़ रु. से भी ज्यादा हो सकता है अमेरिका का डिफेंस बजट इस साल।

31 लाख करोड़ रु. का बाजार मूल्य हासिल करना चाहती है, एआई कंपनी एंथ्रोपिक। वह बाजार से 90 हजार करोड़ रु. जुटाने जा रही है।

ओपिनियन — अपने दूसरे कार्यकाल के सालभर में कई देशों पर बमबारी करवा चुके हैं अमेरिकी राष्ट्रपति

राष्ट्रीय सुरक्षा का चोला ओढ़ मनमाने फैसले ले रहे ट्रम्प, कांग्रेस और कोर्ट भी उन्हें रोकने में अब तक बेअसर

लीडिया पॉलग्रीन

ट्रम्प प्रशासन सालभर में कई बार ये दावा कर चुका है कि विदेशी खतरों से निपटने के लिए देश में कार्रवाई करने के लिए राष्ट्रपति के पास व्यापक अधिकार हैं। अब ट्रम्प इन्हीं अधिकारों के चलते लोकतंत्र को खत्म कर रहे हैं। कार्रवाइयों को राष्ट्रीय सुरक्षा के आवरण में लपेटकर, प्रशासन ने ट्रम्प को कांग्रेस या न्यायिक निगरानी से बचाया है।

वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो के अपहरण के लिए की गई कार्रवाई के बाद ट्रम्प ने कहा मुझे बस अपनी सेना को बधाई देनी है। उनकी ही बदौलत आज वॉशिंगटन सुरक्षित है, अब वॉशिंगटन डीसी में कोई अपराध नहीं है।

आम लोगों के लिए ये सामान्य बात हो होगी, लेकिन मेरे कानों में घरेलू स्तर पर अमेरिकी सेना की तैनाती पर जोर ट्रम्प के दूसरे कार्यकाल की सबसे सिहरन पैदा करने वाली पहचान को स्पष्ट करता है।

टैरिफ को ही ले लें, इसे लगाने के लए उन्हें कांग्रेस के पास जाने की कोई जरूरत नहीं पड़ी। क्योंकि राष्ट्रपति एक अंतरराष्ट्रीय आर्थिक आपात स्थिति का जवाब दे रहे हैं। विदेशी आक्रमण न हो सके इसलिए बिना कानूनों का पालन किए वे डिपोर्टेशन कर रहे हैं। अमेरिकी धरती पर संघीय सैन्किों की तैनाती कर रहे हैं ताकि उन लोगों से मातृभूमि को सुरक्षित रखा जा सके, जिन्हें उन्होंने स्वयं घुसपैठिए घोषित कर दिया है।

कांग्रेस इन सत्ता-दुरुपयोगों पर अंकुश लगा सकती है। कई अदालतों ने ट्रम्प के खिलाफ फैसले भी दिए हैं। लेकिन वे सभी बेअसर ही रहे हैं। ट्रम्प ने इन रोकों को बिना किसी खास मेहनत के पार कर लिया है।

अब वेनेजुएला के काराकास पर हमले के साथ, ट्रम्प ने विदेश में भी यही उपलब्धि हासिल कर ली है। प्रशासन का तर्क है कि मादुरो को हटाना ऐसा कदम नहीं था, जिसमें युद्ध शक्तियों को लागू करने या कांग्रेस को सूचित करने की आवश्यकता पड़े। यह तो केवल विदेश में की गई एक घरेलू कानून-व्यवस्था कार्रवाई मात्र थी, जिसमें सेना ने सहायता की। ये कार्रवाई पूरी तरह कार्यपालिका के अधिकार क्षेत्र में आती है। © The New York Times

सत्ता ही ट्रम्प की एकमात्र विचारधारा

ट्रम्प के पास अपनी सत्ता के अलावा कोई विचारधारा नहीं है, जैसे अमेरिका उनके लिए उनकी अपनी शख्सियत से अलग कोई स्वतंत्र इकाई नहीं है। दुनिया के सबसे अमीर देश और सबसे शक्तिशाली सेना के संसाधनों के साथ ट्रम्प अपने कथित दुश्मनों के खिलाफ कहीं भी, कभी भी कार्रवाई करने का अधिकार जताते हैं। यह हम सभी को भयभीत करना चाहिए। एक साल से भी कम समय में उनके प्रशासन ने सात देशों पर बमबारी की है। इन हमलों में ईरान और वेनेजुएला जैसे शत्रु ही नहीं नाइजीरिया जैसा मित्र देश भी शामिल है।

'इंपीरियल बूमरैंग' का खतरा

अमेरिकी राष्ट्रपति की एक साम्राज्यवादी राष्ट्रपति के रूप में व्याख्या और कुछ नहीं बल्कि संवैधानिक और लोकतांत्रिक शासन को नष्ट करने की एक छोटी-सी चाल है। लेकिन विदेशी मोर्चे पर हिंसक सत्ता-प्रयोग अंततः अपने ही देश में दमन और लोकतांत्रिक क्षरण के रूप में लौट आता है। इसे इंपीरियल बूमरैंग कहा जाता है। जबकि 2015 में राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के रूप में अपने शुरुआती दिनों से ही ट्रम्प विदेशी उलझनों के विरोधी रहे हैं।

मादुरो जैसी ताकत चाहते हैं ट्रम्प

ट्रम्प उसी तरह की अप्रतिबंधित शक्ति चाहते हैं, जिसका आनंद मादुरो ने उठाया था- अपने परिवार और साथियों को समृद्ध करने के लिए, राजनीतिक विरोधियों को डराने के लिए, प्रेस की आवाज दबाने के लिए और अपने देश की सड़कों को अपने इशारों पर चलने वाले सशस्त्र लोगों से भरने के लिए। ट्रम्प इन सभी चीजों को कुछ हद तक करने में कामयाब रहे हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि उनका इरादा और भी आगे बढ़ने का है। आगे के उनके कदम डराने वाले हो सकते हैं।

ऑटोमोबाइल

यूएस में ईवी पर छूट बंद, ऑटो कंपनियों को घाटा

जैक इविंग

अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प के टैरिफ और ईवी नीतियों में बदलाव ने कई कार निर्माताओं को प्रभावित किया है। पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडेन ने इलेक्ट्रिक कारों की खरीद के लिए टैक्स में रियायतें दी थी। निर्माताओं को भी छूट दी गई थी। ट्रम्प ने सभी रियायतें और छूट बंद कर दी हैं। इससे इलेक्ट्रिक वाहनों में निवेश करने वाली अमेरिकी कंपनियों जनरल मोटर्स और फोर्ड को नुकसान उठाना पड़ा है। जनरल मोटर्स ने बताया कि 2025 की अंतिम तिमाही में उसका मुनाफा 64 हजार करोड़ रुपए कम हो जाएगा। इलेक्ट्रिक कारों पर इन्वेस्टमेंट बेकार जाने से ऐसा हो रहा है। फोर्ड का मुनाफा इलेक्ट्रिक वाहनों की वजह से 1.75 लाख करोड़ रुपए नीचे आ जाएगा। 7500 डॉलर की टैक्स छूट खत्म होने के कारण इलेक्ट्रिक कारें बेचना बहुत मुश्किल हो गया है। चीन, यूरोप और अन्य देशों में इलेक्ट्रिक वाहनों की बिक्री बढ़ी है। लेकिन अमेरिका में गिरावट चल रही है। अमेरिका में इलेक्ट्रिक की जगह पेट्रोल, गैस के वाहनों को बढ़ावा मिला है। टैरिफ के कारण जर्मन कंपनी फॉक्सवैगन के कारोबार पर काफी असर पड़ा है। 2025 के बीते तीन महीनों में अमेरिका में बिक्री में बीस फीसदी गिरावट आई है। फॉक्सवैगन अकेली जर्मन कंपनी नहीं है जिसे अमेरिका में मुश्किल हो रही है। मर्सिडीज बेंज की बिक्री पिछले साल 10% कम हुई है।

© The New York Times

संप्रभुता

नॉर्वे के स्वालबार्ड द्वीप पर रूस और चीन की नजर

जेफरी जेटलमैन, सारा हर्टस, लुईस क्रूगर

उत्तरी ध्रुव के पास स्थित स्वालबार्ड द्वीप समूह नॉर्वे का हिस्सा है, लेकिन 1920 की अंतरराष्ट्रीय संधि के तहत यहां दुनिया के कई देशों के लोग बिना वीसा रह काम कर सकते हैं और शोध कर सकते हैं। अब आर्कटिक क्षेत्र रणनीतिक रूप से अहम हो गया है। यहां दुर्लभ खनिज पाए जाते हैं, जो तकनीक और रक्षा उद्योग के लिए जरूरी हैं। इसी कारण नॉर्वे अब क्षेत्र पर अपनी संप्रभुता सख्ती से लागू कर रहा है। सरकार ने विदेशी नागरिकों के मतदान अधिकार सीमित कर दिए हैं, जमीन की बिक्री पर रोक लगा दी है और विदेशी शोध गतिविधियों पर निगरानी शुरू की है। नॉर्वे को सबसे ज्यादा चिंता रूस और चीन से है। रूसी नेताओं ने स्वालबार्ड पर दावे के संकेत दिए हैं, जिन्हें नॉर्वे यूक्रेन जैसी स्थिति से जोड़कर देख रहा है। वहीं चीन पर आरोप है कि वह वैज्ञानिक शोध की आड़ में रणनीतिक और सैन्य जानकारी जुटा सकता है। © The New York Times

बिजनेस — संपत्ति पर प्रस्तावित 5% कर के चलते अरबपति बना रहे हैं दूरी

गूगल के फाउंडर ब्रिन व पेज कैलिफोर्निया छोड़ रहे

रायन स्वीफर, हीथर नाइट

गूगल के फाउंडर सर्गेई ब्रिन व लैरी पेज कैलिफोर्निया व सिलिकॉन वैली से रिश्ते कम कर रहे हैं। प्रस्तावित भारी टैक्स के कारण उन्होंने कुछ कारोबार दूसरे राज्यों में शिफ्ट किया है। दिसंबर में ब्रिन से जुड़ी एक कंपनी ने उनके कुछ कारोबार देखने वाली 15 कंपनियों का काम राज्य से बाहर कर दिया है। ब्रिन की सात कंपनियों को नेवादा की कंपनियां बना दिया गया है। वहीं पेज से जुड़ी 45 कैलिफोर्निया लिमिटेड कंपनियां निष्क्रिय हो गई हैं या राज्य से बाहर चली गई हैं। पेज से जुड़े ट्रस्ट ने इस सप्ताह मियामी में 648 करोड़ रुपए में एक बंगला खरीदा है।

दरअसल हेल्थ केयर यूनियन द्वारा प्रस्तावित एक प्रावधान के तहत एक अरब डॉलर से अधिक संपदा वाले कैलिफोर्नियावासियों को संपत्ति के 5% के बराबर टैक्स एक बार देना होगा। इसके चलते अरबपति कैलिफोर्निया छोड़ रहे हैं। पिछले माह वेंचर कैपिटलिस्ट पीटर थिएल ने मियामी में इन्वेस्टमेंट फर्म खोलने का ऐलान किया है। टेक इन्वेस्टर डेविड सैक्स ने अपनी फर्म का नया ऑफिस ऑस्टिन, टेक्सास में खोला है। © The New York Times

46 लाख करोड़ रु. है दोनों की संपत्ति

ब्रिन और पेज की संपत्ति का कुल मूल्य 46 लाख करोड़ रुपए है। कैलिफोर्निया की पहचान बनाने में गूगल की खास भूमिका है। वहीं कैलिफोर्निया के गवर्नर गेविन न्यूसम का कहना है, इससे अरबपति कम टैक्स वाले राज्यों में चले जाएंगे। लिंक्डइन के को-फाउंडर रीड हॉफमैन का कहना है, यह आइडिया डरावना है। वहीं एनवीडिया के सीईओ जेनसेन हुआंग का कहना है, हमने सिलिकॉन वैली को चुना है। लिहाजा, जो टैक्स लगता है, ठीक है।

इमिग्रेंट्स — कई के प्रवेश और सहायता पर रोक

अफगानी शरणार्थियों से अमेरिका की सख्ती, बेवजह हिरासत में रखा जा रहा

एनवाईटी एडिटोरियल बोर्ड

अमेरिका में रह रहे अफगान शरणार्थियों ने तालिबान के खिलाफ लड़ाई में हमेशा अमेरिका का साथ दिया। इसलिए अमेरिका ने अफगान शरणार्थियों को हिंसा से बचाने के लिए ऑपरेशन एलाइज वेलकम और ऑपरेशन एंड्योरिंग वेलकम जैसे कार्यक्रम शुरू किए। इससे करीब 1.9 लाख शरणार्थियों को शरण दी गई।

लेकिन अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने इस नीति को पलट दिया। नवंबर में नेशनल गार्ड के जवानों पर हुई गोलीबारी की एक घटना को आधार बनाकर ट्रम्प प्रशासन ने अफगान शरणार्थियों पर सख्ती शुरू कर दी। कई अफगानों के प्रवेश पर रोक लगा दी, सहायता सेवाएं बंद कर दी गईं और कुछ लोगों को बिना आरोप हिरासत में रखा गया। यहां तक कि कानूनी रूप से आए शरणार्थियों को भी बाहर करने की धमकी दी गई।

यह रवैया अमानवीय है, क्योंकि किसी एक व्यक्ति के अपराध के लिए पूरे समुदाय को सजा नहीं दी जा सकती। आंकड़े बताते हैं कि शरणार्थी अपराध कम करते हैं। ट्रम्प के कदमों से दुनिया को संदेश जाता है कि अमेरिका संकट के समय साथ देने वालों को बाद में छोड़ देता है। ऐसे में भविष्य में कोई भी देश या व्यक्ति अमेरिका पर भरोसा करने से हिचकेगा।

अमेरिका का दायित्व है कि वह अपने अफगान सहयोगियों की सुरक्षा करे, न कि उन्हें उसी तालिबान के हवाले करे, जिससे बचाने का उसने वादा किया था। © The New York Times

भास्कर एनालिसिस सोना-चांदी की ऐतिहासिक दौड़ के बीच फंड हाउस ने निवेश दोगुना किया

स्वर्णिम निवेश... देश में गोल्ड-सिल्वर ईटीएफ का एयूएम 2 लाख करोड़ पार, 1 साल में 4 गुना

भास्कर न्यूज़ | मुंबई

ईरान में बढ़ते तनाव और टैरिफ वॉर ने फिर से सोने-चांदी की कीमतों को हवा दी है। ऐसे में म्यूचुअल फंड निवेशकों ने बीते माह सोने-चांदी में अपना निवेश दोगुना कर दिया है। सोने-चांदी की फंड श्रेणियों में कुल 15,600 करोड़ का निवेश किया, जो पिछले महीने के 5,896 करोड़ के मुकाबले दोगुना है। इतना नही नहीं, दिसंबर 2025 में सोने-चांदी के एक्सचेंज-ट्रेडेड फंड्स (ईटीएफ) की एयूएम 2 लाख करोड़ रुपए पार पहुंच गया। रिकॉर्ड निवेश और कीमती धातुओं की कीमतों में निरंतर तेजी के कारण 4 महीनों में यह संपत्ति दोगुनी हो गई है। एम्फी के डेटा के मुताबिक 2025 की शुरुआत में यह एयूएम 57,000 करोड़ था, जो सितंबर तक लगभग दोगुना होकर 1 लाख करोड़ पार कर गया था। चांदी ने 31 दिसंबर 2024 से अब तक 200% रिटर्न दिया है। इस दौरान सोने का रिटर्न करीब 84% रहा है।

भास्कर इनसाइट... इस हफ्ते ये 4 ट्रिगर सोने-चांदी के लिए निर्णायक

ब्लूमबर्ग कमोडिटी इंडेक्स पर 1 लाख करोड़ का बुलियन बेचने का दबाव

ब्लूमबर्ग कमोडिटी इंडेक्स की वार्षिक रिबैलेंसिंग 8 से 15 जनवरी 2026 के बीच होनी है। 2025 में सोने-चांदी में रिकॉर्ड तेजी रही, इसलिए इंडेक्स के नियमों (15% कैप) के तहत इनमें भारी वजन घटाया जाएगा। इससे बाजार में करीब $14 बिलियन की 'मैकेनिकल सेलिंग' आएगी, जो दाम में अल्पकालिक अस्थिरता पैदा कर सकती है।

फेड Vs ट्रम्पः इस हफ्ते यूएस महंगाई के आंकड़ों पर टिकी बाजार की दिशा

इसी हफ्ते अमेरिकी महंगाई के नए डेटा आने वाले हैं। यह डेटा अमेरिकी फेडरल रिजर्व के अगले कदम को तय करेंगे। निवेशक यह देख रहे हैं कि क्या ब्याज दरों में कटौती की उम्मीदें बरकरार रहेंगी। फेड अध्यक्ष जेरोम पॉवेल और ब्याद दरों में कटौती के पक्षधर ट्रम्प प्रशासन के बीच बढ़ते तनाव को देखते हुए, ये आंकड़े बाजार की दिशा बदलने की ताकत रखते हैं।

15 जनवरी; ट्रम्प के 500% टैरिफ पर अमेरिकी कोर्ट सुनाएगा फैसला

15 जनवरी का दिन वैश्विक व्यापार के लिए निर्णायक है क्योंकि ट्रम्प प्रशासन द्वारा ब्रिक्स देशों पर रूसी तेल आयात के लिए लगाए गए टैरिफ पर अमेरिकी कोर्ट का फैसला आएगा। तय होगा ग्लोबल ट्रेड वॉर थमेगा या बढ़ेगा। यदि कोर्ट टैरिफ के पक्ष में फैसला देता है, तो डॉलर मजबूत होगा। सोने-चांदी में निवेश की सुरक्षित मांग बढ़ सकती है।

ईरान Vs रिबैलेंसिंगः क्या वैश्विक निवेशक 'कॉपर' में निवेश बढ़ाएंगे?

ईरान में बढ़ते तनाव और अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर हमले की धमकियों ने बाजार में डर का माहौल बना दिया है। इस हफ्ते यह साफ होगा कि निवेशक अपना पैसा सोने-चांदी में बनाए रखते हैं या रिबैलेंसिंग के चलते फंड्स 'हाइ-बीटा' कमोडिटीज जैसे कॉपर और कोको की तरफ रोटेट होते हैं। कॉपर में 1 बिलियन डॉलर के संभावित इनफ्लो पर बाजार की नजर रहेगी।

भास्कर एक्सपर्ट अजय केडिया, डायरेक्टर केडिया एडवाइजरी, रितेशकुमार साहू, कोटक सिक्युरिटीज

रिकॉर्ड निवेशकः 1 साल में सिल्वर ईटीएफ के ग्राहक 4 गुना बढ़े

- सोने और चांदी के ईटीएफ में बढ़ती रुचि का अंदाजा नए खातों से लगाया जा सकता है। 2025 के पहले 11 महीनों में गोल्ड ईटीएफ के फोलियो में 53% की वृद्धि हुई, जबकि सिल्वर ईटीएफ खातों में 4 गुना की भारी बढ़ोतरी दर्ज की गई।
- गोल्ड ईटीएफ में दिसंबर में 11,647 करोड़ का निवेश देखा गया, जो नवंबर में 3,742 करोड़ था, जो किसी एक महीने में अब तक का सबसे अधिक निवेश है। इसके साथ ही साल 2025 में गोल्ड ईटीएफ में कुल शुद्ध निवेश 43 हजार करोड़ तक पहुंच गया।
- सिल्वर ईटीएफ में निवेश इस दौरान 2,154 करोड़ से दोगुना होकर करीब 4,700 करोड़ हो गया। साल 2025 में चांदी के ईटीएफ में कुल 24,200 करोड़ का निवेश आया।

नतीजे • ऑर्डर बुक 84,000 करोड़ की, मार्जिन 25% से ऊपर

टीसीएस का मुनाफा 14% घटा, पर एआई सर्विस से आय में 17% उछाल

शेयरधारकों के लिए 57 रुपए प्रति शेयर डिविडेंड

भास्कर न्यूज़ | मुंबई

देश की सबसे बड़ी आईटी कंपनी टीसीएस का मुनाफा अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में 14% घट गया। फिर भी बीएसई पर टीसीएस के शेयर 1% तेजी के साथ 3,236 रुपए पर बंद हुए। दरअसल बीती तिमाही कंपनी की आय करीब 5% बढ़ी है और भविष्य में सबसे तेज ग्रोथ वाले बिजनेस एआई सर्विसेज से आमदनी में 17% से ज्यादा उछाल आया। कंपनी ने शेयरधारकों को 57 रुपए प्रति शेयर डिविडेंड देने की घोषणा की है। इसके लिए रिकॉर्ड डेट 17 जनवरी 2026 तय की गई है।

ऐसे समझें कि कैसे रहे अक्टूबर-दिसंबर के नतीजे...

आय 5% बढ़ीः टीसीएस को बीती तिमाही ऑपरेशंस से 67,087 करोड़ की आय हुई। यह अक्टूबर-दिसंबर 2024 में हुई 63,973 करोड़ की आय से करीब 5% ज्यादा है। आय में जुलाई-सितंबर तिमाही के मुकाबले भी 0.8% बढ़ी है।

मार्जिन बढ़ाः बीती तिमाही टीसीएस का ऑपरेटिंग मार्जिन 0.7% बढ़कर 25.2% पर पहुंचा। ये दिखाता है कि कंपनी का कोर बिजनेस मजबूत है।

पर मुनाफा 14% घटाः दिसंबर तिमाही में टीसीएस को 10,657 करोड़ रु. का मुनाफा हुआ। यह पिछले साल से 14% कम है।

ये अच्छा... एआई सर्विसेज से ₹16,236 करोड़ आय

टीसीएस के नतीजों में सबसे अच्छी बात ये रही कि बीती तिमाही एआई सर्विसेज से कंपनी की आय 17.3% बढ़कर 16,236 करोड़ रुपए हो गई। कंपनी के सीईओ के. कृतिवासन ने कहा, 'हम एआई-आधारित टेक्नोलॉजी सर्विसेज की दुनिया की सबसे बड़ी कंपनी बनने की महत्वाकांक्षा पर अडिग हैं।' बीती तिमाही कंपनी ने हाइपर वॉल्ट, गूगल क्लाउड, एबीबी और अविवा जैसी कंपनियों के साथ पार्टनरशिप भी की है।

कर्मियों, कानूनी लड़ाई पर 3,138 करोड़ अतिरिक्त खर्च का असर

भास्कर एक्सपर्ट

अंशुल जेठी
आईटी सर्विसेज एनालिस्ट, एलकेपी सिक्युरिटीज

▪ आय और मार्जिन बढ़ने के बावजूद मुनाफा क्यों घटा?
आय बढ़ने के बावजूद मुनाफा घटने के मोटे तौर पर दो बड़े कारण रहेः **1. लेबर कोड का असरः** देश में नए लेबर कोड्स लागू होने से कर्मचारियों पर टीसीएस का कुल खर्च 2,128 करोड़ रुपए बढ़ गया। **2. कानूनी सेटलमेंटः** अमेरिका में कम्प्यूटर साइंस कॉर्पोरेशन के खिलाफ एक पुराना कानूनी दावा निपटाने के लिए 1,010 करोड़ रुपए खर्च करने पड़े। यदि 3,138 करोड़ रुपए के ये दो अतिरिक्त खर्च नहीं बढ़े होते तो बीती तिमाही टीसीएस का मुनाफा 13,438 करोड़ रुपए रहा होता, जो एक साल पहले की तुलना में 8.5% ज्यादा है।

मार्च तिमाही में भी आय तेजी से बढ़ने की उम्मीद कम

जनवरी-मार्च तिमाही में टीसीएस के मुनाफे में बढ़ोतरी की उम्मीद कम है, पर घटने की भी आशंका नहीं है क्योंकि ऑर्डर बुक मजबूत बनी हुई है। दरअसल अमेरिकी कंपनियों से ऑर्डर बढ़ने की उम्मीद कम है, जहां से टीसीएस को करीब 60% आय होती है। टैरिफ बढ़ने से अमेरिकी कंपनियों का खर्च बढ़ा है।

बिजनेस ब्रीफ

बीएसई के सीईओ का वायरल वीडियो डीपफेक

मुंबई | बीएसई सीईओ सुंदरारमन राममूर्ति का सोशल मीडिया और मैसेजिंग प्लेटफॉर्म पर एक वीडियो प्रसारित हो रहा है, इसमें सीईओ शेयर खरीदने की सिफारिश करते दिख रहे हैं। बीएसई ने सोमवार को इसे फर्जी और भ्रामक बताते हुए कहा कि यह एक डीपफेक वीडियो है। इस वीडियो को हटाने के लिए बीएसई जरुरी कदम उठा रहा है।

एसबीआई ने एटीएम से निकासी शुल्क बढ़ाया

नई दिल्ली | एसबीआई ने एटीएम लेनदेन पर लागू शुल्क बढ़ाए हैं। अब एसबीआई खाताधारकों को अन्य बैंकों के एटीएम से मुफ्त लेनदेन की सीमा खत्म होने के बाद हर निकासी पर 23 रुपए और जीएसटी देना होगा। ये पहले 21 रुपए प्लस जीएसटी था। बैलेंस पूछताछ और मिनी स्टेटमेंट के लिए 10 और जीएसटी से बढ़ाकर 11 रुपए और जीएसटी देना होगा।

अल्फाबेट सबसे मूल्यवान कंपनी, एपल को पछाड़ा

न्यूयॉर्क | गूगल की पैरेंट कंपनी अल्फाबेट का वैल्युएशन 4 ट्रिलियन डॉलर (360 लाख करोड़ रुपए) पहुंच गया। कंपनी ने 2019 के बाद पहली बार मार्केट कैप में एपल को पीछे छोड़ दिया है। यह दुनिया की दूसरी सबसे मूल्यवान कंपनी बन गई है। एआई पर फोकस बढ़ाने से कंपनी का फायदा हुआ है। 2025 में शेयर 65% चढ़े।

पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन जुटाएगी 5 हजार करोड़

नई दिल्ली | पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन नॉन कन्वर्टिबल डिबेंचर (एनसीडी) के जरिये 5,000 करोड़ रुपए जुटाने जा रही है। इसमें आधार राशि 500 करोड़ और 4,500 करोड़ रुपए तक का ग्रीन शू विकल्प शामिल है। इश्यू 16 जनवरी को खुलेगा और 30 जनवरी को बंद होगा। 23 दिसंबर, 2025 को, पीएफसी ने 6,000 करोड़ के बॉन्ड जारी करने की प्रक्रिया वापस ले ली थी।

सेविंग • बचत-लोन अनुपात 82% होने का क्या मतलब है?

परिवारों की बचत बैंकों से निकलकर शेयर जैसे निवेश में जा रहीः एसबीआई

भास्कर न्यूज़ | मुंबई

भारतीय परिवार अब बच्चों की पढ़ाई, शादी, घर-कार और दूसरी जरूरतों के लिए केवल बचत पर निर्भर नहीं हैं। वे धीरे-धीरे निवेश की ओर बढ़ रहे हैं। एसबीआई की एक रिपोर्ट के मुताबिक, परिवारों की बचत का बड़ा हिस्सा अब बैंक डिपॉजिट से निकलकर शेयर बाजार जैसे कैपिटल मार्केट में जा रहा है। इस बदलाव का संकेत लोन-जमा (सीडी) अनुपात के बढ़ते आंकड़ों से मिलता है।

2000-01 में सीडी अनुपात 53% था, जो 15 दिसंबर 2025 तक 82% हो गया। गुजरात, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक जैसे राज्यों में यह बदलाव ज्यादा तेज है। रिपोर्ट के अनुसार, सीडी अनुपात बढ़ने का मतलब है कि लोग बैंक में पैसा जमा करने के बजाय शेयर बाजार या अन्य निवेश विकल्पों में लगा रहे हैं। इसका असर यह है कि बैंक डिपॉजिट की रफ्तार धीमी पड़ती है, लेकिन अर्थव्यवस्था में लोन की मांग बनी रहती है।

10 साल में बैंक जमा और कर्ज, दोनों तीन गुना हो गए

रिपोर्ट के मुताबिक, वित्त वर्ष 2015 से 2025 के बीच बैंक जमा और बैंक कर्ज में करीब तीन गुना बढ़ोतरी हुई है। बीते 10 साल में बैंक जमा 85.3 लाख करोड़ रुपए से बढ़कर 241.5 लाख करोड़ रुपए हो गए। इसी अवधि में लोन भी 67.4 लाख करोड़ से बढ़कर 191.2 लाख करोड़ रुपए तक पहुंच गया। लोन की बढ़ोतरी जमा के मुकाबले तेज रही।

इसी वजह से सीडी अनुपात 2021 के 69% से बढ़कर 2025 में 79% हो गया। कई बार यह अनुपात 100% से भी ऊपर चला गया, जो कर्ज की बढ़ती मांग और जमा की कमी का साफ संकेत देता है।

बैंकों की संपत्ति जीडीपी के 94% के बराबर पहुंची

- बीते 10 साल में बैंकों की कुल संपत्ति जीडीपी के 77% से बढ़कर 94% तक पहुंच गई है, हालांकि क्षेत्रीय असमानता अब भी बनी हुई है।
- दक्षिण, पश्चिम और उत्तर भारत के राज्यों में बैंक लोन और जमा का अनुपात ज्यादा है, जबकि पूर्व और उत्तर-पूर्व के राज्यों में यह कम है।
- ओडिशा, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल में लोन-जमा अनुपात 52% से नीचे है, जबकि गुजरात और कर्नाटक में यह 82% तक पहुंच गया है।
- पिछले एक दशक में बैंकों के कुल लोन में पर्सनल लोन जैसे असुरक्षित कर्ज की हिस्सेदारी 17.7% से बढ़कर 24.5% हो गई है। इससे रिस्क बढ़ा है।

फिलहाल मौसम भी अनुकूल

रबी में बंपर उत्पादन की उम्मीद, रकबा 3% बढ़ा

भास्कर न्यूज़ | नई दिल्ली

चना, गेहूं जैसी रबी फसलों का उत्पादन इस साल बढ़ सकता है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, 9 जनवरी तक 6.44 करोड़ हेक्टेयर में रबी फसलों की बुवाई की गई। ये पिछले साल की इसी अवधि में इन फसलों के रकबे से 2.81% अधिक और सामान्य रकबे का 101% है। सामान्य रकबा पिछले पांच के औसत आंकड़े को कहते हैं। लगभग सभी प्रमुख रबी फसलों का रकबा पिछले साल से अधिक है। गेहूं, दलहन और चने की खेती 2024-25 के पूरे रबी सीजन से भी अधिक हो गई है। अगर आगामी कुछ हफ्तों में मौसम अनुकूल बना रहता है तो उत्पादन बंपर होने की उम्मीद है। शीत लहर और हल्की ठंड आमतौर पर रबी फसलों के शुरुआती चरण के लिए अनुकूल मानी जाती है। उत्तर भारत के कई हिस्सों में भीषण शीत लहर चल रही है। इससे प्रमुख शहरों और कस्बों में तापमान सामान्य से नीचे गिर गया है। मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार 2-3 दिनों तक राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में शीत लहर चल सकती है।

राहत • रिटेल महंगाई 2%से कम रहने के आसारः बैंक ऑफ बड़ौदा

सब्जी, अनाज जैसी जरूरी चीजों के दाम लगातार 8 महीने से घट रहे हैंः रिपोर्ट

बिजनेस संवाददाता | नई दिल्ली

रिटेल महंगाई दिसंबर में लगातार तीसरे महीने आरबीआई के टारगेट के निचले स्तर 2% से कम रही। सब्जियों, दालों और मसालों की कीमतें घटना इसकी सबसे बड़ी वजह रही। बैंक ऑफ बड़ौदा की एक रिपोर्ट के मुताबिक, महंगाई आगे भी 2% से कम ही रहने की उम्मीद है। रिपोर्ट के मुताबिक जरूरी वस्तुओं की रिटेल कीमतों में दिसंबर 2025 में लगातार आठवें महीने गिरावट आई। टमाटर के भाव 66% बढ़े, लेकिन प्याज और आलू की कीमतें क्रमशः 44.6% और 29.9% कम हो गईं। दालें, तेल और अनाज भी सस्ते हुए। इसके चलते बैंक ऑफ बड़ौदा का एसेंशियल कमोडिटी इंडेक्स (बॉब ईसीआई) दिसंबर में 3% घटा। जनवरी 2026 के पहले आठ दिनों में भी कीमतों में करीब 1% गिरावट बनी रही।

आलू-प्याज-टमाटर (टॉप) की कीमत 24.7% घटी

कमोडिटी	अगस्त25	दिसं.25	जन.26
आलू	▲1.0%	▼29.9%	▼20.9%
प्याज	▲0.6%	▲44.6%	▼26.9%
चावल	▼2.3%	▼0.7%	▼0.1%
आटा	▲2.6%	▼0.8%	▼1.5%
तुअर दाल	▲0.8%	▼27.2%	▲24.4%
नमक पैकेट	▲0.2%	▼2.7%	▼1.8%
मूंगफली तेल	▲0.3%	▼3.2%	▼2.5%

(आंकड़े कीमतों में सालाना अंतर के, स्रोत बैंक ऑफ बड़ौदा)
(जनवरी26 के आंकड़े शुरुआती 8 दिन के)

आगामी महीनों में टमाटर की आपूर्ति भी बढ़ेगी :दिसंबर 2025 में टमाटर की मंडी आवक में भी कमी देखी गई। लेकिन जनवरी-मार्च तिमाही अधिकांश टमाटर, प्याज और आलू जैसी सब्जियों की कटाई का समय है। इसलिए आपूर्ति की स्थिति अनुकूल रहने की संभावना है।

उम्मीदः अगली दो तिमाहियों में भी महंगाई कम रहेगी

रबी की अच्छी फसल की संभावनाओं, जीएसटी की दरें घटने और आरबीआई द्वारा नीतिगत दरों में कटौती के कारण अनुमान है कि अगले दो तिमाहियों में भी देश में महंगाई नियंत्रण में रहेगी।
- डॉ. रंजीत मेहता, सीईओ और महासचिव, पीएचडी चेम्बर ऑफ कॉमर्स

डील • गूगल की तकनीक अब एपल में

गूगल और एपल में जेमिनी मॉडल के लिए समझौता

भास्कर न्यूज़ | न्यूयॉर्क

अभी तक एपल के वर्चुअल असिस्टेंट सिरी को बाकी सभी के मुकाबले काफी कमजोर माना जाता था। लेकिन अब एपल ने सिरी को गूगल जैमिनी की शक्तियों से लैस करने की योजना बनाई है। गूगल की पैरेंट कंपनी अल्फाबेट ने सोमवार को कहा कि उसने एपल के साथ एक बहु-वर्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। एपल के सिरी और इस साल के अंत में लॉन्च होने वाले अन्य एआई-आधारित अगली पीढ़ी के एआई मॉडल गूगल की जेमिनी तकनीक का उपयोग करके बनाए जाएंगे। माना जा रहा है कि ये डील करीब 1 बिलियन डॉलर (करीब 9 हजार करोड़ रु.) में हो रही है।

मार्च मे हो सकता है अपडेट : एपल सिरी एआई अपग्रेड को काफी समय से टाल रहा है। कंपनी के मुताबिक वादा किए गए फीचर्स को देने में ज्यादा समय लगेगा। हालांकि एक्सपर्ट्स के मुताबिक मार्च 2026 में सिरी को नया अपडेट देने के साथ एपल स्मार्ट होम डिस्प्ले प्रोडक्ट भी लॉन्च कर सकता है।

टैक्स • कॉर्पोरेट टैक्स में भी 12% उछाल

प्रत्यक्ष कर संग्रह 8 फीसदी बढ़कर 18.37 लाख करोड़

बिजनेस संवाददाता | नई दिल्ली

चालू वित्त वर्ष में 11 जनवरी 2026 तक देश में शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह 18.37 लाख करोड़ रुपए रहा। इसमें वार्षिक आधार पर 8.8% की वृद्धि हुई है, हालांकि ये बजट में किए गए अनुमान से कम है। वित्त वर्ष 2026 के केंद्रीय बजट में प्रत्यक्ष कर संग्रह में सालाना आधार पर 16.1% की वृद्धि का अनुमान लगाया गया था। आयकर विभाग के आंकड़ों के अनुसार, 11 जनवरी तक कॉर्पोरेट कर संग्रह 8.63 लाख करोड़ रुपए रहा, जो पिछले वर्ष की तुलना में 12.41% अधिक है। वहीं, गैर-कॉर्पोरेट कर संग्रह (जिसमें व्यक्तिगत आयकर शामिल हैं) 9.29 लाख करोड़ रुपए रहा। यह भी पिछले वर्ष की तुलना में 6.39% अधिक रहा। इसी अवधि में सरकार ने 3.11 लाख करोड़ रुपये का रिफंड जारी किया, जो पिछले साल की तुलना में 16.99% कम है। कुल प्रत्यक्ष कर संग्रह पिछले वर्ष की तुलना में 4.14% अधिक लगभग 21.49 लाख करोड़ रुपए रहा।

शेयर बाजार • पांच दिन की गिरावट थमी

ट्रेड डील की उम्मीद में सेंसेक्स निचले स्तर से हजार अंक चढ़ा

बिजनेस संवाददाता | मुंबई

अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर के इस बयान के बाद कि नई दिल्ली और वाशिंगटन दोनों व्यापार समझौते को अंतिम रूप देने में सक्रिय रूप से लगे हुए हैं, सोमवार को सेंसेक्स और निफ्टी में तेजी से उछाल आया। ऊर्जा, बैंकिंग और धातु क्षेत्रों के शेयरों में खरीदारी से भी बाजार के माहौल को मजबूती मिली। सेंसेक्स 301.93 अंक चढ़कर 83,878.17 पर बंद हुआ। सुबह के कारोबार के दौरान, यह 715.17 अंक गिरकर 82,861.07 पर आ गया था और अंत में दिन के निचले स्तर से 1,017 अंक सुधरकर बंद हुआ। निफ्टी में 106.95 अंकों की बढ़त दर्ज की गई और यह 25,790.25 पर पहुंच गया। पिछले पांच कारोबारी सत्रों में भारी गिरावट झेलने के बाद ये सूचकांक ऊंचे स्तर पर बंद हुए। धातु सूचकांक में 2% की वृद्धि हुई, सरकारी बैंकों के सूचकांक में 0.7% की वृद्धि हुई, एफएमसीजी सूचकांक में 0.6% की बढ़त दर्ज की गई।

निर्यात • चार साल में 23 गुना बढ़ा आईफोन

एपल ने भारत से 2 लाख करोड़ रुपए के आईफोन निर्यात किए

सुरजीत दास गुप्ता | नई दिल्ली

एपल ने बीते साल भारत से रिकॉर्ड 2.03 लाख करोड़ रुपए के आईफोन निर्यात किए। यह 2024 की तुलना में करीब 85% ज्यादा है। भारत से पहली बार आईफोन का निर्यात 2 लाख करोड़ रुपए से ऊपर निकला है। असल में एपल का ध्यान उत्पादन से जुड़ी भारत की सरकारी प्रोत्साहन योजना (पीएलआई) के तहत आईफोन का निर्यात बढ़ाने पर रहा। इसके चलते सिर्फ 4 साल में निर्यात 23 गुना बढ़ गया। 2021 में अमेरिकी कंपनी ने भारत से सिर्फ 8,800 करोड़ रुपए के आईफोन निर्यात किए थे। 2020 में आई पीएलआई स्कीम के बाद एपल दो वेंडरों-विस्ट्रॉन और फॉक्सकॉन के साथ भारत आई। भारत में 2021 से आईफोन उत्पादन शुरू हुआ।

तेज ग्रोथः 2023 से हर साल दोगुने आईफोन निर्यात

साल	निर्यात
2021	8,800
2022	36,234
2023	74,000
2024	1,10,000
2025	2,03,000

(निर्यात के सरकारी आंकड़े)

बिजनेस एंकर अमेरिकी अरबपति मार्क लोर का स्टार्टअप वंडर फूंड इंडस्ट्री को बदलने जा रहा है

रोबोटिक किचन और डिजिटल शेफ की जुगलबंदीः वंडर ने बदली फूड डिलीवरी की परिभाषा, घर बैठे मिलेगा मशहूर शेफ के हाथों जैसा खाना

भास्कर न्यूज़ | न्यूयॉर्क

कल्पना कीजिए कि आप घर में हैं और आपका मन न्यूयॉर्क के किसी मिशलिन-स्टार रेस्टोरेंट का 'सिग्नेचर बिरयानी' खाने का है। आप ऑर्डर करते हैं। हजारों किमी दूर होने के बावजूद ठीक 15 मिनट बाद आपके दरवाजे पर आपका पसंदीदा डिश हाजिर है। ई-कॉमर्स की दुनिया के दिग्गज और जेट.कॉम के संस्थापक मार्क लोर अपने नए स्टार्टअप वंडर के साथ भोजन की दुनिया को इसी तरह बदलने जा रहे हैं। उन्होंने खाने को केवल एक डिश नहीं, बल्कि एक 'सॉफ्टवेयर सर्विस' बना दिया है। वंडर की तकनीक काफी एडवांस है। सबसे पहले, वंडर दुनिया के मशहूर शेफ (जैसे बॉबी फ्ले या जोस एंड्रेस) के साथ साझेदारी करता है। वह शेफ अपनी सीक्रेट रेसिपी वंडर के इंजीनियरों से शेयर करते हैं। इंजीनियर उस रेसिपी को एल्गोरिदम में बदल देते हैं। वे यह नोट करते हैं कि शेफ ने डिश को कितने डिग्री तापमान पर पकाया, कितनी बार पलटा और मसालों का मिश्रण कब किया। इसे 'डिजिटल ट्विन' कहा जाता है। वंडर के किचन में 'स्मार्ट ओवन' और 'रोबोटिक आर्म्स' होते हैं जो सॉफ्टवेयर से जुड़े होते हैं। जैसे ही आप ऑर्डर करते हैं, सॉफ्टवेयर ओवन को बताता है कि उसे किस सेकंड पर कितना गर्म होना है। यह तकनीक इतनी सटीक है कि हर बार खाना एक जैसा बनता है। यह सिस्टम शहर भर के डेटा को ट्रैक करता है। इसे पता होता है कि किस इलाके में किस समय पनीर टिक्का की मांग ज्यादा होगी। इनका लक्ष्य 'किचन से दरवाजे तक' का सफर महज 15 मिनट में पूरा करना है, ताकि खाना अपनी ताजगी न खोए। मार्क लोर खाने को भी लॉजिस्टिक सोच के साथ बनाना और भेजना चाहते है। वे कहते हैं, 'अमेजन का तरीका हैः चुनना, पैक करना, भेजना। हमारा तरीका हैः चुनना, पकाना, पैक करना, भेजना। यह ई-कॉमर्स के बहुत समान है, बस हमारे पास एक अतिरिक्त चरण है जिससे 10% का मार्जिन जुड़ जाता है।'

एक स्मार्ट किचन एक घंटे में 500 कटोरे भोजन बना सकती है

यह एक 'कन्वेयर बेल्ट' सिस्टम है, जहां खाली कटोरे बेल्ट पर आगे बढ़ते हैं और अंत तक खाना पैक होकर निकलता है। बेल्ट पर चलते कटोरों में ऊपर लगी ट्यूब्स से सब्जी, चावल और अन्य सामग्री तय मात्रा में अपने-आप गिरती जाती है। सिस्टम को हर ऑर्डर के हिसाब से पता होता है कि किस कटोरे में कितना मसाला या सॉस डालना है। सामग्री खत्म होने पर मशीन तुरंत कर्मचारियों को सिग्नल भेजती है ताकि उसे समय पर दोबारा भरा जा सके। यह तकनीकि एक घंटे में 500 कटोरे तक भोजन तैयार कर सकती है।

बेवरेज कंपनियों को हो रही केन की कमी

भास्कर न्यूज़ | नई दिल्ली

भारत में कोल्ड ड्रिंक और बेवरेज बनाने वाली कंपनियों को एल्युमिनियम केन की भारी कमी का सामना करना पड़ रहा है। घरेलू उत्पादन में रुकावट और बीआईएस सर्टिफिकेशन में देरी इसकी वजह बताई जा रही है। कंपनियां अब पहले के मुकाबले दो गुना तक केन आयात करने को मजबूर हैं, ताकि गर्मी के सीजन की मांग पूरी की जा सके। कोका-कोला, पेप्सिको, किंगफिशर और अन्य बड़ी कंपनियां अब पश्चिम एशिया और श्रीलंका से केन मंगा रही हैं। कंपनियां अमेरिका, पोलैंड, थाईलैंड और इंडोनेशिया जैसे देशों से भी आयात बढ़ा रही हैं। अप्रैल से लागू हुए बीआईएस के नए गुणवत्ता नियमों के तहत केन की सामग्री, कोटिंग और निर्माण प्रक्रिया पर सख्त शर्तें लगाई गई हैं।

रफ्तार कम • 2023 में 1074 करोड़ जुटाए थे

प्री-आईपीओ फंडिंगः 2025 में कंपनियों ने जुटाए 916 करोड़

सुंदर सेतुरमन | मुंबई |

2025 में आईपीओ से पहले होने वाली फंडिंग, यानी प्री-आईपीओ, में सुधार दिखा, लेकिन गति सीमित रही। बीते साल 11 कंपनियों ने प्री-आईपीओ प्लेसमेंट के जरिए 916 करोड़ रुपए जुटाए। यह 2024 में 8 कंपनियों द्वारा जुटाए गए 387 करोड़ रुपए का दोगुना है। फिर भी यह 2023 के रिकॉर्ड स्तर तक नहीं पहुंच सका, जब 13 कंपनियों ने 1,074 करोड़ जुटाए थे। हालांकि वैल्यूएशन को लेकर बढ़ी सतर्कता के कारण कई कंपनियां अब प्री-आईपीओ प्लेसमेंट को छोड़ रही हैं। कंपनियां हिस्सेदारी कम करने के बजाय लिस्टिंग के बाद ब्लॉक डील को प्राथमिकता दे रही हैं। पैंटोमैथ कैपिटल के चेयरमैन और एमडी महावीर लूणावत के अनुसार, लेट-स्टेज प्री-आईपीओ में मिलने वाला लाभ लगातार कम होता जा रहा है।

आईपीओ का आकार और वैल्यू घटने की चिंता

इक्विरस के एमडी भावेश ए. शाह के मुताबिक प्री-आईपीओ और आईपीओ कीमतों के बीच का अंतर कम होने से इस तरह की डील्स की संख्या और वैल्यू दोनों पर दबाव है। 2025 में बड़ी संख्या में आईपीओ का आकार 500 करोड़ रुपए से कम रहा।

प्रवाह

77 साल बेमिसाल
निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना : 18 अप्रैल 1948 • आगरा

राजनीति अपने आसपास के माहौल को नियंत्रित करने की शानदार कला है। -हंटर एस थॉम्पसन

इंस्टाग्राम एक बड़े डाटा लीक के केंद्र में है। साइबर सुरक्षा फर्म की रिपोर्ट के अनुसार, पौने दो करोड़ उपयोगकर्ताओं की निजी जानकारियां खतरे में हैं। यह स्थिति डिजिटल सुरक्षा और निजता को लेकर एक बार फिर गंभीर सवाल खड़े कर रही है।

डाटा, डाका और सवाल

दुनिया भर में 1.75 करोड़ इंस्टाग्राम खातों से जुड़े डाटा के कथित लीक की खबर ने डिजिटल सुरक्षा और निजता को लेकर एक बार फिर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। दरअसल हुआ यों कि पिछले सप्ताह, कई इंस्टाग्राम उपयोगकर्ताओं को अप्रत्याशित ढंग से पासवर्ड को रीसेट करने संबंधी मेल प्राप्त हुई, जिससे व्यापक भ्रम, घबराहट और आशंकाओं का माहौल फैला। सुरक्षा फर्म मालवेयर बाइट्स ने इस गतिविधि को करोड़ों इंस्टाग्राम खातों से जुड़े डाटा के लीक होने से जोड़ा है। फर्म के अनुसार, यूजरनेम, ईमेल पते, फोन नंबर और यहां तक कि आंशिक भौतिक पते जैसी संवेदनशील जानकारियां भी डार्क वेब पर लीक हुई हैं, जो एक खतरनाक स्थिति है। इंस्टाग्राम की मूल कंपनी मेटा ने इस पूरे मामले पर शुरुआत में जिस तरह से खामोशी साध रखी थी, वह भी कोई कम चौंकाने वाली नहीं थी। मीडिया और साइबर विशेषज्ञों का दबाव बढ़ने पर इंस्टाग्राम की तरफ से इसे एक तकनीकी समस्या बताया गया, जिसे जल्द ही ठीक भी कर दिया गया। उपयोग करने वालों का भरोसा कमजोर होने पर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म की विश्वसनीयता पर सवाल उठने स्वाभाविक हैं। तब तो और भी, जब यह कोई पहली बार नहीं है कि किसी बड़े सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को डाटा सुरक्षा के मोर्चे पर कठघरे में खड़ा होना पड़ा हो। पिछले वर्ष जून में एपल, फेसबुक और गूगल समेत कई अन्य कंपनियों के 16 अरब पासवर्ड और लॉग-इन संबंधी जानकारियां लीक होने की खबर मिली थी, जिसे डाटाबेस इतिहास का अब तक का सबसे बड़ा लीक माना जा रहा था। इससे पहले, 2021 में फेसबुक ने करोड़ों उपयोगकर्ताओं के डाटा लीक की सूचना दी थी। इस तरह के मामले सामने आते रहे हैं, लेकिन इससे डिजिटल दुनिया पर हमारी निर्भरता एक कतरा भी कम नहीं हुई है। हाल ही में, भारत में लागू हुए डिजिटल व्यक्तिगत डाटा संरक्षण (डीपीडीपी) अधिनियम, 2023 का जिक्र उल्लेखनीय है, लेकिन भारतीय कानून हो या यूरोपीय संघ का डाटा संरक्षण कानून जीडीपीआर, ये तभी कारगर हो सकते हैं, जब इन प्लेटफॉर्मों को एहसास हो कि लापरवाही की कीमत चुकानी होगी। दरअसल, ऐसी घटनाएं याद दिलाती हैं कि डिजिटल दुनिया में गोपनीयता कोई स्वाभाविक अधिकार नहीं रह गया है। हम जितनी आसानी से तस्वीरें, स्टोरी और रील्स साझा करते हैं, उतनी ही आसानी से हमारी इन जानकारियों का दुरुपयोग भी हो सकता है। गनीमत है कि मालवेयर बाइट्स की रिपोर्ट के अनुसार, ताजा लीक में पासवर्ड शामिल नहीं हैं, पर यह छिपा नहीं कि साइबर अपराधी केवल पासवर्ड ही नहीं, बल्कि हमारे संपर्क विवरण, स्थान और पहचान के टुकड़ों को जोड़कर हमला करते हैं। लिहाजा, पहली जरूरत तो उपयोगकर्ताओं के सतर्क रहने की ही है।

तमिलनाडु की राजनीति में दिलचस्प मोड़

करूर भगदड़ की सीबीआई जांच एवं *जन नायकन* फिल्म की रिलीज पर रोक लगने से अभिनेता से नेता बने विजय की तमिलनाडु का मुख्यमंत्री बनने की महत्वाकांक्षा को झटका लगा है। अब देखना यह है कि आगामी विधानसभा चुनाव पर इसका क्या असर पड़ता है।

अभिनेता से नेता बने विजय की सुपरस्टार लीड के तौर पर आखिरी फिल्म *जन नायकन* या *जननायक* तमिलनाडु विधानसभा चुनावों से ठीक तीन महीने पहले एक गंभीर कानूनी पचड़े में फंस गई है। मद्रास हाईकोर्ट ने इस मामले की अगली सुनवाई 21 जनवरी को तय की है। तब तक फिल्म रिलीज नहीं हो सकती। इससे प्रोड्यूसर्स को भारी नुकसान हुआ है। अभिनय और राजनीति, दोनों के लिहाज से विजय के लिए यह एक बड़ा झटका है। तमिलनाडु का मुख्यमंत्री बनने की महत्वाकांक्षा के साथ चुनावी राजनीति में यह उनकी पहली गंभीर कोशिश है। अब इस मामले ने राजनीतिक रंग ले लिया है और यह एक कानूनी लड़ाई में बदल गई है।

आर राजगोपालन
वरिष्ठ पत्रकार

एक अन्य तमिल फिल्म *पराशक्ति* को सेंसर सर्टिफिकेट मिलने के तुरंत बाद द्रमुक ने *जन नायकन* को रोके रखने के लिए केंद्र सरकार पर हमला करना शुरू कर दिया। मुख्यमंत्री एम के स्टालिन ने भाजपा और केंद्र सरकार पर सेंसर बोर्ड को 'राजनीतिक हथियार' बनाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि सेंसर बोर्ड सीबीआई, प्रवर्तन निदेशालय और आयकर विभाग जैसी केंद्रीय एजेंसियों की तरह हो गया है और राजनीतिक विरोधियों को डराने के लिए केंद्र सरकार का 'एक नया हथियार' बन गया है। स्टालिन का यह बयान टीवीके अध्यक्ष विजय की फिल्म *जन नायकन* और *पराशक्ति* को सेंसर बोर्ड द्वारा बड़े पैमाने पर कट लगाए जाने के बाद आया। इसके बाद, टीवीके समर्थकों ने तुरंत कहा कि द्रमुक मगरमच्छ के आंसू बहा रही है और आरोप लगाया कि भाजपा *पराशक्ति* के मामले में नरम थी तथा *जन नायकन* के मामले में अड़ी हुई थी।

स्टालिन ने यह साफ नहीं किया कि उनकी आलोचना तमिलनाडु के हिंदी विरोधी आंदोलन पर आधारित फिल्म *पराशक्ति* के बारे में थी या विजय की *जन नायकन* के बारे में। सेंसर बोर्ड ने अभी तक *जन नायकन* को मंजूरी नहीं दी, जबकि उसने कई कट के साथ *पराशक्ति* को मंजूरी दे दी। टीवीके लॉन्च करने के बाद, विजय ने राज्य में सत्ताधारी द्रमुक और केंद्र में भाजपा, दोनों पर हमला किया। राजनीति में उनका प्रवेश बहुत नाटकीय था। उन्होंने जनसभाओं में भारी भीड़ जुटाई और तेजी से लोकप्रियता हासिल की। हालांकि, करूर भगदड़ ने उनकी राजनीतिक छवि को नुकसान पहुंचाया और इतनी जल्दी सत्ता हासिल करने की उनकी मंशा पर सवाल खड़े कर दिए। सोमवार को इस मामले में सीबीआई ने उनसे लंबी पूछताछ की है।

कुछ जानकारों ने *जन नायकन* विवाद को तमिल फिल्म उद्योग की अंदरूनी राजनीति से भी जोड़ा है। वे उदयनिधि स्टालिन, जो उप-मुख्यमंत्री और उद्योग में एक अहम व्यक्ति हैं, से जुड़े संभावित सत्ता संघर्ष की ओर इशारा करते हैं। इस विवाद को द्रमुक से संबद्ध डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी रेड जायंट मूवीज से भी जोड़कर देखा जा रहा है। विजय ने *जन नायकन* की रिलीज के लिए रेड जायंट की उपेक्षा की, जिससे कथित तौर पर सत्ताधारी पार्टी का प्रथम परिवार नाराज हो गया। फिल्म *जन नायकन* में विजय को गरीबों और दबे-कुचले लोगों के मसीहा के रूप में दिखाया गया है, जो मछुआरों की मदद कर रहा है, भ्रष्ट व्यवस्था के खिलाफ खड़ा हो रहा है, और उसे भावी मुख्यमंत्री के तौर पर पेश किया गया है। यह राजनीतिक संदेश तब और स्पष्ट हो गया, जब उसी समय के आसपास एक और फिल्म, *पराशक्ति*, भी रिलीज होने वाली थी। *पराशक्ति* 1960 के दशक की तमिल राजनीतिक भावनाओं को जगाती है, जब हिंदी विरोधी आंदोलन अपने चरम पर था। यह एक भावनात्मक जगह है, जिस पर द्रमुक ने कब्जा किया हुआ है। दोनों फिल्मों में, संवाद, गाने के बोल और पटकथा क्षेत्रीय पहचान के राजनीतिक द्विअर्थी निहितार्थों से भरे हैं।

विजय के आखिरी अभिनय के तौर पर, *जन नायकन* उनके 30 साल के फिल्मी कॅरिअर को एक श्रद्धांजलि भी है और इस सिनेमा को एक प्रतीकात्मक विदाई के तौर पर देखा जा रहा है। मद्रास हाईकोर्ट की जस्टिस पीटी आशा ने शुरू में फिल्म को रिलीज के लिए मंजूरी दे दी थी। हालांकि, सेंसर बोर्ड ने यह कहकर आपत्ति जताई कि प्रोड्यूसर्स ने कुछ ऐसे सीन नहीं हटाए हैं, जो बोर्ड के अनुसार, राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा पैदा कर सकते हैं। इसके बाद, चीफ जस्टिस की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने एकल जज के आदेश पर रोक लगा दी और अगली सुनवाई की तारीख 21 जनवरी तय की। कांग्रेस नेता प्रवीण चक्रवर्ती के एक ट्वीट के बाद इसमें एक और राजनीतिक मोड़ आ गया, जिन्होंने विजय से कई बार मुलाकात की थी और खुलकर विजय और *जन नायकन* का समर्थन किया था। इससे तमिलनाडु की राजनीति में कहानी बदल गई।

द्रमुक, जो कांग्रेस के साथ इंडिया गठबंधन का हिस्सा है, ने कड़ा विरोध किया। कांग्रेस और द्रमुक नेताओं के बीच सोशल मीडिया पर तीखी बहस हुई। द्रमुक ने सेंसर बोर्ड से *पराशक्ति* को मंजूरी मिलने के बाद विजय का समर्थन करना शुरू कर दिया और देरी के लिए केंद्र सरकार को दोषी ठहराया। कांग्रेस सांसद मणिक्कम टैगोर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह पर आरोप लगाया कि वह इस मुद्दे का इस्तेमाल विजय और टीवीके को राजग गठबंधन में मिलाने के लिए कर रहे हैं। मगर कोर्ट ने सवाल किया कि मंजूरी लिए बिना रिलीज की तारीख क्यों तय की गई और क्या न्यायपालिका पर दबाव बनाने के लिए ऐसा किया जा रहा है। कोर्ट ने साफ कर दिया कि ऐसी चालें काम नहीं करेंगी। टीवीके ने कहा कि उसे न्यायपालिका पर पूरा भरोसा है और वह कानूनी प्रक्रिया खत्म होने का इंतजार करेगा। नाटकीय, राजनीतिक और कानूनी पहलुओं को एक साथ देखने पर कुछ नतीजे सामने आते हैं। पहला, विजय ने संकट को शांति से संभाला। उन्होंने केंद्र सरकार या सेंसर बोर्ड पर सार्वजनिक हमला करने से परहेज किया और कानूनी रास्ते अपनाने का फैसला किया। दूसरा, हालांकि वह राजनीति में नए थे, लेकिन दो दिग्गजों को चुनौती दी-राज्य में द्रमुक और केंद्र में भाजपा, जो उनके राजनीतिक साहस को दर्शाता है। तीसरा, द्रमुक ने सफलतापूर्वक विवाद को भाजपा की ओर मोड़ दिया, ताकि अल्पसंख्यक वोटों को पक्का किया जा सके और उन्हें टीवीके में जाने से रोका जा सके।

बहरहाल, अप्रैल 2026 में, लगभग पांच करोड़ तमिल मतदाता जब तमिलनाडु विधानसभा के लिए 234 विधायक चुनेंगे, तब तक, वे शायद *जन नायकन* के संवाद भूल चुके होंगे, या शायद वे तब भी उसके गाने गुनगुना रहे होंगे।

edit@amarujala.com

जीवन धारा

हैल एलरोड

परिणामों की चिंता किए बिना उस तक पहुंचने की प्रक्रिया के प्रति प्रतिबद्ध रहें। हर परिणाम की एक प्रक्रिया होती है, और जब आप निरंतर उसके प्रति प्रतिबद्ध रहेंगे, तो सफलता अंततः अपरिहार्य हो जाएगी।

प्रतिबद्धता ही सफलता का रहस्य है

__चीजों__ को आवश्यकता से अधिक कठिन बनाना, जो लगभग हमेशा हमारे दिमाग में होता है, अनुत्पादक और अनावश्यक है। इसलिए मैं अब सबसे आम बाधाओं को संबोधित करना चाहता हूं, ताकि हम उनके लिए तैयार रहें और जानें कि यदि वे सामने आती हैं, तो उनसे कैसे पार पाया जाए। पीटर मैकविलियम्स ने कहा है कि असहज होने के लिए तैयार रहें। असहज होते हुए भी सहज रहें। यह कठिन हो सकता है, लेकिन एक सपने को जीने के लिए यह एक छोटी-सी कीमत है।

पहली बाधा जो आमतौर पर अपने कई सिरों में से एक को सामने लाती है, वह है अतार्किकता, विफलता और बदलाव का डर, जो आमतौर पर टालमटोल का कारण बनता है। पहली बार किसी महत्वपूर्ण लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए भय और घबराहट का अनुभव होना लाजिमी है। इसका कारण है कि जब भी हम अपने आरामदायक क्षेत्र के दायरे से बाहर निकलने का साहस करते हैं, तो यह असुविधाजनक होता है। किसी महत्वपूर्ण चीज से निपटना, खासकर यदि आपने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं किया है, डरावना होता है। ऐसी भावनाएं सामान्य और अपेक्षित हैं। यदि आप तनाव ले रहे हैं या अपने लक्ष्य या स्वयं के बारे में नकारात्मक सोच रहे हैं, तो एक गहरी सांस लें और इस बात पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करें कि क्या संभव है और आप क्या करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

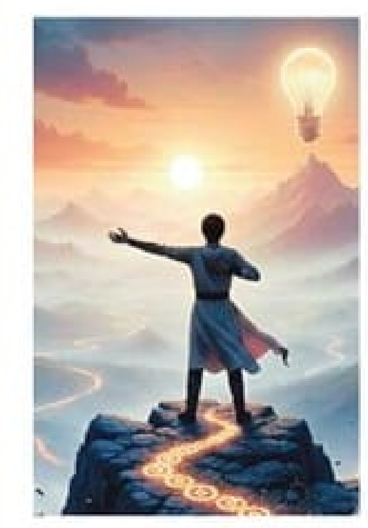

हमेशा इस बात का ध्यान रखें कि स्थिति चाहे जैसी भी हो, आप अपने विचारों के नियंत्रण में ही रहते हैं। जो चीज आपको रोक रही होती है, उसे समझना उस पर काबू पाने की दिशा में पहला कदम है। एक और जरूरी बात यह है कि अल्पकालिक परिणामों के प्रति भावनात्मक लगाव को कैसे संभाला जाए। यदि सफलता का कोई वास्तविक रहस्य है, तो वह यह है कि अपने परिणामों से भावनात्मक रूप से जुड़े बिना उसे पाने की प्रक्रिया के प्रति प्रतिबद्ध रहें। प्रत्येक परिणाम की एक प्रक्रिया होती है, और जब आप लंबे समय तक उस प्रक्रिया के प्रति प्रतिबद्ध रहेंगे, तो सफलता अंततः अपरिहार्य हो जाएगी।

दूसरी बाधा है अधीरता। हम तत्काल संतुष्टि पाने के चक्कर में रहते हैं। हम टेक्स्ट संदेश के माध्यम से मित्रों से तुरंत संपर्क कर सकते हैं। सेकंडों में सोशल मीडिया तक पहुंच सकते हैं, जो हमारी रुचि को प्रभावित करती है। इसलिए, जीवन में धैर्य बेहद जरूरी है, क्योंकि चमत्कार को पाने में बहुत समय खपाना पड़ता है। अधीरता आपके तनाव के स्तर को बढ़ाती है और आपके लिए प्रतिबद्ध रहना कठिन बना देती है। समस्याओं से जूझने के लिए स्पष्टता बेहद जरूरी है। स्पष्टता हमें ऊर्जावान बनाती है। इसलिए, अपनी प्रक्रिया निर्धारित करें और इसके प्रति जवाबदेह बनें। स्पष्टता ही असाधारण सफलता का आधार है।

- द मिरेकल इक्वेशन के अनूदित अंश

धैर्य को ताकत बनाएं

सूत्र

भय, असहजता व अधीरता को बाधा नहीं, बल्कि मार्गदर्शक मानें। सपनों की ओर बढ़ते समय असहज होना स्वाभाविक है, पर उसी असहजता में सहज रहना ही विकास की कुंजी है। हर बड़ी उपलब्धि निरंतर छोटे प्रयासों की देन होती है, इसलिए अपने विचारों पर नियंत्रण रखें, टालमटोल को पहचानें और धैर्य को अपनी शक्ति बनाएं।

दूसरा पहलू

न्यूयॉर्क गगनचुंबी इमारतों, सबवे या टाइम्स स्क्वायर की रोशनी का ही शहर नहीं, बल्कि यहां सात सौ से अधिक भाषाएं भी सांस लेती हैं।

सात सौ भाषाओं वाला अनोखा शहर

न्यूयॉर्क सिर्फ गगनचुंबी इमारतों, सबवे की गूंज या टाइम्स स्क्वायर की रोशनी का शहर नहीं है। यह दुनिया की भाषाई आत्माओं का संगम भी है। यहां सात सौ से अधिक भाषाएं सांस लेती हैं। यह शहर आज भी दुनिया का सबसे भाषाई रूप से विविध महानगर है। पर सवाल है क्या यह भाषाई विशिष्टता आने वाले वर्षों तक टिक पाएगी?

न्यूयॉर्क सिटी में आज 700 से अधिक भाषाएं बोली जाती हैं, जो दुनिया की कुल भाषाओं का लगभग 10 प्रतिशत हैं। लेकिन प्रवास नीतियों में सख्ती, शहर में बढ़ती जीवन-लागत और भाषाओं के प्राकृतिक क्षरण ने इस विविधता को खतरे में डाल दिया है। एंडेंजर्ड लैंग्वेज अलायंस के सह-निदेशक रॉस परलिन बताते हैं कि इतिहास में पहले कभी इतनी भाषाएं एक ही भौगोलिक स्थान पर, एक ही समय में एकत्र नहीं हुईं और इसके लुप्त होने की गति भी उतनी ही तेज हो सकती है। इस भाषाई विविधता ने न्यूयॉर्क को न केवल सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाया है, बल्कि वैज्ञानिक, कलात्मक और आर्थिक दृष्टि से भी अनोखा बना दिया है। क्वींस के शेफ व कवि इरविन सांचेज अपने व्यंजनों के जरिये अपनी मातृभाषा नहुआटल को जिंदा रखे हुए हैं। यह भाषा कभी प्राचीन एजटेक साम्राज्य की पहचान थी। ताजिकिस्तान की हुस्निया खुजमयोरोवा वाखी भाषा में बच्चों के लिए किताबें तैयार कर रही हैं। गिनी से आए इब्राहिमा ट्राओरे एन'को नामक पश्चिम अफ्रीकी लिपि को डिजिटल दुनिया में ले जाने की कोशिश कर रहे हैं और मॉल्डोवा से आए यिडिश (यहूदी साहित्य) लेखक बोरिस सैंडलर इस शहर में यिडिश साहित्य का पुनर्जन्म कर रहे हैं। यह विविधता न केवल भाषाओं में, बल्कि विचारों, संगीत, भोजन और कला में भी एक नई चेतना ला रही है। जहां बेबेल अब भ्रम नहीं, बल्कि एक जीवित व संवादशील वास्तविकता है। बेबेल, यानी एक ऐसा स्थान, जहां बहुत सारी भाषाएं बोली जाती हैं, जहां हर आवाज अलग है, पर सब साथ मौजूद हैं।

इस भाषाई विविधता ने न्यूयॉर्क को न केवल सांस्कृतिक रूप से, बल्कि वैज्ञानिक, कलात्मक व आर्थिक दृष्टि से भी समृद्ध बनाया है।

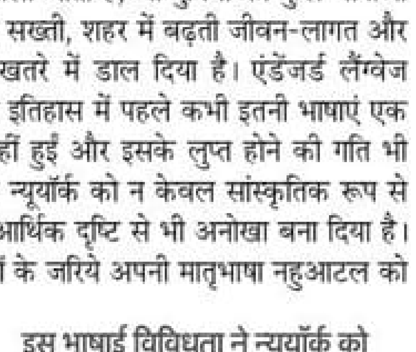

न्यूयॉर्क की हर आवाज, चाहे वह सेके हो, लनापे हो या यिडिश इस बात की गवाही देती है कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि स्मृति, पहचान और अस्तित्व की धड़कन है।

ब्रुकलिन की गलियों में कुछ कदम चलते ही दुनिया बदल जाती है। जहां एक ओर घाना के चर्चों में त्वी की प्रार्थनाएं गूंजती हैं, वहीं दूसरी ओर अजरबैजान के नाई जुहुरी में बात करते हैं। उबर ड्राइवर उज्बेक में गपशप करते हैं और सड़क किनारे अफ्रीकी, एशियाई, यूरोपीय व लैटिन अमेरिकी भाषाएं एक साथ सुनाई देती हैं। रश्मिना गुरुंग ने पिछले सात वर्षों में सेके भाषा को सैकड़ों घंटों की रिकॉर्डिंग, लिप्यंतरण और शब्दकोश के रूप में दर्ज किया है।

न्यूयॉर्क जैसे शहरों में यह भाषाई प्रयोगशाला अब अपने सबसे नाजुक मोड़ पर है और अलगाव की शिकार हो रही है। पर अब भी वक्त है इस जीवित बेबेल को समझने, सराहने और बचाने का। न्यूयॉर्क की हर आवाज चाहे वह सेके हो, लनापे हो या यिडिश इस बात की गवाही देती है कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि स्मृति, पहचान और अस्तित्व की धड़कन है। और जब तक यह शहर सांस लेता रहेगा, सात सौ भाषाएं भी उसकी धड़कनों में गूंजती रहेंगी।

- अमर उजाला नेटवर्क

आंकड़े

सेहत में निवेश

भारत में जिम, फिटनेस एप या अन्य स्वास्थ्य सेवाओं की लोकप्रियता सबसे अधिक है। यहां लगभग हर दूसरा व्यक्ति किसी न किसी स्वास्थ्य सेवा से जुड़ा है।

भारत	46
ब्राजील	44
फिनलैंड	38
चीन	34
जर्मनी	27

आंकड़े स्वास्थ्य व फिटनेस सेवा पर खर्च करने वालों के, प्रतिशत में। स्रोत : स्टैटिस्टा कंज्यूमर इनसाइट्स

आज लोहड़ी है। यह पर्व केवल फसल और ऋतु परिवर्तन का उत्सव नहीं, बल्कि अग्नि, सूर्य और जीवन-मर्यादा से जुड़ा आध्यात्मिक प्रतीक भी है।

समृद्धि व खुशहाली का प्रतीक

आज लोहड़ी है। इसका संबंध कई ऐतिहासिक कहानियों से जोड़ा जाता है। यह पर्व केवल फसल और ऋतु परिवर्तन का उत्सव नहीं, बल्कि अग्नि, सूर्य और जीवन-मर्यादा से जुड़ा आध्यात्मिक प्रतीक भी है। लोहड़ी को मुख्य रूप से नई फसल, यानी रबी की फसल के पकने की खुशी में मनाया जाता है। इस दिन किसान ईश्वर का धन्यवाद करते हैं और अच्छी पैदावार की कामना करते हैं। इसे जीवन में समृद्धि व खुशहाली लाने का प्रतीक भी माना जाता है।

लोहड़ी का सबसे प्रसिद्ध लोक-इतिहास दुल्ला भट्टी से जुड़ा है। उनके बिना लोहड़ी के गीत (जैसे सुंदर मुंदरिये हो...) अधूरे माने जाते हैं। मुगल सम्राट अकबर के शासनकाल में दुल्ला भट्टी एक वीर योद्धा थे। कहा जाता है कि उस समय कुछ क्रूर सौदागर हिंदू लड़कियों को गुलाम बनाकर विदेशों में बेच रहे थे। दुल्ला भट्टी ने न केवल 'सुंदरी' और 'मुंदरी' नाम की दो अनाथ लड़कियों को उन सौदागरों से बचाया, बल्कि जंगल में आग जलाकर पिता की तरह उनका कन्यादान भी किया और शगुन के रूप में उन्हें शक्कर दी।

अंतर्यात्रा
संकलित

आध्यात्मिक रूप से लोहड़ी की अग्नि को पवित्र माना जाता है। लोग इसमें तिल, गुड़, मूंगफली और रेवड़ी अर्पित करते हैं। यह अग्नि को धन्यवाद देने का प्रतीक है, जो शीत ऋतु में जीवन का आधार बनती है। अग्नि में अर्पण करना अहंकार, नकारात्मकता और पुराने दुखों के त्याग का संकेत माना जाता है।

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 13 जनवरी, 1960

परमाणु परीक्षण को लेकर मतभेद

परमाणु परीक्षण : ब्रिटेन व अमरीका के बीच मतभेद
ब्रिटेन के दो व्यापारी गिरफ्तार

परमाणु परीक्षण बंद करने को लेकर चल रही वार्ता में ब्रिटेन व अमेरिका में मतभेद पैदा हो गए हैं। ब्रिटेन का कहना है कि पश्चिमी देशों को रूस के साथ समझौता कर लेना चाहिए। अमेरिका का मत है कि रूस धोखा देगा।

गिग अर्थव्यवस्था का दूसरा पहलू

दो करोड़ गिग वर्कर्स की मेहनत से गिग इकनॉमी की रफ्तार तो बढ़ रही है, पर उनके हित में अब भी कई कदम उठाए जाने बाकी हैं।

मधुरेंद्र सिन्हा

अर्थव्यवस्था

देश भर में तकरीबन एक करोड़ युवा हर दिन सड़कों पर तेज रफ्तार से भागते हुए घरों में जरूरत का सामान पहुंचाते हैं। सुबह से रात तक ये बड़ी ईमानदारी, चुस्ती और सावधानी से कंपनियों के सामान उपभोक्ताओं को सौंपते हैं। हमारी जीडीपी के 1.25 फीसदी विकास में भारत के विशाल सप्लाई चेन मैनेजमेंट के आखिरी छोर पर काम करने वाले इन लोगों का बड़ा हाथ है। भारत की डिजिटल क्रांति में भी इनका बड़ा योगदान है।

नीति आयोग के आंकड़ों के मुताबिक, करीब दो करोड़ कामगार, जिन्हें गिग वर्कर्स कहते हैं, इस तरह के कामों में लगे हुए हैं। इनके बूते चलने वाली अर्थव्यवस्था (गिग इकनॉमी) 17 फीसदी की रफ्तार से बढ़ रही है और 2024 तक इसने 455 अरब डॉलर के कुल कारोबार में हाथ बंटाया। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अपने बजट भाषण में कहा था कि भारत के जीडीपी में तेजी का कारण हमारे यहां घरेलू उपभोग में भारी बढ़ोतरी है। भारत की अर्थव्यवस्था निर्यात आधारित न होकर उपभोग आधारित है और इसलिए इन कामगारों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। भारत के क्रय प्रबंधन सूचकांक (पीएमआई) में 2025 में असाधारण बढ़ोतरी हुई और यह गिग वर्कर्स की कड़ी मेहनत से संभव हुआ है। पहले जहां खरीदार बाहर जाकर खरीदारी करने में झिझकता था, अब उसके पास दर्जनों विकल्प हैं और उसकी पसंद का सामान मिनटों में उपलब्ध हो जाता है। भारत में इंटरनेट के प्रसार-विस्तार ने यह संभव किया है।

एक स्मार्टफोन और इंटरनेट कनेक्शन से दोनों ही काम हो रहे हैं। युवाओं को रोजगार और ग्राहकों को उनकी जरूरत या पसंद का सामान उपलब्ध हो जाता है। गिग वर्कर बनने के लिए बहुत योग्यता की जरूरत नहीं है और इसलिए रोजगार का यह माध्यम तेजी से फल-फूल रहा है। इस बदलाव का असर सामाजिक व्यवस्था पर भी पड़ा है। दिल्ली, मुंबई, जैसे महानगरों में जहां घनी बस्तियों में युवा मटरगश्ती करते दिखते थे, कई जगहों में मारपीट करते रहते थे, कुछ अन्य अपराध करते थे, वहां अब शांति छा गई है। युवा सुबह-सुबह अपने काम पर निकल जाते हैं। इन युवाओं को औसतन 15 से 20 हजार रुपये तक मिल जाते हैं, यानी एक छोटे-से परिवार को चलाने के लिए धन मिल जाता है।

यहां यह जानना जरूरी है कि इन कामगारों को गिग वर्कर्स क्यों कहते हैं? दरअसल, यह शब्द अमेरिका-इंग्लैंड के म्यूजिक इंडस्ट्री से आया, जहां ऐसे कलाकार, जो अस्थायी तरीके से काम करते थे, उन्हें गिग वर्कर्स कहा जाता था। बाद में यह शब्द अस्थायी रूप से काम करने वाले कामगारों के लिए भी इस्तेमाल होने लगा। वैसे कामगार जो फ्रीलांसर होते थे, यानी किसी नौकरी से पक्के तौर पर जुड़े नहीं होते थे, वे ही गिग वर्कर कहलाते थे। ऐसे कामगार अपनी सुविधा के अनुसार अपनी पसंदगी के अनुसार काम करते हैं। इन गिग कामगारों के सामने कई सारी चुनौतियां हैं-जैसे कमाई में अस्थिरता, किसी तरह का बीमा, रिटायरमेंट लाभ, छुट्टियां, पेंशन वगैरह कुछ नहीं होते हैं। इसके अलावा, इन्हें किसी तरह की रोजगार सुरक्षा उपलब्ध नहीं है और उनके काम के घंटे भी तय नहीं हैं। उन्हें श्रम कानूनों का कवच नहीं है, जो स्थायी कर्मियों को मिलते हैं। दुर्घटना हो जाने पर उन्हें किसी तरह की वित्तीय मदद नहीं मिलती है। आर्थिक इमरजेंसी में उन्हें वह कंपनी कुछ भी नहीं देती है। अपने हिसाब से नौकरी से हटा भी देती है।

फिलहाल, यह मामला गरम हो गया है, क्योंकि कई कंपनियों ने 10 मिनट डिलीवरी का ऐलान किया है, जिससे इन गिग वर्कर्स पर भारी दबाव पड़ रहा है। यह उनके जीवन पर खतरा भी है, क्योंकि इस लक्ष्य को पूरा करने में दुर्घटना की पूरी आशंका है। अभी ही हर दिन दर्जनों डिलीवरी बॉय दुर्घटना का शिकार हो रहे हैं। कई बार कंपनियां उन पर पेनाल्टी भी लगाती हैं। सच तो यह है कि उनके काम करने की दशा बेहद खराब है। डिलीवरी के रेट कई बार इतने कम होते हैं कि उन्हें बेगार कराए जाने का एहसास होता है। अगर कोई कामगार 15 घंटे लगातार काम करके 700-800 रुपये कमाता है, तो फिर फायदा ही क्या है? ये सभी सवाल पिछले दिनों उनकी हड़ताल के दौरान उठे। उम्मीद है कि इसका समाधान निकलेगा।

भारत सरकार ने 2025-26 के बजट में गिग वर्कर्स के लिए कई कल्याणकारी कदमों की घोषणा की है। उनका पंजीकरण ई-श्रम पोर्टल पर करने की व्यवस्था की गई है। उन्हें आईडी कार्ड देने की भी व्यवस्था की जा रही है। आयुष्मान भारत स्वास्थ्य स्कीम में उन्हें पांच लाख रुपये तक का सुरक्षा कवच दिया जा रहा है। श्रम मंत्रालय ऐसे कामगारों को ई-श्रम पोर्टल पर पंजीकरण के लिए जोर दे रहा है। सरकार का मानना है कि ये कामगार डिजिटल अर्थव्यवस्था में जबर्दस्त योगदान दे रहे हैं। ये कम पारिश्रमिक वाले कामगार हैं और उद्योगों तथा कंपनियों की लागत कम रखने में मदद करते हैं। आज के आर्थिक माहौल में ये बिजनेस का जरूरी हिस्सा बन गए हैं और इसलिए इन्हें सहारा देना तथा इनके साथ अन्याय न होने देना सरकार तथा कंपनियों का फर्ज है।

नोएडा में 2460 करोड़ के निवेश से बनेंगे 1,937 फ्लैट व दुकानें

ग्रेटर नोएडा। उत्तर प्रदेश भूसंपदा विनियामक प्राधिकरण (यूपीरेरा) ने सोमवार को प्रदेश के छह जिलों में 4100 करोड़ रुपये के 12 रियल एस्टेट परियोजनाओं को मंजूरी दी है। इन प्रोजेक्ट में 7100 से अधिक आवासीय और कॉमर्शियल इकाइयां बनेंगी। इनमें सबसे अधिक निवेश गौतमबुद्ध नगर में होगा। यहां के तीन प्रोजेक्ट में 2460 करोड़ रुपये का निवेश होगा। जिससे 1,937 फ्लैट और दुकानों का निर्माण होगा। यूपी रेरा के अधिकारियों ने बताया कि पिछले वर्ष यूपी में 84 हजार करोड़ रुपये से अधिक का निवेश हुआ था। कुल 308 प्रोजेक्टों का पंजीकरण हुआ था। वर्ष 2026 में भी बड़ी संख्या में प्रोजेक्टों के पंजीकरण की उम्मीद है। साल की शुरुआत 12 प्रोजेक्ट के साथ हुई है। यूपी रेरा ने 193वीं बैठक में 12 प्रोजेक्टों के पंजीकरण को मंजूरी दी है।

4100 करोड़ के 12 रियल एस्टेट प्रोजेक्टों को यूपी रेरा ने सोमवार को 6 जिलों में दी मंजूरी

जो प्रदेश के छह जिलों में हैं। लखनऊ में 1091 करोड़ के 5 प्रोजेक्टों को मंजूरी दी है। यहां पर 3,569 फ्लैट और दुकानों का निर्माण होगा। मथुरा में 300 करोड़ के प्रोजेक्ट में 504 आवासीय यूनिटें बनेंगी। वहीं आगरा में भी 201 करोड़ के आवासीय प्रोजेक्ट को मंजूरी दी गई है। जिसमें 949 फ्लैट बनेंगे। वहीं वाराणसी में 36.92 करोड़ के आवासीय प्रोजेक्ट में 80 फ्लैट और झांसी में 8.79 करोड़ के निवेश से एक प्रोजेक्ट में 108 फ्लैटों का निर्माण होगा। रेरा के चेयरमैन संजय भूसरेड्डी का कहना है कि निवेश से रोजगार और कारोबार भी मिलेगा। यूपी रेरा प्रोजेक्टों के निर्माण पर निगरानी भी रखेगा। ब्यूरो

मिनी मुंबई के रूप में सेक्टर-11 में विकसित होगी फिनटेक सिटी

ग्रेटर नोएडा। यमुना सिटी के सेक्टर-11 में मिनी मुंबई के रूप में फिनटेक सिटी का विकास किया जाएगा। लगभग 250 एकड़ क्षेत्र में फैली इस परियोजना में देश-विदेश की प्रमुख वित्तीय संस्थाओं को कारोबार के लिए आधुनिक और बेहतर विकल्प उपलब्ध कराए जाएंगे। सोमवार को दिल्ली के एक निजी होटल में आयोजित रोड शो और स्टेकहोल्डर्स मीटिंग में यमुना प्राधिकरण के सीईओ राकेश कुमार सिंह ने अन्य अधिकारियों के साथ परियोजना पर चर्चा की। बैठक का उद्देश्य फिनटेक सिटी के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करने हेतु सुझाव लेना और निवेशकों को आमंत्रित करना था। ब्यूरो

एनबीसीसी ने एमओयू मूल्यांकन में 'उत्कृष्ट' रेटिंग प्राप्त की

नई दिल्ली (वि)। आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन आने वाली नवरत्न सीपीएसई, एनबीसीसी (इंडिया) ने अपने एमओयू मूल्यांकन वर्ष 2024-25 में 97.58 अंकों के साथ 'उत्कृष्ट' रेटिंग प्राप्त की है। यह उपलब्धि परियोजना निष्पादन, गुणवत्ता मानकों में कंपनी के सशक्त प्रदर्शन की पुष्टि करती है। कंपनी ने परियोजनाओं को समय पर पूरा करने, सुरक्षा एवं गुणवत्ता मानकों के पालन तथा पर्यावरणीय रूप से जिम्मेदार निर्माण कार्य पद्धतियों को अपनाने के माध्यम से उत्कृष्टता का प्रदर्शन किया है। एनबीसीसी प्रमुख सरकारी पहलों में निरंतर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, विशेष रूप से सरकारी आवास एवं कार्यालय परिसरों के पुनर्विकास में, जो नियोजित शहरी विकास और विकसित भारत के दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रहा है।

राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय में 'सृजन 2026' का उद्घाटन

जयपुर (वि)। राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय में स्वामी विवेकानंद जयंती और राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर वार्षिक खेल और सांस्कृतिक उत्सव ''''सृजन 2026'''' का सोमवार को उद्घाटन हुआ, जो 14 जनवरी तक चलेगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, अजमेर सांसद और कृषि मंत्री भागीरथ चौधरी ने कार्यक्रम में युवाओं को प्रेरित किया।

कुलपति प्रो. आनंद भालेराव ने मुख्य अतिथि का सम्मान किया। इस अवसर पर चित्तौड़ प्रांत के प्रांत प्रचारक मुरलीधर ने विवेकानंद से संबंधित कई रोचक प्रसंग सुनाए। इसके साथ ही पहली बार विश्वविद्यालय द्वारा कुलपति नवाचार पुरस्कार प्रदान किए गए। पहला नवाचार पुरस्कार इलेक्ट्रॉनिक्स एवं संचार अभियांत्रिकी विभाग की टीम को प्रदान किया गया। इस टीम में प्रभनूर कौर, सौम्या श्रीवास्तव, उर्वी वर्मा एवं स्पर्श सिंह शामिल हैं। दूसरा नवाचार पुरस्कार पर्यावरण विज्ञान विभाग की छात्रा इकरा चौधरी को प्रदान किया गया।

खेलते समय कपड़े गंदे हो जाने पर सौतेली मां ने बच्ची को पीटा, मौत

शनिवार शाम की है घटना, सोमवार को उपचार के दौरान तोड़ा दम, आरोपी माता-पिता हिरासत में

संवाद न्यूज एजेंसी

मसूरी/गाजियाबाद। डासना में खेलते समय कपड़े गंदे होने के कारण नाराज सौतेली मां की पिटाई के बाद छह वर्षीय बच्ची की मौत हो गई। पिता पर भी उसे पीटने का आरोप है। वेव सिटी थाना पुलिस ने आरोपी माता-पिता को हिरासत में ले लिया है।

एसीपी वेव सिटी प्रियाश्री पाल ने बताया कि मृतक बच्ची का नाम शिफा था। शुरुआती जांच में सामने आया है कि शनिवार को मां ने उसे कमरे में बंद करके पीटा था। पिता ने भी बचाने के स्थान पर बच्ची को थप्पड़ मारे।

पिटाई से बच्ची को गंभीर चोटें आईं। सोमवार को एक निजी अस्पताल में इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। इसके बाद बच्ची के मामा ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस आरोपी पिता अकरम और सौतेली मां निशा परवीन से पूछताछ कर रही है।

बच्ची नाली में गिरी, मां ने डंडे से पीटा: पुलिस के अनुसार, अकरम की पहली पत्नी गुलजार की तीन साल पहले मौत हो चुकी है। उससे अकरम की दो

शिफा फाइल फोटो | घायल आहिल। संवाद

बेटियां फिजा (8) व शिफा (6) और बेटा आहिल (4) हैं। करीब डेढ़ साल पहले उसने मेरठ के किठौर में रहने वाली निशा से शादी की थी। निशा की कोई संतान नहीं है।

वह परिवार के साथ डासना के बाजीगिरान मोहल्ले में रहता है। जांच में सामने आया कि शनिवार शाम शिफा घर के बाहर खेलने गई थी। इस दौरान नाली में गिर गई। उसके कपड़े गंदे हो गए। वह घर आई तो निशा ने गुस्से में उसे डंडे से काफी देर तक पीटा। छोटा भाई आहिल यह देख शोर मचाने लगा तो उसकी भी पिटाई की। अकरम भी घर में था। उसने भी शिफा को चार-पांच थप्पड़ मारे।

माता-पिता बोले, बच्ची बाइक से गिरी

पुलिस के अनुसार, पूछताछ में अकरम ने शिफा के बाइक से गिरने की बात कही है। उसने पुलिस को बताया कि सोमवार सुबह शिफा बेहोश हो गई थी। इससे वह घबरा गए और उसे बाइक पर बैठाकर अस्पताल ले जाने लगे। बाइक अकरम चला रहा था और निशा पीछे बैठी थी। शिफा बीच में बैठी थी। दंपती ने बताया कि शिफा चलती बाइक से सड़क पर गिर गई। इससे बाइक असंतुलित होने से वह भी सड़क पर गिर गए। इसके बाद वह बच्ची को चिकित्सक के पास ले गए, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। पुलिस इस पहलू की भी जांच कर रही है।

पहली पत्नी ने लगा ली थी आग

एसीपी के मुताबिक, अकरम की पहली शादी गुलजार निवासी गांव नेकपुर, मुरादनगर से हुई थी। जांच में सामने आया कि घरेलू विवाद में गुलजार ने तीन वर्ष पूर्व खुद पर केरोसीन डालकर आग लगा ली थी। हालांकि, पुलिस से इसकी शिकायत नहीं की गई और आपसी समझौते के बाद गुलजार को सुपुर्द-ए-खाक कर दिया गया था।

इलाज कराने के स्थान पर झाड़-फूंक के लिए ले गए

पुलिस के अनुसार, पिटाई से गंभीर घायल शिफा की तबीयत बिगड़ने लगी तो माता-पिता उसे अस्पताल के बजाय झाड़-फूंक कराने ले गए। रविवार को दंपती बेहोशी की हालत में उसे एक मौलवी के पास लेकर पहुंचे। उसने एक ताबीज दिया और शिफा को धूप में रखने की सलाह दी। आराम नहीं मिला तो दूसरे मौलवी से ताबीज दिलाया। सोमवार सुबह तबीयत अधिक खराब होने पर उसे एक निजी चिकित्सक के पास ले गए, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। पुलिस के अनुसार, मौत के कारणों की पुष्टि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही होगी। पिटाई से घायल आहिल को भी एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

बोलेरो में डीजल डालते समय कार ने मारी टक्कर, दो सगे भाइयों की मौत

ग्रेटर नोएडा। नॉलेज पार्क कोतवाली क्षेत्र अंतर्गत जीरो पॉइंट के पास रविवार रात बोलेरो में डीजल भर रहे दो भाइयों को हॉंडा सिटी कार ने टक्कर मार दी। हादसे में गंभीर रूप से घायल गौरव शर्मा (32) व मनोज शर्मा (40) की मौत हो गई। नाराज परिजन ने कार्रवाई की मांग को लेकर एनपीएक्स चौकी के बाहर प्रदर्शन किया। पुलिस ने भागलपुर बिहार निवासी शारदा अस्पताल के डॉ. सिद्धार्थ कात्यायन (31) को गिरफ्तार कर कार को कब्जे में लिया है।

कोंडली बांगर गांव निवासी गौरव रविवार को सैनी गांव में परिवार को लेकर बहन के घर गए थे। वहां से शाम को घर लौट रहे थे। जीरो पॉइंट के पास नोएडा-ग्रेनो एक्सप्रेसवे पर वाहन का डीजल समाप्त हो गया।

आरोपी शारदा अस्पताल का डॉ. सिद्धार्थ कात्यायन गिरफ्तार

मनोज और गौरव। फाइल फोटो

गौरव ने अपने बड़े भाई मनोज को फोन कर ईंधन लाने को कहा। कुछ देर में भाई ईंधन लेकर पहुंचा। मनोज ने पास एक पेट्रोल पंप से किसी तरह से डीजल का इंतजाम किया और बाद में गाड़ी में डीजल लाकर डालने लगा। वहीं पास खड़ा गौरव दूसरी गाड़ियों को साइड कराने में मदद करने लगा। इसी दौरान एक तेज रफ्तार हॉंडा सिटी कार ने अनियंत्रित होकर दोनों भाइयों को टक्कर मार दी। ब्यूरो

थप्पड़ मारने से नाराज प्रेमी ने की थी हत्या, रात में शव के पास सोया

रॉयल किंग होटल में रविवार सुबह मृत मिली थी महिला, पुलिस ने आरोपी को किया गिरफ्तार

गाजियाबाद। सिहानी गेट क्षेत्र स्थित रॉयल किंग होटल के एक कमरे में मृत मिली आरती (34) की जान बेरहमी से पीटने से गई। आरोप महिला के प्रेमी नंदग्राम के सेवानगर निवासी प्रवीन पर है। उसे गिरफ्तार कर लिया गया है।

पुलिस के अनुसार, आरोपी को शादी से इन्कार करने पर प्रेमिका का थप्पड़ मारना इतना नागवार गुजरा कि उसे क्रूरता से पीट दिया। एसीपी नंदग्राम उपासना पांडे के अनुसार, आरोपी से पूछताछ में सामने आया कि शनिवार रात होटल के एक कमरे में उसने और आरती ने साथ में शराब पी। इसके बाद उनका विवाद हो गया। इस दौरान आरोपी ने महिला पर लात-घूसों और कोहनी से तब तक प्रहार किए, जब तक उसने चीखना बंद नहीं कर दिया। इसके बाद वह नशे की हालत में वहीं सो गया। रविवार सुबह जब आरती के शरीर में कोई हलचल नहीं हुई, तब उसने पुलिस को सूचना दी।

एसीपी ने बताया कि आरती की शादी रविंद्र कुमार निवासी कोटगांव से हुई थी। उनके दो बेटे हैं। दो वर्ष पूर्व बीमारी के चलते रविंद्र की मौत हो गई। इसके बाद आरती को नशे की लत लग गई। 10 जनवरी की शाम दोनों होटल पहुंचे और शराब पी। इसके बाद पूरी घटना हुई। एसीपी ने बताया कि गलत आचरण और नशे की लत के कारण परिजनों ने आरती से नाता तोड़ लिया था। उसके दोनों बेटे अपने चाचा के पास रहते हैं। परिजनों ने पंचायतनामा भरवाने से इन्कार कर दिया था। ब्यूरो

इंडियन ऑयल और मारुति सुजुकी का नया समझौता

नई दिल्ली (वि)। इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आईओसीएल) और मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड (एमएसआईएल) ने ग्राहकों की सुविधा बढ़ाने के लिए समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। इसके तहत देशभर के चुनिंदा इंडियन ऑयल पेट्रोल पंपों पर मारुति सुजुकी सर्विस सेंटर स्थापित किए जाएंगे। इससे कार मालिक अपने वाहन के नियमित रखरखाव और छोटी-मोटी मरम्मत की सुविधा वहीं पा सकेंगे जहां वे ईंधन भरवाते हैं। इंडियन ऑयल भारत भर में फैले अपने 41,000 से अधिक पेट्रोल पंपों के नेटवर्क का लाभ उठाकर मारुति सुजुकी के 5,780 से अधिक सर्विस केंद्रों को मजबूत करेगा। इंडियन ऑयल के विपणन निदेशक सौमित्र पी श्रीवास्तव ने कहा कि यह साझेदारी ग्राहकों को बेहतर अनुभव और मूल्यवर्धित सेवाएं देगी। मारुति सुजुकी के कार्यकारी अधिकारी (सेवा) राम सुरेश अकेल्ला ने बताया कि यह सहयोग कार सर्विसिंग को आसान, सुलभ और भरोसेमंद बनाने का महत्वपूर्ण कदम है।

व्यावसायिक गतिविधि

आरईसी को स्कोच अवाड्‌र्स 2025 में नेट जीरो ट्रांजिशन सिल्वर अवार्ड

नई दिल्ली (वि)। आरईसी लिमिटेड को स्कोच अवाड्‌र्स 2025 में ''''कॉर्पोरेट नेट जीरो ट्रांजिशन'''' कैटेगरी में सिल्वर अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार संगठन की रणनीतिक पहलों और भारत के नेट-जीरो और क्लाइमेट ट्रांजिशन लक्ष्यों के साथ अपने ऑपरेशंस और फाइनेंसिंग पोर्टफोलियो को जोड़ने में हुई ठोस प्रगति को मान्यता देता है। आरईसी लिमिटेड की ओर से जनरल मैनेजर (फाइनेंस) अवनीश कुमार भारती ने अवार्ड प्राप्त किया। कंपनी नवीकरणीय ऊर्जा, ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर और स्थायी पावर प्रोजेक्ट्स को सपोर्ट कर भारत के क्लीन एनर्जी लक्ष्यों में योगदान दे रही है और पावर एवं इंफ्रास्ट्रक्चर सेक्टर में बदलाव का उत्प्रेरक बन रही है।

आरईसीपीडीसीएल ने दो इंट्रा-स्टेट ट्रांसमिशन प्रोजेक्ट्स की एसपीवी सौंपी

नई दिल्ली (वि)। आरईसी पावर डेवलपमेंट एंड कंसल्टेंसी लिमिटेड (आरईसीपीडीसीएल), आरईसी लिमिटेड की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी ने महाराष्ट्र में टैरिफ-बेस्ड कॉम्पिटिटिव बिडिंग (टीबीसीबी) रूट के तहत दो इंट्रा-स्टेट ट्रांसमिशन प्रोजेक्ट-स्पेसिफिक स्पेशल पर्पस व्हीकल (एसपीवी) सफलतापूर्वक सौंप दी। वेलगांव पावर ट्रांसमिशन लिमिटेड एसपीवी मेसर्स सीगल इंडिया लिमिटेड को और जेजुरी हिंजेवाड़ी पावर ट्रांसमिशन लिमिटेड एसपीवी टाटा पावर कंपनी लिमिटेड को ऑपरेट एंड ट्रांसफर (बूट) बेसिस पर सौंपे गए। इन प्रोजेक्ट्स में 400/220 केवी सबस्टेशन, डबल और सिंगल सर्किट ट्रांसमिशन लाइनों और लगभग 115 किमी लंबी ट्रांसमिशन लाइन का निर्माण शामिल है। आरईसीपीडीसीएल के सीनियर जनरल मैनेजर और हेड ऑफ डिपार्टमेंट (टीएंडडी) विजय कुलकर्णी ने आरसीपीडीसीएल, बिड विजेता कंपनियों और महाराष्ट्र एसटीयू के वरिष्ठ अधिकारियों की मौजूदगी में एसपीवी हैंडओवर किए।

देश का सबसे पर्यावरण अनुकूल हवाईअड्डा बनेगा नोएडा एयरपोर्ट, 82.94 एकड़ में सोलर फार्म बन रहा

51,966 मेगावाट प्रति घंटा स्वच्छ ऊर्जा का किया जाएगा उत्पादन

लखनऊ/ग्रेटर नोएडा। ग्रीन इन्फ्रास्ट्रक्चर विज़न को साकार करते हुए नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट (जेवर) देश का सबसे पर्यावरण–अनुकूल और टिकाऊ हवाईअड्डा बनने की ओर अग्रसर है। ज्यूरिख एयरपोर्ट ग्रुप के सहयोग से विकसित हो रहा यह एयरपोर्ट नेट-जीरो कॉन्सेप्ट पर आधारित है और भारत का पहला ग्रीन कैंपस प्रमाणित एयरपोर्ट बनने का गौरव हासिल कर चुका है।

एयरपोर्ट के टर्मिनल भवन को इस तरह डिजाइन किया गया है कि ऊर्जा,

नोएडा एयरपोर्ट

पानी और कचरे की खपत न्यूनतम रहे। पार्किंग क्षेत्र के 20 प्रतिशत हिस्से में इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए स्टैंडर्ड और फास्ट चार्जिंग की सुविधा उपलब्ध होगी, जबकि एयरसाइड संचालन में प्रयुक्त सभी वाहन पूरी तरह इलेक्ट्रिक होंगे। एयरपोर्ट परिसर में 82.94 एकड़ में सोलर फार्म विकसित किया जा रहा है, जिससे 51,966 मेगावाट-घंटा स्वच्छ ऊर्जा का उत्पादन होगा। इसके अलावा दो रेनवाटर हार्वेस्टिंग पौंड, आरएनजी प्लांट और अत्याधुनिक ठोस अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली एयरपोर्ट को पर्यावरण संरक्षण की मिसाल बनाएंगे। पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने के लिए एक व्यापक एनवायरनमेंट मॉनिटरिंग प्लान भी लागू किया गया है, जिसके तहत हर माह वायु, जल, मिट्टी, कचरा और सीवेज के मानकों की निगरानी की जाएगी। ब्यूरो

भाई से मिलने आई बहन, बेड पर मिला बुजुर्ग का शव

गाजियाबाद। राजनगर एक्सटेंशन की ब्रेव हार्ट्स सोसायटी में 68 वर्षीय बुजुर्ग का शव फ्लैट में मिला। नंदग्राम पुलिस के आने के बाद दरवाजे को तोड़कर अंदर दाखिल होने पर शव बेड पर मिला।

एसीपी नंदग्राम उपासना पांडेय ने बताया कि मृतक की पहचान मूल रूप से लाल चौक कश्मीर के रहने वाले दीपक के रूप में हुई है। आशंका जताई जा रही है कि हार्ट अटैक होने से मौत हुई हो। पुलिस के अनुसार, रविवार की दोपहर दिल्ली के मालवीय नगर से एक दंपती सोसायटी में आए।

उन्होंने बताया कि फ्लैट संख्या एफ 804 में उनके भाई दीपक कुमार किराये पर रहते हैं। उन्होंने बताया कि नव वर्ष की शुभकामनाएं देने के लिए भाई को कॉल किया, लेकिन वह रिसीव नहीं हुई। चार जनवरी तक उन्होंने कॉल की, लेकिन दीपक से बात नहीं हुई तो मिलने के लिए आईं। पुलिस के अनुसार दीपक कुमार का शव सड़ी-गली हालत में था। ब्यूरो

7 दिन तक रखा डिजिटल अरेस्ट, 48 लाख ठगे

एनआईए अधिकारी बनकर दिया वारदात को अंजाम, एफआईआर दर्ज

फरीदाबाद। एनआईए अधिकारी बनकर एक व्यक्ति को 7 दिन तक डिजिटल अरेस्ट कर 48 लाख रुपये ठग लिए गए। इस मामले 11 जनवरी को साइबर क्राइम पोर्टल पर शिकायत दर्ज कराई गई। मामले में रविवार को साइबर क्राइम थाना बल्लभगढ़ पुलिस ने एफआईआर दर्ज की है। पुलिस प्रवक्ता यशपाल सिंह ने बताया कि टीम जांच कर रही है।

ठगी को लेकर पुलिस को ये शिकायत बल्लभगढ़ सेक्टर-8 के रहने वाले व्यक्ति ने दी है। ये पहले एक निजी कंपनी में नौकरी करते थे और साल 2014 में कंपनी बंद हो गई तो घर पर ही रहने लगे। आरोप है कि 8 दिसंबर को उनके पास एक नंबर से कॉल आई। कॉल करने वाले ने खुद को हरियाणा प्रशासनिक विभाग चंडीगढ़ का अधिकारी बताकर कहा कि आपके आधार

साइबर क्राइम पोर्टल पर 11 जनवरी को दर्ज कराई शिकायत

कार्ड पर एक सिम जारी हुई है। इस सिम का आतंकवादियों ने प्रयोग किया है। पकड़े गए एक आतंकवादी से पूछताछ में पता चला कि इस नंबर का प्रयोग कर 7-8 करोड़ रुपये की मनी लॉन्ड्रिंग की है और इस रकम का 10 प्रतिशत आपको कमिशन के तौर पर मिला है।

आरोपी ने एक नंबर देकर कहा कि इस पर कॉल कर बात करो, ये आपके केस के जांच अधिकारी है। शिकायतकर्ता ने उस नंबर पर कॉल की तो आरोपी ने खुद को एनआईए एटीएस का सीनियर अधिकारी बताया और बोला कि आतंकवादी गतिविधि में आपका नाम होने के चलते हमारी टीम आपको गिरफ्तार करने आ रही है। आरोपी ने शिकायतकर्ता के सारे बैंक खातों व एफडी के रुपयों की जानकारी मांगी। । 9 दिसंबर को दो अलग-अलग नंबर से आरोपियों ने कॉल कर आरबीआई बैंक, सुप्रीम कोर्ट का पत्र, संपत्ति जब्त, गिरफ्तारी वारंट के दस्तावेज भेजे और एफडी तुड़वाकर सारे रुपये बैंक खाते में इकट्ठा करने को कहा।

आरोपियों ने दबाव बनाया कि जांच पूरी होने तक हमारे बैंक खातों में ये रुपये ट्रांसफर करो और जांच पूरी होने के बाद 15 दिन में रुपये वापस मिलेंगे। ऐसा न करने पर तुरंत गिरफ्तारी का डर दिखाया गया और संपत्ति कुर्क करने की बात कही। शिकायतकर्ता ने 11 दिसंबर को 40 लाख और 15 दिसंबर को 8 लाख रुपये आरटीजीएस कर दिए। 15 दिन तक इंतजार करने के बाद आरोपियों से संपर्क का प्रयास किया लेकिन बात नहीं हो सकी तो ठगी का अहसास हुआ। ब्यूरो

एप से 6 हजार का लोन लिया ब्लैकमेल कर वसूले 8.69 लाख

फरीदाबाद। बल्लभगढ़ सेक्टर-3 के रहने वाले युवक को इंस्टाग्राम पर मिले एप लिंक से लोन लेना महंगा पड़ गया। साइबर ठगों ने 6 हजार रुपये का लोन देकर युवक को ब्लैकमेल किया और न्यूड वीडियो व फोटो वायरल करने तक की धमकी दी। ठगों ने युवक से 6 हजार रुपये के लोन के बदले 8.69 लाख रुपये वसूल लिए। युवक ने दोस्त को इस बारे में बताया तो ठगी का पता चला और मामला पुलिस तक पहुंचा। पुलिस प्रवक्ता यशपाल सिंह ने बताया कि रविवार को साइबर क्राइम थाना बल्लभगढ़ पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू की है। पुलिस को दी शिकायत में सेक्टर-3 के रहने वाले युवक ने बताया कि 7 अगस्त को इंस्टाग्राम पर लोन एप का लिंक देखा। युवक को रुपयों का जरूरत थी तो उसने लिंक खोलकर सभी डिटेल भर दी और उसके खाते में 6 हजार रुपये आ गए। कुछ दिन बाद उसके नंबर पर व्हाट्सएप कॉल आई और इसके बाद ब्लैकमेल करने का खेल शुरू हुआ। ब्यूरो

उद्योग

उपराष्ट्रपति ने एनसीसी गणतंत्र दिवस शिविर 2026 का उद्घाटन किया

नई दिल्ली। उप-राष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन ने नई दिल्ली स्थित डीजी एनसीसी कैंप में एनसीसी गणतंत्र दिवस शिविर 2026 के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। एनसीसी के आदर्श वाक्य एकता-अनुशासन का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि अपने 78वें वर्ष में एनसीसी आज दुनिया का सबसे बड़ा वर्दीधारी युवा संगठन बन चुका है। पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व का जिक्र करते हुए कहा कि आत्मनिर्भर और विकसित भारत का सपना कुशल, अनुशासित और सेवा-भाव से प्रेरित युवाओं से साकार होगा, जिसमें एनसीसी की भूमिका अहम है।

हर्ल के प्रोजेक्ट पोषण के तहत 190 महिलाओं को मिला पौष्टिक भोजन

नई दिल्ली। हिंदुस्तान उर्वरक एवं रसायन लिमिटेड (हर्ल) ने अपनी सीएसआर पहल 'प्रोजेक्ट पोषण' के तहत ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर में पोषण जागरूकता एवं खाद्य वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया। यह कार्यक्रम परिचय फाउंडेशन के सहयोग से रघुनाथपुर और पाटिया क्षेत्र की ग्रामीण एवं शहरी झुग्गी-बस्ती समुदायों में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 190 वंचित महिलाओं को पौष्टिक खाद्य सामग्री के पैकेट वितरित किए गए। कार्यक्रम के दौरान हर्ल के उपाध्यक्ष (मानव संसाधन) और परिचय फाउंडेशन के प्रतिनिधि भी उपस्थित रहे।

पतंजलि के 32वें स्थापना दिवस पर हर्ल के एमडी डॉ. सिबा प्रसाद महांति रहे मुख्य अतिथि

नई दिल्ली। हिंदुस्तान उर्वरक एवं रसायन लिमिटेड (हर्ल) के प्रबंध निदेशक डॉ. सिबा प्रसाद महांति ने पतंजलि के 32वें स्थापना दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। समारोह के दौरान डॉ. महांति ने अपनी टीम के साथ पतंजलि परिसर का भ्रमण किया। उन्होंने जैविक खेती की पद्धतियों, मृदा परीक्षण में नए नवाचारों और मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन के एकीकृत तरीकों पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने बाबा रामदेव से आशीर्वाद भी प्राप्त किया। उन्होंने कहा कि इस सहभागिता के माध्यम से पर्यावरण-संवेदनशील कृषि, मृदा की उर्वरता बढ़ाने और किसान-केंद्रित कृषि विकास को आगे बढ़ाने की साझा प्रतिबद्धता को और मजबूती मिली।

आईआईटी रोपड़ में योगिक विज्ञान एवं समग्र विकास केंद्र का शिलान्यास

नई दिल्ली। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) रोपड़ में डॉ. ईशान अवधूत शिवानंद योगिक विज्ञान एवं समग्र विकास केंद्र का शिलान्यास किया गया। वंचित छात्रों के लिए 10 पूर्ण-वित्तपोषित छात्रवृत्तियों की भी घोषणा की गई। शिलान्यास समारोह की अध्यक्षता आईआईटी रोपड़ के निदेशक प्रो. राजीव अहुजा ने की। कार्यक्रम में योग, मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध डॉ. ईशान शिवानंद, बायोमेडिकल इंजीनियरिंग विभाग के प्रमुख डॉ. अथर्व पौंडारिक और हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. बिंदुकुमार कंसुपाडा भी उपस्थित रहे। प्रो. राजीव अहुजा ने कहा कि यह केंद्र छात्रों-शिक्षकों के संतुलित और स्वस्थ जीवन के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

सेल ने दिसंबर में दर्ज की रिकॉर्ड बिक्री

नई दिल्ली। देश की महारत्न सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) ने दिसंबर 2025 में अब तक की सबसे अधिक मासिक बिक्री दर्ज कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। कंपनी ने इस महीने 2.1 मिलियन टन इस्पात की बिक्री की, जो दिसंबर 2024 की 1.5 मिलियन टन बिक्री की तुलना में लगभग 37 प्रतिशत अधिक है। इस बिक्री से कंपनी को वित्तीय वर्ष 2025-26 में अपनी विकास गति बनाए रखने में मदद मिली है। अप्रैल से दिसंबर 2025 के बीच सेल की कुल बिक्री 14.7 मिलियन टन रही, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में यह आंकड़ा 12.6 मिलियन टन था। इस तरह बिक्री में करीब 17 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

पावरग्रिड ने आंध्रप्रदेश के कालिकिरी में 150 मेगावाट/300 एमडब्ल्यूएच बैटरी स्टोरेज प्रोजेक्ट हासिल किया

नई दिल्ली। पावरग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (पावरग्रिड) को आंध्र प्रदेश के कालिकिरी में 150 मेगावाट/300 एमडब्ल्यूएच स्टैंडअलोन बैटरी एनर्जी स्टोरेज सिस्टम (बीईएसएस) प्रोजेक्ट के लिए सफल बोलीदाता घोषित किया गया है। यह प्रोजेक्ट 400/220 केवी सबस्टेशन पर टैरिफ-आधारित प्रतिस्पर्धी बोली (टीबीसीबी) प्रक्रिया के तहत दिया गया है। यह प्रोजेक्ट बिल्ड-ओन-ऑपरेट (बीओओ) मॉडल के तहत वायबिलिटी गैप फंडिंग (वीजीएफ) और पावर सिस्टम डेवलपमेंट फंड (पीएसडीएफ) के सहयोग से विकसित किया जाएगा। आंध्र प्रदेश में कुल 1,000 मेगावाट/2,000 एमडब्ल्यूएच बीईएसएस क्षमता स्थापित करने की योजना का यह एक हिस्सा है। कालिकिरी बीईएसएस प्रोजेक्ट से ग्रिड लचीलापन और स्थिरता बढ़ेगी, पीक लोड प्रबंधन आसान होगा और नवीकरणीय ऊर्जा का अधिक प्रभावी उपयोग संभव होगा।

सेल को संचार में उत्कृष्टता के लिए आठ राष्ट्रीय पुरस्कार मिले

नई दिल्ली। देश की प्रमुख सार्वजनिक क्षेत्र की इस्पात कंपनी स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) को पब्लिक रिलेशंस सोसाइटी ऑफ इंडिया (पीआरसीआई) की ओर से आठ प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। ये पुरस्कार 13 से 15 दिसंबर, 2025 तक देहरादून में आयोजित 47वें ऑल इंडिया पब्लिक रिलेशंस कॉन्फ्रेंस के दौरान प्रदान किए गए। कंपनी ने जनसंपर्क अभियान में एआई का सर्वश्रेष्ठ उपयोग (एआई-संचालित न्यू बुलेटिन एआईसेल ट्रैकों), सर्वश्रेष्ठ विज्ञापन अभियान (महिला विश्व कप 2025 के लिए एआई आधारित अभियान), कॉर्पोरेट वेबसाइट (उपयोगकर्ता अनुभव और सूचना की सुलभता), सबसे प्रभावशाली इवेंट मैनेजमेंट ('इंडिया स्टील-2025' प्रदर्शनी), मेक इन इंडिया (रक्षा क्षेत्र), ई-न्यूजलेटर ('सेलट्रैक' के प्रभावी उत्पादन और प्रसारण), सर्वश्रेष्ठ इंटरनल संचार अभियान ('एआई एंड यू' प्रतियोगिता) और सस्टेनेबल डेवलपमेंट रिपोर्ट (2023-24 की कॉर्पोरेट सस्टेनेबिलिटी रिपोर्ट में डिजाइन और लेआउट) शामिल हैं। ये पुरस्कार सेल की संचार में नवीनता, बहुआयामी रणनीति को मान्यता देते हैं।

अखलाक केस के स्थानांतरण पर फैसला कल

ग्रेटर नोएडा। अखलाक मॉब लिंचिंग मामले में स्थानांतरण याचिका (टीए) पर गौतमबुद्ध नगर के जिला न्यायाधीश बुधवार को सुनवाई करेंगे। सुनवाई के बाद यह तय किया जाएगा कि मामला अतिरिक्त जिला न्यायाधीश की फास्ट ट्रैक कोर्ट (एफटीसी) में चलेगा या किसी अन्य अदालत में। आरोपियों के वकील ने 8 जनवरी को एफटीसी से किसी अन्य अदालत में मामले के स्थानांतरण के लिए याचिका दायर की थी। यह याचिका तब दायर की गई थी जब अखलाक की पत्नी इकरामन फास्ट ट्रैक कोर्ट में 23 दिसंबर के फैसले के बाद सुनवाई को दैनिक आधार पर बढ़ाने के बाद बयान दर्ज कराने आईं थीं। ब्यूरो

एजुकेशन & कॅरिअर

संघर्ष से भागिए मत, यही आपको मजबूत बनाता है।

अमर उजाला Job Alert

Real-time job alerts
amarujala.com/jobs

उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड

कॉन्स्टेबल के पदों पर योग्य उम्मीदवार करें आवेदन

32649 पद

आवेदन की अंतिम तिथि : 30 जनवरी, 2026
योग्यताएं : बारहवीं व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें : uppbpb.gov.in

एनसीईआरटी में आवेदन आमंत्रित ■ 173 पद

बिजनेस मैनेजर, प्रोडक्शन ऑफिसर आदि के पद खाली
आवेदन की अंतिम तिथि
16 जनवरी, 2026
योग्यताएं
स्नातक, स्नातकोत्तर व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
ncert.nic.in

यूआईआईसी में नौकरी के मौके ■ 153 पद

अप्रेंटिसशिप के लिए करें अप्लाई
आवेदन की अंतिम तिथि
20 जनवरी, 2026
आयु-सीमा
न्यूनतम आयु 21 वर्ष व अधिकतम आयु 28 वर्ष
यहां आवेदन करें
uiic.co.in

आरआरबी ने निकाली भर्ती ■ 312 पद

मुख्य विधि सहायक, लोक अभियोजक व अन्य पदों पर मौके
आवेदन की अंतिम तिथि : 29 जनवरी, 2026
वेतनमान : रुपये 19,900 से लेकर 44,900 प्रतिमाह
यहां आवेदन करें : indianrailways.gov.in

नालको में रोजगार की संभावनाएं ■ 110 पद

ग्रेजुएट इंजीनियर ट्रेनी के पदों पर रिक्तियां
आवेदन की अंतिम तिथि
22 जनवरी, 2026
वेतनमान
रुपये 40,000 से लेकर रुपये 1,40.000 प्रतिमाह
यहां आवेदन करें
nalcoindia.com

ईएसआईसी, दिल्ली में निकली भर्ती ■ 28 पद

सीनियर रेजिडेंट के पदों पर रोजगार के अवसर
आवेदन की अंतिम तिथि
20 जनवरी, 2026
योग्यताएं
एमबीबीएस, डीएनबी व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
esic.gov.in

योग्य उम्मीदवार करें आवेदन ...

- भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण, नई दिल्ली : निदेशक का पद खाली।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 21 जनवरी, 2026
- uidai.gov.in
- राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, नई दिल्ली : वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी के पदों पर आवेदन आमंत्रित।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 06 फरवरी, 2026
- ndma.gov.in

अपनी प्रतिक्रियाओं और सुझावों के लिए हमें udaan@amarujala.com पर ई-मेल करें।

गणितीय कौशल अब भी जरूरी है

भले ही एआई आपके बहुत से काम कर दे रहा हो, फिर भी सोचने और सही निर्णय लेने के लिए गणितीय समझ अनिवार्य है

हर्ष वी. मिश्रा
हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू

Harvard Business Review

आज हम जिस युग में जी रहे हैं, उसे अक्सर कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का युग कहा जाता है। रोबोट, स्मार्ट सॉफ्टवेयर और मशीन लर्निंग हमारे रोजमर्रा के कामों में तेजी से शामिल हो रहे हैं। बैंकिंग से लेकर शिक्षा और स्वास्थ्य तक, लगभग हर क्षेत्र में एआई का उपयोग बढ़ रहा है। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या गणितीय कौशल की जरूरत अब कम हो गई है? बिल्कुल नहीं। बल्कि, अब इसकी महत्वता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। एआई चाहे कितनी भी उन्नत क्यों न हो जाए, गणितीय कौशल हमारी समझ और निर्णय क्षमता का आधार बने रहेंगे। इसलिए शिक्षा प्रणाली और व्यक्तिगत प्रयास दोनों में यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि गणित केवल पाठ्यपुस्तक तक सीमित न रहे, बल्कि इसे सोचने और नवाचार करने का उपकरण बनाया जाए। एआई का सही उपयोग तभी संभव है, जब हमारे गणितीय कौशल मजबूत हों। यदि आप गणितीय और विश्लेषणात्मक कार्यों को कुशलता से करना चाहते हैं, तो आप तीन प्रमुख कौशल सीख सकते हैं और अभ्यास कर सकते हैं।

■ संख्यात्मक अंतर्ज्ञान विकसित करें
यह कौशल आपको जल्दी सोचने और सही अनुमान लगाने में मदद करता है। इसे सीखने का एक आसान तरीका 'स्मार्ट कैलकुलेटर' का इस्तेमाल है। इसमें पहले आप खुद जवाब का अनुमान लगाते हैं और अगर आपका अनुमान सही के करीब होता है, तो कैलकुलेटर सही जवाब दिखा देता है। अगर नहीं, तो आप दोबारा सोचकर कोशिश करते हैं। इस तरह अभ्यास करने से दिमाग संख्याओं के पैटर्न समझने लगता है और सही अनुमान लगाने की क्षमता बढ़ती है।

■ समस्या-समाधान ढांचा अपनाएं
किसी भी समस्या को हल करने के लिए एक स्पष्ट और व्यवस्थित तरीका अपनाना बहुत उपयोगी होता है। मैककिन्से पद्धति इसी सोच पर आधारित है, जिसमें पहले समस्या को ठीक से समझा जाता है, फिर केवल प्रासंगिक तथ्यों और अनुमानित गणित का उपयोग करके सरल परिकल्पनाएं बनाई जाती हैं। इन परिकल्पनाओं को डाटा और तर्क के आधार पर परखा जाता है। यह तरीका जटिल समस्याओं को छोटे और समझने योग्य हिस्सों में बांट देता है, जिससे समाधान निकालना आसान हो जाता है।

■ मानसिक गणित की तरकीबें सीखें
कुछ विशेष रणनीतियां जटिल समस्याओं को सरल और हल करने योग्य बनाती हैं। उदाहरण के लिए, आयामी विश्लेषण से आप मात्राओं और मात्रक को समझकर गलतियों से बच सकते हैं, आसान मामलों पर विचार करके बड़ी समस्या को छोटे हिस्सों में बांट सकते हैं, और समूहीकरण द्वारा चीजों को समूह में रखकर समाधान आसान बनाते हैं। इसके अलावा, चित्र प्रमाण का उपयोग करके आप समस्या को विजुअली समझ सकते हैं, क्रमिक सन्निकटन यानी किसी सही उत्तर या लक्ष्य तक धीरे-धीरे व बार-बार सुधार करते हुए पहुंच सकते हैं और सादृश्य के आधार पर तर्क करके किसी जानी-पहचानी स्थिति से नई समस्या का हल निकाल सकते हैं। इन तरकीबों का अभ्यास करने से मानसिक गणित तेज और प्रभावी बनता है।

आईआईटी, दिल्ली का समर इंटर्नशिप

इंटर्नशिप प्रोग्राम

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), दिल्ली की इंट्रिंसिक लैब द्वारा समर इंटर्नशिप प्रोग्राम के लिए छात्रों से आवेदन आमंत्रित किए जा रहे हैं। इस कार्यक्रम के लिए पोस्ट-डॉक्टोरल शोधकर्ता, पीएचडी उम्मीदवार, मास्टर तथा स्नातक डिग्री के छात्र पात्र हैं। इंटर्नशिप के दौरान प्रतिभागियों को नैनोमैग्नेटिक कंप्यूटिंग, न्यूरोमॉर्फिक एआई, हार्डवेयर सिक्योरिटी और नेक्स्ट-जेनरेशन टेक्नोलॉजी जैसे क्षेत्रों में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। आवेदन करते समय उम्मीदवारों को अपना सीवी अपलोड करना होगा। इसके साथ ही एक प्रेरणा पत्र तथा अपने प्रासंगिक कौशल और पसंदीदा विषयों का वर्णन करने वाला संक्षिप्त शोध विवरण भी प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा। इच्छुक उम्मीदवार आधिकारिक लिंक tinyurl.com/5n8cwv52 पर जाकर ऑनलाइन माध्यम से आवेदन कर सकते हैं।

आईसीडीई फेलोशिप प्रोग्राम 2026-27

आवेदन आमंत्रित

द न्यू स्कूल द्वारा इंस्टीट्यूट फॉर द कोऑपरेटिव डिजिटल इकोनॉमी (आईसीडीई) फेलोशिप प्रोग्राम 2026-27 के लिए आवेदन आमंत्रित किए जा रहे हैं। यह फेलोशिप उन उत्कृष्ट शोधकर्ताओं के लिए है, जो यह अध्ययन कर रहे हैं कि सहकारी समितियां, संघ और एकजुटता-अर्थव्यवस्था से जुड़े संगठन कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डाटा-गहन अवसंरचनाओं सहित डिजिटल प्रणालियों के साथ कैसे जुड़ते हैं। इस फेलोशिप के लिए पीएचडी उम्मीदवार, पोस्ट-डॉक्टोरल शोधकर्ता, प्रारंभिक कॅरिअर के पेशेवर अथवा समकक्ष शोध अनुभव रखने वाले अभ्यर्थी पात्र हैं। आवेदकों का अपने शोध के अंतर्गत किसी विशिष्ट सहकारी समिति, संघ या सामूहिक पहल से जुड़ा होना या उनके साथ जुड़ने की स्पष्ट योजना होना आवश्यक है। आवेदन करने की अंतिम तिथि 20 जनवरी, 2026 निर्धारित की गई है। योग्य आवेदक आधिकारिक लिंक tinyurl.com/77x9nsww पर जाकर ऑनलाइन माध्यम से आवेदन कर सकते हैं।

एग्जाम अलर्ट | हफ्ते की परीक्षाएं

बिहार पुलिस एसआई परीक्षा-2025

- **परीक्षा की तिथि :** 18 जनवरी, 2026
- इस परीक्षा में सामान्य ज्ञान एवं समसामयिक मुद्दों से संबंधित कुल 100 प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए दो अंक निर्धारित होंगे। परीक्षा की अवधि दो घंटे निर्धारित की गई है।
- **यहां से प्रवेश-पत्र डाउनलोड करें** tinyurl.com/3mzp5bph

यूपी पुलिस कंप्यूटर ऑपरेटर स्टेज-II टाइपिंग टेस्ट

- **परीक्षा की तिथि :** 18 व 19 जनवरी, 2026
- यह एक अर्हकारी परीक्षा होगी। इसमें कंप्यूटर टाइपिंग की गति हिंदी में 25 शब्द प्रति मिनट तथा अंग्रेजी में 30 शब्द प्रति मिनट होना अनिवार्य है। हिंदी और अंग्रेजी टाइपिंग के लिए क्रमशः 15-15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- यहां से प्रवेश-पत्र डाउनलोड करें tinyurl.com/2nce3ex8

खुद को परखें

1. कमला जलविद्युत परियोजना किस राज्य में स्थित है?
   (a) असम
   (b) अरुणाचल प्रदेश
   (c) मणिपुर
   (d) ओडिशा
2. वाइमर त्रिभुज किन तीन देशों का राजनीतिक समूह है?
   (a) फ्रांस, जर्मनी, पोलैंड
   (b) इटली, स्पेन, फ्रांस
   (c) रूस, भारत, चीन
   (d) भारत, नेपाल, भूटान
3. खान सुरक्षा महानिदेशालय किस मंत्रालय के अधीन कार्य करता है?
   (a) कोयला मंत्रालय
   (b) गृह मंत्रालय
   (c) श्रम और रोजगार मंत्रालय
   (d) भारी उद्योग मंत्रालय

उत्तर- *1.b, 2.a, 3.c*

बोइंग ई-4बी नाइटवॉच

सामान्य ज्ञान

■ क्या है
अमेरिकी सेना का 'प्रलय का विमान' एक गुप्त उड़ता हुआ कमांड सेंटर है, जो संकट में सैन्य संचालन संभालता है।

■ चर्चा में क्यों
मौजूदा भू-राजनीतिक तनाव के बीच, बोइंग ई-4बी नाइटवॉच की लॉस एंजिलिस में दुर्लभ उपस्थिति ने लोगों में दहशत पैदा कर दी है।

■ इसकी विशेषताएं
यह बोइंग 747-200 पर आधारित एक बेहद मजबूत विमान है, जो 12 घंटे तक बिना ईंधन भरे उड़ सकता है, 30,000 फीट से ऊपर जा सकता है और परमाणु व इलेक्ट्रॉनिक हमलों से सुरक्षित रहता है। इसमें 100 से ज्यादा लोग काम कर सकते हैं।

■ कैसे कार्य करता है
बड़े संकट में, जब जमीनी दफ्तर ठप हों, यह विमान आसमान से सरकार-सेना को निर्देश देता और संपर्क बनाए रखता है। यह परमाणु कमान प्रणाली का अहम हिस्सा है। ऐसे चार विमान हैं और एक हमेशा अलर्ट पर रहता है।

ऊर्जा — Life Dream Love

छींक-छींक कर हो गया है बुरा हाल?

अगर आपको बार-बार छींक आ रही है या गले और आंखों से जुड़ी समस्याएं हो रही हैं, तो इसे सिर्फ जुकाम समझकर नजरअंदाज न करें। ये एलर्जिक राइनाइटिस के भी संकेत हो सकते हैं।

ठंड में रूखापन बढ़ने से स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियां बढ़ जाती हैं। इससे नाक बंद होना, लगातार छींक आना, आंखों में पानी, सिरदर्द और गले में खराश जैसी समस्याएं अधिक होती हैं। ये कुछ ही दिनों में ठीक भी हो जाते हैं और कई बार लंबे समय तक बने रहते हैं। ये एलर्जिक राइनाइटिस के लक्षण हो सकते हैं।

एलर्जिक राइनाइटिस (हे फीवर) हवा में मौजूद सूक्ष्म कणों के प्रति एक एलर्जिक प्रतिक्रिया है। जब नाक या मुंह से एलर्जी पैदा करने वाले पदार्थ (एलर्जेन) शरीर के अंदर प्रवेश करते हैं, तो प्रतिरक्षा प्रणाली प्रतिक्रिया करते हुए रक्त में प्राकृतिक रसायन (हिस्टामाइन) छोड़कर एलर्जेन को बाहर निकालने का प्रयास करती है। इससे नाक, आंख और गले की म्यूकस मेम्ब्रेन (श्लेष्मा झिल्ली) में सूजन तथा खुजली होती है और नाक में बलगम बनने लगता है। इस रासायनिक बदलाव की वजह से लोगों को बुखार भी आ जाता है। एलर्जिक राइनाइटिस का समय पर जांच और सही इलाज बेहद जरूरी होता है, क्योंकि इलाज न मिलने पर इस एलर्जी के कारण अस्थमा, साइनोसाइटिस, नेजल पोलिप्स, साइनस और सूंघने की क्षमता कम हो सकती हैं।

■ ठंड में क्यों होती है समस्या
इस मौसम में बहने वाली ठंडी और शुष्क हवा नाक की नलियों को संवेदनशील बना देती है। घरों में धूल-मिट्टी का जमाव, हीटर का इस्तेमाल और कम वेंटिलेशन भी वातावरण में मौजूद एलर्जेन को अधिक सक्रिय बना देते हैं। इससे एलर्जिक राइनाइटिस ट्रिगर हो सकती है।

■ क्या हैं कारण
एलर्जिक राइनाइटिस तब होता है, जब इम्यून सिस्टम कुछ तत्वों को हानिकारक समझकर प्रतिक्रिया करता है। यह प्रतिक्रिया सबसे ज्यादा घर की कालीन, डोरमेट, पर्दे, बिस्तर और फर्नीचर के धूल के कण, धुआं, सर्दी, डस्टमाइट्स (धूल में रहने वाले छोटे जीव) और पौधों के परागकणों की वजह से हो सकती है। इनके अलावा सॉफ्ट टॉयज, पालतू जानवरों की रूसी, कॉकरोच, फंगस, किसी विशेष दवा या किसी खाद्य सामग्री से भी एलर्जी हो सकती है। सिगरेट या लकड़ी-कोयले का धुआं, हेयर स्प्रे और इत्र भी इसका कारण बन सकता है। यदि परिवार में एलर्जी, अस्थमा या एक्जिमा का इतिहास है, तो इसका जोखिम बढ़ जाता है।

जुकाम है या एलर्जिक राइनाइटिस

एलर्जिक राइनाइटिस के लक्षण आम सर्दी-जुकाम जैसे लगते हैं, इसलिए इस संक्रमण की पहचान होने में देरी होती है। फर्क यह है कि एलर्जी के लक्षण लंबे समय तक बने रहते हैं और बार-बार लौट सकते हैं, जबकि जुकाम वायरस की वजह से होता है और कुछ दिनों में ठीक हो जाता है। कई बार तो लोगों को पता नहीं होता कि उन्हें किस चीज से एलर्जी है। ऐसे मामलों में स्किन प्रिक टेस्ट (एसपीटी) कराना चाहिए। इसमें संभावित एलर्जेन की थोड़ी मात्रा व्यक्ति की त्वचा में डाली जाती है। अगर व्यक्ति को उस चीज से एलर्जी होती है तो 15 से 20 मिनट में उस जगह पर मच्छर के काटने जैसा निशान बन जाता है। इससे एलर्जी की वजह समझ पाना आसान होता है। इसके उपचार के लिए एंटीहिस्टामाइन, एंटी-एलर्जिक और एंटी-आईजीई जैसी दवाओं का उपयोग किया जाता है।

डॉ. शिप्रा आनंद
एसोसिएट प्रोफेसर
पल्मोनरी मेडिसिन
मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज
दिल्ली

■ कब है इम्यूनोथेरेपी की जरूरत
इम्यूनोथेरेपी एक तरह का इलाज है, जिसमें शरीर को धीरे-धीरे एलर्जी वाले एलर्जेन के संपर्क में लाया जाता है। इससे शरीर उस एलर्जेन के प्रति सहनशील बन जाता है और एलर्जी की तीव्रता कम हो जाती है। यह थेरेपी शॉट्स या अंडर-द-टंग ड्रॉप्स/टैबलेट के रूप में दी जाती है। इसमें स्टेरॉयड या एंटीहिस्टामाइन नहीं होते, जिससे इसके दुष्प्रभाव कम होते हैं।

■ बचाव से मिलेगी मदद
तापमान में अचानक परिवर्तन होने पर बचाव करें। एकदम गरम से ठंडे और ठंडे से गरम वातावरण में न जाएं। इससे बचने के लिए घर के बिस्तर की चादर और तकिए के कवर को बदलें। इसके साथ ही, बाहर से आने के बाद हाथ-पैरों को साबुन से धोएं। अक्सर धूल से यह समस्या होती है, इसलिए झाड़ू की जगह वैक्यूम क्लीनर का इस्तेमाल करें या गीला पोछा लगाएं। मास्क का इस्तेमाल करें। पर्दे, चादर एवं कालीन को समय-समय पर धूप दिखाएं। इसके अलावा घरेलू उपाय जैसे- गरम पानी पीएं और अदरक, काली मिर्च और लौंग की चाय या काढ़े का सेवन भी कर सकते हैं। इसके अलावा आप विटामिन सी से भरपूर फूड्स का सेवन करें। नियमित व्यायाम और विश्राम के लिए समय निकालें। गरम पानी के स्नान करें। इसके लक्षण दिखने पर जांच और उपचार करवाएं।

टिप्स

स्वस्थ मेरुदंड के लिए कोणासन

नियमित योगाभ्यास से सकारात्मक ऊर्जा बनी रहती है। कोणासन मेरुदंड को लचीला बनाने के लिए अत्यंत लाभकारी होता है। इससे कंधे मजबूत बनते हैं और पसलियों में लचीलापन आता है। इसके नियमित अभ्यास से फेफड़ों की कार्यक्षमता बढ़ती है और दिल स्वस्थ रहता है। इस योगाभ्यास से कमर के पार्श्व भाग में जमा वसा को कम करने में मदद मिलती है। कोणासन करने के लिए सीधे खड़े हो जाएं। दोनों पैरों के बीच दो से ढाई फीट की दूरी रखें। दोनों हाथ जांघों को स्पर्श करते रहें। दायां हाथ धीरे-धीरे बगल से ऊपर उठाएं, हथेली को आकाश की ओर करते हुए हाथ को सिर के ऊपर सीधा तान लें। अब कमर को बाईं ओर झुकाएं

ढाकाराम
योगाचार्य

और बाएं हाथ की उंगलियों से बाएं पैर के पंजे को छूने का प्रयास करें। दायां कनपटी से लगा हुआ रहे। इस स्थिति में कम से कम 1 मिनट तक रहें। धीरे-धीरे समस्थिति में लौटें। अब यही प्रक्रिया दूसरी ओर (दाईं ओर) से करें। कोणासन करने के लिए कुछ सावधानियां जरूर बरतें। शरीर का केवल ऊपरी भाग ही झुकाएं। कोहनियों और घुटनों को सीधा रखें। दोनों पैरों के पंजे सीधे रखें। दायें या बायें झुकते समय आगे या पीछे न झुकें, केवल पार्श्व दिशा में झुकें। झुकते समय कमर से नहीं, बगल से झुकें। गर्दन को तनाव न दें, उसे सामान्य स्थिति में रखें। दोनों पैरों पर समान भार रखें। कूल्हों को थोड़ा संकुचित रखें। आसन के बाद आंखें बंदकर परिवर्तन को महसूस करें।

आज का दिन

13 जनवरी, 1942

अमेरिकी उद्योगपति हेनरी फोर्ड ने सोयाबीन-आधारित प्लास्टिक कार के लिए पेटेंट प्राप्त किया था। यह धातु की तुलना में हल्की थी और इसका उद्देश्य कृषि-उद्योग को जोड़ना था।

- **1884 :** अमेरिकी गायिका सोफी टकर का जन्म हुआ था।
- **1941 :** आयरिश लेखक जेम्स जॉयस का निधन हुआ था।
- **1968 :** अमेरिकी गायक जॉनी कैश ने 'जॉनी कैश एट फॉल्सम' एल्बम लाइव रिकॉर्ड किया था।
- **1990 :** अफ्रीकी-अमेरिकी डगलस वाइल्डर वर्जीनिया के पहले गवर्नर बने थे।

व्रत त्योहार

आज : माघ कृष्ण पक्ष दशमी। **कल :** मकर संक्रांति, पोंगल, श्रीगंगासागर मेला, शिशिर ऋतु, सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोले।
राहुकाल : दिन में 12.00 से 13.30 तक।

कल का पंचांग

विक्रमी संवत 2082, 24 पौष मास शक 1947, माघ मास 01 प्रविष्टे, 24 रज्जब हिजरी 1447, माघ कृष्ण पक्ष एकादशी 17.52 तक उपरांत द्वादशी, अनुराधा नक्षत्र 27.03 तक उपरांत ज्येष्ठा नक्षत्र, गंड योग 19.55 तक उपरांत वृद्धि योग, बालव करण 17.52 तक उपरांत कौलव करण, चंद्रमा वृश्चिक राशि में दिन-रात।

■ सूर्योदय : 07.18
■ सूर्यास्त : 17.41
(भारतीय मानक समयानुसार)

amarujala.com/astrology

राशिफल

■ पं. विनोद त्यागी

मेष : मानसिक चिंतन बना रहेगा। व्यक्तिगत संबंध सहायक रहेंगे। नौकरी में सम्मान बना रहेगा।

वृष : प्रभावी व्यक्ति का सहयोग मिलेगा। नौकरी प्राप्ति में सफल रहेंगे। कानूनी मामले में विजय मिलेगी।

मिथुन : आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी। कार्य दक्षता का लाभ मिलेगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

कर्क : सहोदरों का सहयोग मिलेगा। नौकरी में दौड़-भाग लगी रहेगी। संपत्ति के अटके कार्यों में सफलता मिलेगी।

सिंह : सामाजिक कार्यों में रुचि रहेगी। नई योजना में सफलता मिलेगी। राजनीतिक संबंध सहायक रहेंगे।

कन्या : मानसिक उलझन बनी रहेगी। कॅरिअर के प्रति चिंता बनी रहेगी। पठन-पाठन में अरुचि रहेगी।

तुला : नौकरी में उन्नति के संकेत मिलेंगे। सहोदरों का सहयोग मिलेगा। व्यवसाय में विस्तार एवं लाभ होगा।

वृश्चिक : नौकरी में मन नहीं लगेगा। विरोधी पक्ष से सावधानी बरतें। व्यवसाय में आय-व्यय सम रहेंगे।

धनु : पूर्व नियोजित कार्य सफल होगा। समाज में मान सम्मान बढ़ेगा। संपत्ति में वृद्धि के अवसर मिल सकते हैं।

मकर : दिनमान सामान्य रहेगा। नौकरी में वर्चस्व बना रहेगा। नौकरी में अधिकारियों का सहयोग मिल सकता है।

कुंभ : मनोत्साह बनाए रखें। समाज में सम्मान बढ़ेगा। नए कार्य में व्यस्त रहेंगे। नौकरी में सम्मान बढ़ सकता है।

मीन : राजकाज में सफलता मिल सकती है। समाज में लोकप्रियता बनी रहेगी। नौकरी में मान-सम्मान बना रहेगा।

जन्मदिन

अध्ययन सुमन, अभिनेता

इस वर्ष योजनाओं में सामान्य अवरोध आएंगे। विवाह एवं संतान सुख की दृष्टि से वर्ष अनुकूल रहेगा। आर्थिक क्षेत्र में समृद्धि की ओर बढ़ेंगे। संपत्ति में वृद्धि हो सकती है। आय का स्थायी साधन बन सकता है। विरोधी परास्त होंगे। व्यावसायिक धन लाभ एवं साख में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

सुडोकू

2	1				6	9		
		5		8		1		
					4			5
	8	2	5					
			2		7			
					1	2	9	
9			3					
		1		2		5		
		8	6				3	7

सुडोकू 81 वर्गों का ग्रिड है, जो 9 वर्गों के ब्लॉक में बंटा हुआ होता है। कुछ वर्गों के अंक लिखे हैं और खाली वर्गों में 1 से लेकर 9 तक के अंक लिखने होते हैं। कोई नंबर 1 पंक्ति, कॉलम या 9 वर्ग वाले छोटे ब्लॉक में दोबारा नहीं आ सकता है।

उत्तर

2	1	3	7	5	6	9	8	4
4	6	5	9	8	2	1	7	3
8	7	9	1	3	4	6	2	5
6	8	2	5	9	3	7	4	1
1	9	4	2	6	7	3	5	8
3	5	7	8	4	1	2	9	6
9	4	6	3	7	5	8	1	2
7	3	1	4	2	8	5	6	9
5	2	8	6	1	9	4	3	7

डेली हेल्थ कैप्सूल

नागरमोथा के सेवन से मिलते हैं कई लाभ

नागरमोथा में कई औषधीय गुण होते हैं। आयुर्वेद में इसे कई बीमारियों से बचाव करने वाला माना जाता है।

नागरमोथा में अनेक स्वास्थ्यवर्धक गुण पाए जाते हैं। इसमें औषधीय गुण मुख्य रूप से इसकी जड़ और छोटी गांठ वाले ट्यूबर में पाए जाते हैं। इन्हें सुखाकर या ताजा रूप में चूर्ण, काढ़ा, तेल या लेप बनाने में इस्तेमाल किया जाता है। नागरमोथा अक्सर खेतों या बगीचों में खरपतवार की तरह उगता है। नागरमोथा की जड़ में मौजूद शक्तिशाली तत्व भूख बढ़ाते हैं। पाचन क्रिया को तेज करते हैं। साथ ही पेट के कीड़ों से भी छुटकारा दिलाते हैं। इसके सेवन से पेट में मरोड़ और दस्त की समस्याएं दूर होती हैं। पीरियड्स के दौरान नागरमोथा का सेवन करने से पेट में ऐंठन और हैवी ब्लीडिंग को भी कम करने में मदद मिलती है। इसमें मौजूद एंटीओबेसिटी गुण शरीर में जमा अतिरिक्त चर्बी को कम करने में सहायता करते हैं। नागरमोथा में मौजूद एंटीबैक्टीरियल गुण त्वचा को साफ और स्वस्थ बनाने में मदद करते हैं। मुंहासे और दाग-धब्बे कम करने के लिए इसके पाउडर का लेप लगाया जा सकता है। पुराने या बार-बार आने वाले बुखार में इसका काढ़ा शरीर के तापमान को सामान्य करने और प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मदद करता है।

क्या कहते हैं विशेषज्ञ

गर्भावस्था, दुग्धपान कराने वाली महिलाएं या कब्ज से परेशान लोग नागरमोथा का सेवन न करें। यदि आप मधुमेह या ब्लड प्रेशर की दवाएं ले रहे हैं, तो आयुर्वेद चिकित्सक से परामर्श जरूर करें।
-डॉ. आर. पी. पाराशर
वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्सक

हिन्दुस्तान
1936
सत्य • सार्थक • सदैव

ईरान में बगावत

ईरान में चल रही बगावत पर पूरी दुनिया की निगाह स्वाभाविक है। ईरान में सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई के नेतृत्व वाली मजहबी सरकार के खिलाफ लगातार तीसरे सप्ताह राष्ट्रव्यापी विरोध-प्रदर्शन हो रहे हैं। इसमें महिलाओं की बड़ी भागीदारी है और वे हिजाब या बुर्के से आजादी के लिए बेचैन लग रही हैं। ईरान में बदलाव चाहने वालों ने एक अलग ही ध्वज बना लिया है और जहां भी मौका मिल रहा है, वहीं वे ईरान के वर्तमान ध्वज को हटाकर अपना ध्वज लगा दे रहे हैं। ऐसा नहीं है कि ईरानी प्रशासन चुपचाप सब कुछ देख रहा हो। प्रतिदिन वहां लोग मारे जा रहे हैं। दूसरी ओर, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि अमेरिका अशांति पर कड़ी नजर रख रहा है और हरसंभव विकल्पों पर विचार कर रहा है। एक बड़ी आशंका यह है कि अमेरिका सैन्य हस्तक्षेप कर सकता है। फिलहाल, वह ईरान में विरोध-प्रदर्शनों को लगातार हवा दे रहा है और इसके नतीजे घातक हो सकते हैं।

क्या अमेरिका पूरी सावधानी से ईरान में बदलाव को अंजाम देगा? क्या बाकी पश्चिमी देश अमेरिका या ईरान में बदलाव के पक्ष में हैं? ध्यान रहे, साल 2022 में भी ईरान में बदलाव के लिए प्रदर्शन हुए थे, लेकिन वहां की सरकार ने उस विरोध को कुचल दिया था। इस बार भी यही हो रहा है, विरोध को बेरहमी से कुचला जा रहा है। वर्तमान शासन को भी अपने बचाव का हक है। वैसे, एक बड़ा जोखिम यह है कि विद्रोह को हवा देकर अमेरिका पीछे न हट जाए। दुनिया में अनेक देश हैं, जहां पर ऐसे विरोध हुए हैं, कभी लोकतंत्र के पक्ष में, तो कहीं कट्टरपंथ के खिलाफ, लेकिन अक्सर देखा गया है कि एक सीमा के बाद पश्चिमी देश पीछे हट जाते हैं। आज यूक्रेन अगर युद्ध झेल रहा है, तो इसके लिए पश्चिमी देश और नाटो के देश भी जिम्मेदार हैं। किसी को विरोध के लिए उकसा देना आसान है, लेकिन विरोधियों की प्राण-रक्षा के लिए जमीन पर उतरना मुश्किल है। जब कोई देश तबाह होने लगता है, तब उसके निकट समर्थक भी मुंह चुराने लगते हैं। अमेरिका यह बात जानता है कि ईरानी प्रदर्शनों में 540 से अधिक लोग मारे गए हैं और 10,000 से ज्यादा लोग गिरफ्तार हुए हैं। इन देशों में जो कट्टरता देखी जाती है, वह अपने साथ बर्बरता भी लाती है। बगावत करने वालों को बर्बरता झेलनी पड़ती है। यह दुआ जरूर करनी चाहिए कि ईरान में कम से कम बर्बरता हो। ईरान में अमेरिका क्या इंसानियत को लहूलुहान होने से बचा सकता है?

किसी को विरोध के लिए उकसा देना आसान है, विरोधियों की प्राण-रक्षा के लिए जमीन पर उतरना मुश्किल है। बेशक, यह ईरान की बेहतरी की उम्मीद का वक्त है।

ईरान में बहुत कुछ ऐसा हो रहा है, जो पहले नहीं हुआ था। वहां इंटरनेट सेवा को सरकार ने रोक दिया है, लेकिन एलन मस्क की मदद से अमेरिका वहां इंटरनेट सेवा बहाल रखना चाहता है। इसके बावजूद अमेरिका अगर जमीनी स्तर पर नहीं उतरेगा और विरोधियों को केवल बाहर से समर्थन देता रहेगा, तो यकीन मानिए, ईरान अपनी नई पीढ़ी के उन तमाम मर्दों और औरतों को गंवा देगा, जो बदलाव के पक्ष में बिगुल बजा रहे हैं। ध्यान रहे, साल 1979 में सत्ता से हटाए गए ईरानी शाह के अमेरिका में रहने वाले बेटे रजा पहलवी भी बगावत को हवा दे रहे हैं। वह लोकतांत्रिक सरकार की ओर बदलाव का नेतृत्व करने के लिए ईरान लौटने को तैयार हैं। यह तरीका भी निंदनीय है। ईरान में नया निजाम अभी दूर की कौड़ी है, लेकिन दूर देश में बैठा एक शख्स नया बादशाह बनने के लिए तैयार है। लड़ने या बदलाव चाहने का यह सलीका सही नहीं है। यहां सवाल किसी शासन को बचाने या हटाने का नहीं, सिर्फ इंसानियत का है और वह हर हाल में बची रहनी चाहिए।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 13 जनवरी, 1951

मानव कल्याण की भावना

भारत की राजधानी में तीन अन्तर्राष्ट्रीय इंजीनियरी सम्मेलन प्रारंभ हुए हैं। साथ ही एक अन्तर्राष्ट्रीय इंजीनियरिंग प्रदर्शनी भी आयोजित की गई है। इंजीनियरी सम्मेलनों के संयुक्त अधिवेशन का उद्घाटन भारत के गृह मंत्री श्री राजगोपालाचार्य ने किया। दुनिया की मौजूदा परिस्थितियों में, जबकि महायुद्ध के बादल मंडरा रहे हैं, इन सम्मेलनों का विशेष महत्व है। ये सम्मेलन मनुष्य के रचनात्मक प्रयासों के सूचक हैं। उनसे यह पता चलता है कि मानव जाति की बुद्धि का अभी बिल्कुल दीवाला नहीं निकल गया है। दुनिया के छोटे और बड़े राष्ट्र जाति, देश, धर्म और विचारधाराओं के भेदों को भूलकर आज भी एक दूसरे के साथ सहयोग कर सकते हैं। इस सहयोग की भावना में ही विश्व शांति के बीज छिपे हुए हैं। जब तक मानव कल्याण की यह भावना, जिससे प्रेरित होकर दुनिया के विभिन्न राष्ट्रों के इंजीनियर भारत की भूमि में एकत्र हुए हैं, दुनिया के लोगों में जीवित रहेगी, तब तक मानव जाति का भविष्य अन्धकारमय नहीं हो सकता।

स्वतन्त्र भारत की शक्तियां आज विशेष रूप से युद्ध के खतरे का निवारण करने और विश्व शांति को सुरक्षित करने में लग रही हैं। दुनिया के अनेक भागों में अभाव और दरिद्रता का बोलबाला है। विज्ञान की समस्त प्रगति के बावजूद, लोगों का जीवन स्तर गिरा हुआ है। लोगों के इस जीवन स्तर को ऊंचा उठाने के लिए भारी रचनात्मक प्रयासों की आवश्यकता है।... दुनिया के कुछ देश औद्योगिक उन्नति और भौतिक समृद्धि की दौड़ में काफी आगे निकल गये हैं। इसके विपरीत एशिया और दूर पूर्व के देशों पर भाग्य उतना कृपालु नहीं रहा। वे अभी भी औद्योगिक दृष्टि से अल्पविकसित हैं। दुनिया का उन्नत और अवनत, समृद्ध और कंगाल इस प्रकार दो भागों में विभक्त रहना खतरनाक है। इस तथ्य को दुनिया के समृद्धिशील देश भी अनुभव करते जाते हैं। दुनिया के वर्तमान तनाव की जड़ में यह विषमता काम कर रही है। दुनिया के औद्योगिक दृष्टि से उन्नत देशों के पास उस ज्ञान की पूंजी है, जो अल्प विकसित देशों को उनके उन्नति के प्रयासों में बहुत सहायक हो सकती है। वर्तमान इंजीनियरिंग सम्मेलनों में दुनिया के 35 राष्ट्रों का भाग लेना इस बात का परिचायक है कि ये देश अल्पविकसित देशों को सहायता देने के लिए प्रस्तुत हैं।

किताबों से नाता कभी न टूट पाएगा

राय की राय
यहां स्कैन करें

विभूति नारायण राय | पूर्व कुलपति व साहित्यकार

पुस्तक मेले में घूमते हुए मुझे पिछले कुछ समय से सबसे ज्यादा दिए जाने वाले इस तर्क की व्यर्थता भी समझ में आई कि इंटरनेट ने पुस्तकों को अप्रासंगिक बना दिया है।

एक शिकायत मैं पिछले पचास वर्षों से सुनता आ रहा हूं। विद्वत-जन बड़े चिंतित स्वर में घोषित करते रहे हैं कि किताबों के पाठक ही नहीं बचे हैं। अभी मैंने लिखना शुरू ही किया था कि इस तरह के आप्त वचन कानों में पड़ने लगे और कई बार मेरे निराश मन में उथल-पुथल हुई कि जब कोई पढ़ने वाला ही नहीं है, तो फिर लिखा किसके लिए जाए? गनीमत हुई कि मैंने देख लिया कि जो लेखक दुखी थे कि उन्हें कोई पढ़ता नहीं, वे साल-दर-साल अपनी नई किताबें छपवाते जा रहे थे और जो प्रकाशक रॉयल्टी देते समय किताबें न बिकने का रोना रोते रहते, वे हर साल अपने कैटलॉग में अतिरिक्त पन्ने जोड़ रहे थे। इसलिए मेरा लिखना भी जारी रहा।

सबसे दिलचस्प तो पिछली शताब्दी के अंतिम दशक में *हँस* के संपादक राजेंद्र यादव की घोषणा थी कि यह समय इतना रचना-विरोधी है कि अब लिखने का कोई कारण नहीं बचा। यह अलग बात है कि भाई लोगों ने न लिखने के कारणों पर ही खूब लिखा। हाल ही में उपन्यासकार, कवि विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यास *दीवार में खिड़की रहती थी* की साल भर की रॉयल्टी तीस लाख रुपये देकर एक प्रकाशक ने यह भ्रम भी तोड़ दिया कि पुस्तकें बिकती नहीं।

इस साल नई दिल्ली के विश्व पुस्तक मेले में प्रवेश के लिए एक किलोमीटर लंबी कतार देखकर मन आश्वस्त हो गया कि न सिर्फ पाठक कम नहीं हुए हैं, बल्कि खरीदकर पढ़ने वालों की संख्या अभी भी अच्छी-खासी है। इतनी भीड़ तो पटना या कोलकाता के पुस्तक मेलों में दिखती है, पर अबकी बार देश की राजधानी में भी दिख रही थी। देश के दूर-दूर के हिस्सों से पुस्तक प्रेमी मेले में आए थे और एक-दूसरे के कंधे से कंधा रगड़ते हुए न सिर्फ किताबें उलट-पुलट रहे थे, बल्कि खरीद भी रहे थे। हर साल की तरह इस बार भी मेरी दिलचस्पी यह जानने की थी कि किस तरह की पुस्तकें बिक रही हैं? बच्चों के स्टॉलों पर हर साल की तरह भीड़ थी। वे अपने अभिभावकों की झिड़कती नजरों की अवहेलना करते हुए किताबें उलट-पलट रहे थे, उन्हें गिरा-पड़ा रहे थे और खरीदवाने की जिद कर रहे थे। दूसरे ज्यादातर स्टॉल भी अपनी क्षमता भर भरे हुए थे।

पिछले कुछ वर्षों से मेले में घूमते समय मेरी दिलचस्पी यह समझने में भी रही है कि किस तरह की पुस्तकें पढ़ी जा रही हैं? मैंने इस बार ज्यादा समय हिंदी पुस्तकों के बीच बिताया और यह देखकर मन प्रसन्न हुआ कि पिछले कुछ वर्षों की तरह इस बार भी ज्यादा मांग कथेतर साहित्य की थी। कंप्यूटर, इंजीनियरिंग, मेडिकल, इतिहास, मीडिया या अंतरराष्ट्रीय संबंध जैसे विषयों पर पुस्तकों की भरमार थी। ज्योतिष, भूत-प्रेत, जादू-टोने की किताबों की भी जबरदस्त मांग थी। एक स्टॉल पर एआई, यानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर उपलब्ध किताबों की लूट मची हुई थी। मैं खड़े होकर इन किताबों को एक-एक कर खरीदे जाते देखता रहा। हिंदू, इस्लामी, मसीही या बौद्ध धर्मों की किताबों के स्टॉल भी खचाखच भरे हुए थे। लोगों में ज्ञान की भूख दिख रही थी और वे इसे छपे हुए शब्दों के जरिये हासिल करना चाहते थे।

यह एक अच्छी बात है कि अब हिंदी सिर्फ कहानी, कविता या नाटक की ही भाषा नहीं रह गई है। ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों तक रसाई इसके माध्यम से हो सकती है। कुछ दशक पूर्व शुरू हुई यह प्रक्रिया अब परवान चढ़ गई प्रतीत होती है। वर्षों पूर्व जब मैं हिंदी विश्वविद्यालय में था, तब मैंने कुछ छात्रों से हिंदी प्रकाशकों के कैटलॉग का अध्ययन कराया। इस अध्ययन से यह दिलचस्प तथ्य उजागर हुआ कि उनमें सिर्फ 27 प्रतिशत पुस्तकें उस श्रेणी की थीं, जिनको हम रचनात्मक साहित्य कहते हैं। शेष पुस्तकें कथेतर विधाओं में थीं।

उन दिनों कंप्यूटर का सबसे ज्यादा शोर था, अतः सबसे अधिक पुस्तकें भी उसी पर थीं। आज एआई में उत्सुकता बढ़ी है, इसलिए स्टॉलों पर उससे जुड़ी पुस्तकों की भरमार थी। मेरी नजर में एक अच्छी बात यह थी कि इन पुस्तकों में आमफहम भाषा का इस्तेमाल हो रहा था। अधिकतर लेखक डॉ रघुबीर की पारिभाषिक शब्दावली से बच रहे थे और जहां किसी मुश्किल हिंदी तकनीकी शब्द का प्रयोग हुआ भी, वहीं उसके साथ अंग्रेजी पर्याय भी मिला। पुस्तकों को उलटने-पुलटने से यह जरूर लगा कि वे मुख्य रूप से अंग्रेजी किताबों का भाषांतर हैं, पर यह भी माना जा सकता है कि इन्हीं पुस्तकों से अर्जित ज्ञान से मौलिक पुस्तकें रची जा सकेंगी। हमारे सामने डॉ गुणाकर मुले का उदाहरण है ही।

इस साल के पुस्तक मेले में घूमते हुए मुझे पिछले कुछ दिनों से सबसे ज्यादा दिए जाने वाले इस तर्क की व्यर्थता भी समझ में आई कि इंटरनेट ने पुस्तकों को अप्रासंगिक बना दिया है। 19वीं शताब्दी में अखबारों के आने के बाद इंग्लैंड में कहा गया कि अब पाठकों को जीवन से जुड़ी वास्तविक कहानियां पढ़ने को मिलेंगी, तो फिक्शन या कथा साहित्य कौन पढ़ेगा? हालांकि, हुआ कुछ ऐसा कि अखबारों को अपनी लोकप्रियता बढ़ाने के लिए डिकेंस के उपन्यास धारावाहिक छापने पड़े। कुछ-कुछ ऐसा ही इंटरनेट आने के बाद आज पुस्तकों के साथ हो रहा है। आज उनको बेशुमार पाठक ऑनलाइन मिल रहे हैं। पुस्तकें वही हैं, केवल उनका फॉर्मेट बदला है। ऑफसेट प्रिंटिंग के बाद पुस्तक प्रकाशन की दुनिया में सबसे बड़ी क्रांति है यह। एक छोटे से लैपटॉप पर आप पूरा पुस्तकालय लेकर चल सकते हैं। नतीजे में आप यात्रा करते समय पहले से अधिक सहयात्रियों को पढ़ने में डूबा पाते हैं। वे छपे नहीं, मगर स्क्रीन पर चमकते शब्द पढ़ रहे होते हैं।

स्क्रीन पर अपार पाठ्य सामग्री उपलब्ध होने के बावजूद पुस्तक मेलों में इतनी भीड़ क्यों आ रही है? छपे हुए शब्द केवल ज्ञान, जिज्ञासा और मनोरंजन की विशाल दुनिया के कपाट नहीं खोलते, वे हमें गंध, स्पर्श और अनुभूति की अनिर्वचनीय भूल-भुलैया में भी ले जाते हैं। इन दिनों मित्र लेखक भारत भारद्वाज काफी हद तक अशक्त बिस्तर पर लेटे-लेटे अपने बुक शेल्फ को निहारते हैं और बीच-बीच में किसी किताब को पास मंगवाकर छूते हैं। वह किताबों को पढ़ नहीं सकते, पर उनका स्पर्श ही काफी है, उनकी गंध नथुनों में भरकर चैन से सो सकते हैं। जब तक उनके जैसे पुस्तक प्रेमी मौजूद हैं, पुस्तक मेलों में इसी तरह भीड़ आती रहेगी।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

अमेरिका से दूर होते यूरोप में भारत के लिए अवसर

यहां स्कैन करें

नितिन पाई | निदेशक, तक्षशिला संस्थान

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पिछले हफ्ते सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा कि अमेरिका के बिना नाटो कुछ भी नहीं। ग्रीनलैंड की अपनी लालसा के संदर्भ में उन्होंने यह टिप्पणी की थी। इससे नाटो में टूट की आशंका बढ़ गई है, जिसका हिस्सा खुद अमेरिका भी है। हालांकि, डेनमार्क के संजीदा लोग यही मानते हैं कि अमेरिका आसानी से कब्जा कर सकता है। शेन हैरिस और उनके साथियों ने द *अटलांटिक* में लिखा है कि यह नियंत्रण राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा सोशल मीडिया पर बस इस एक एलान के साथ हो सकता है कि यह इलाका अब अमेरिका का हिस्सा है। इसका विरोध न तो डेनमार्क करेगा और न ही कोई अन्य नाटो सदस्य, क्योंकि वाशिंगटन से टकराने की कुव्वत उनमें नहीं है।

इस पूरे मामले ने यूरोपीय देशों के फिर से हथियार-संपन्न होने की जरूरत पर नई बहस खड़ी कर दी है। यूरोपीय देशों की चिंता वाशिंगटन की नई राष्ट्रीय सुरक्षा नीति (एनएसएस) ने भी बढ़ा दी है, जिससे न सिर्फ यूरोप की सुरक्षा की 80 वर्ष पुरानी प्रतिबद्धता से अमेरिका के पलटने के संकेत मिलते हैं, बल्कि इसमें दक्षिणपंथी पार्टियों को समर्थन देकर यूरोप में राजनीतिक दखल देने की उसकी इच्छा भी दिखती है। बीते एक साल में, यूरोपीय संघ और उसके सदस्य देशों ने रक्षा खर्च बढ़ाने के लिए कई उपायों की घोषणा की है। खुद को फिर से हथियार-संपन्न बनाने के लिए उन्होंने अपने रक्षा व्यय को आगामी वर्षों में जीडीपी का 3.5 फीसदी करने (फिलहाल यह दो फीसदी है) और साल 2035 तक पांच प्रतिशत तक ले जाने की योजना बनाई है। इसके लिए जरूरी कानूनी रास्ता साफ कर दिया गया है, ताकि राजकोषीय घाटा बढ़ाया जा सके। जाहिर है, आने वाले साल यूरोपीय समाज के लिए मुश्किल भरे हो सकते हैं, क्योंकि सेना पर खर्च बढ़ाने के लिए लोक-कल्याणकारी और पर्यावरण संरक्षण से जुड़े कार्यक्रमों में आर्थिक कटौती करनी पड़ सकती है।

एक रक्षा साझेदार के रूप में भारत बड़े पैमाने पर सुरक्षा उपकरणों का उत्पादन करके यूरोप को अपनी लागत कम करने में मदद कर सकता है।

उनकी चुनौती सिर्फ यही नहीं है। सशस्त्र बलों में शामिल होने के लिए नौजवानों को मनाना उनके लिए कहीं ज्यादा कठिन काम होगा। खुशहाल समाज में पले-बढ़े युवाओं को सैन्य करियर चुनने के लिए प्रेरित करना यूरोपीय राजनेताओं की परीक्षा लेगा। फिर, उन बलों को भरोसेमंद लड़ने वाली ताकत बनाना भी कम चुनौतीपूर्ण काम नहीं होगा। नाटो एक ढांचा तो मुहैया कराता है, लेकिन अमेरिका के बिना यह व्यवस्था सूनी पड़ जाएगी, जिसमें नया प्राण फूंकना आसान नहीं है। यूरोपीय सैन्य गठबंधन, भले ही उसमें ब्रिटेन और तुर्किये भी शामिल हो जाएं, सिर्फ अमेरिका-विहीन नाटो नहीं होगा, बल्कि वह पूरी तरह से एक नया गठजोड़ होगा, जिसमें अलग राजनीति, कमांड ढांचा, खतरे की समझ और नागरिक-सैन्य संबंध होंगे। इस पूरी कवायद को यूरोप की राजनीति प्रभावित कर सकती है, क्योंकि यदि जर्मनी, फ्रांस, ब्रिटेन और पोलैंड में वाशिंगटन के प्रति आकर्षण रखने वाली दक्षिणपंथी पार्टियों को जीत मिलती है, तो ये देश अमेरिका के साथ तालमेल बनाकर आगे बढ़ सकते हैं। अगर ऐसा नहीं होता है, तभी यूरोप एक अलग रास्ता अपना सकेगा।

फिलहाल यह बात तो तय है कि यूक्रेन युद्ध, अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा नीति और ग्रीनलैंड विवाद जैसे बाहरी दबाव फिर से हथियार संपन्न बनने की यूरोप की कोशिश को रफ्तार देंगे। यहां रूस का व्यवहार निर्णायक होगा। एक आक्रामक रूस सबका ध्यान खींचेगा और ऐसे फैसलों को तीव्रता देगा, जिनको शायद टाला जा सकता था। यूरोप की कूटनीति भी इसी हिसाब से तय होगी। यहां ग्रेट ब्रिटेन भी अहम हो सकता है, बशर्ते वह अमेरिका और यूरोप के बीच बढ़ते मतभेदों के कारण टूटने से बच सके।

भारत के लिए इस नई परिस्थिति में मौके के दरवाजे खुल रहे हैं। एक ऐसा यूरोप, जो वाशिंगटन पर कम निर्भर हो, अपनी सुरक्षा पर कहीं ज्यादा ध्यान देगा और वह अलग-अलग साझेदार भी ढूंढ़ेगा। एक रक्षा साझेदार के रूप में भारत बड़े पैमाने पर रक्षा उपकरणों का उत्पादन करके यूरोप को अपनी लागत कम करने में मदद कर सकता है। हालांकि, भारत की रूस से दोस्ती और यूरोप-चीन के रिश्ते ही ये तय करेंगे कि दोनों देश (भारत व चीन) कितना कर सकते हैं और कितनी तेजी से।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

सरल मन ही संवेदनशील

धार्मिक व्यक्ति वास्तव में वह नहीं है, जो चोंगा पहनता है या लंगोटी धारण करता है, जो दिन में बस एक बार भोजन करता है या फिर जिसने विधि-निषेध के अनगिनत व्रत ले रखे हैं; धार्मिक व्यक्ति वह है, जो अपने अंतर में सरल है; जो कुछ बनने की फिराक में नहीं है। ऐसे मन में असाधारण ग्रहणशीलता होती है, क्योंकि वहां कोई अवरोध नहीं है, कोई भय नहीं है, किसी लक्ष्य की ओर बढ़ना नहीं है। ऐसा मन अनुकंपा को, ईश्वर को, सत्य को अथवा जो कुछ भी नाम आप दें, उसे ग्रहण करने में सक्षम होता है। यथार्थ के पीछे दौड़ने वाला मन सरल नहीं है।

वह मन, जो ढूंढ़ रहा है, पता लगा रहा है, टटोल रहा है, दरअसल विक्षुब्ध है, वह सरल नहीं है। जो मन अंदर या बाहर से किसी भी दबाव के सांचे में ढलने का प्रयत्न कर रहा है, वह संवेदनशील नहीं हो सकता। जब मन वास्तव में संवेदनक्षम होता है, अर्थात अपने साथ घटित होने वाली तमाम प्रक्रियाओं के प्रति, अपने प्रत्युत्तरों और विचारों के प्रति सजग होता है; जब मन कुछ बन नहीं रहा होता, कुछ होने के लिए अपने को किसी सांचे में नहीं ढाल रहा होता, केवल तभी वह सत्य को ग्रहण करने की क्षमता रखता है। जब मन तथा हृदय सरल, संवेदनशील हो जाते हैं, किसी प्रकार के दबाव, निर्देश, या आरोपण से नहीं, तब हम देखेंगे कि हमारी समस्याएं बड़ी सरलता से हल की जा सकती हैं। वे कितनी भी जटिल क्यों न हो, उन्हें हम एक नई दृष्टि से, अलग ढंग से देख पाएंगे।

कोई भी समस्या हो, उसका हल इसी दृष्टिकोण से हो सकता है। यदि हम विचार के किसी ढर्रे में सोचते रहते हैं, चाहे वह धार्मिक हो या राजनीतिक या कोई और, हम उस समस्या को नए ढंग से नहीं ले सकते। अतः सरल होने के लिए हमें इन सबसे मुक्त होना होगा। इसलिए स्वयं अपनी विचार की प्रक्रिया के प्रति सचेत होना, उसे समझने की क्षमता रखना तथा स्वयं को समग्रता में जान लेना अत्यधिक आवश्यक है। इसी से एक प्रकार की सरलता आती है, विनयशीलता आती है, जो न तो सद्गुण है और न ही कोई अभ्यास। गौर कीजिए, जिस विनयशीलता को अर्जित करना पड़े, वह विनयशीलता रह ही नहीं जाती।

जब मन तथा हृदय सरल, संवेदनशील हो जाते हैं, तब हम देखते हैं कि हमारी समस्याएं कितनी भी जटिल क्यों न हों, उनको हम एक नई दृष्टि से, अलग ढंग से देख पा रहे हैं।

वह मन जो अपने को विनम्र बनाता है, विनम्र नहीं होता। जब सच्ची विनयशीलता होती है- प्रयत्न से प्राप्त की हुई नहीं- तभी जीवन की मुंह बाए खड़ी समस्याओं का मुकाबला किया जा सकता है, क्योंकि तब व्यक्ति महत्वपूर्ण नहीं रह जाता, तब वह सिर्फ अपनी कठिनाइयों और अपने महत्व के नजरिये से नहीं देखता, वह समस्या को सीधे-सीधे देख पाता है और तभी वह उसका समाधान कर सकता है।

जे कृष्णमूर्ति

ओम बिरला | लोकसभा अध्यक्ष

विश्व के किसी भी मंच पर हमें गर्व के साथ अपनी मातृभाषा में बात करनी चाहिए। यदि हम स्वयं अपनी भाषाओं का सम्मान और प्रयोग नहीं करेंगे, तो उन्हें आगे बढ़ाने का दायित्व कौन निभाएगा?

भू-राजनीति अमेरिका की बड़ी ताकत

अमेरिका की भौगोलिक स्थिति ही उसे सबसे बड़ा राजा बनाती है, जिसका फायदा उसे भू-राजनीति में मिलता है। दो-दो महासागर का नियंत्रण उसके पास है, अटलांटिक महासागर और प्रशांत महासागर। इसके अलावा कैरेबियाई सागर पर भी वह अपना नियंत्रण रखता है। दुनिया भर में कई द्वीपों पर उसने कब्जा करके अपने सैन्य अड्डे बना रखे हैं। केवल एक उसके गृहयुद्ध को छोड़ दिया जाए, तो कोई भी लड़ाई अमेरिकी धरती पर नहीं लड़ी गई है। इसके बाद एक बार जापान पर्लहार्बर पर हमला करने में कामयाब हुआ था, लेकिन वह भी अमेरिका की मुख्य भूमि नहीं, बल्कि कवाई द्वीप समूह का हिस्सा था। हां, ओसामा बिन लादेन सफल हुआ था, जब उसने न्यूयॉर्क के ट्विन टॉवर पर भीषण हमला किया था। उसी समय पता चला कि अमेरिका कितना खोखला है, क्योंकि करीब 24 घंटे तक किसी को पता ही नहीं था कि उसके राष्ट्रपति कहां हैं, उप-राष्ट्रपति कहां हैं? ऐसा इसलिए, क्योंकि अमेरिका ने कभी इसकी तैयारी ही नहीं की थी कि कोई भी देश उसकी मुख्य भूमि पर हमला कर दे, तो वह बचेगा कैसे?

वास्तव में, उसके जितने भी दुश्मन हैं, वे सभी उससे हजारों किलोमीटर दूर हैं, लेकिन अमेरिका किसी भी देश पर इसलिए हमला करने में कामयाब हो जाता है, क्योंकि दुनिया के कई देश खुद अमेरिका को न सिर्फ मदद करते हैं, बल्कि उन्होंने अपने देश में सैन्य-अड्डे बनाने के लिए उसे जगह दी है। इसी खासियत, यानी भू-राजनीतिक स्थिति की वजह से कोई देश अमेरिका से भिड़ने की हिम्मत नहीं करता। वह अगर डरता है, तो रूस से, क्योंकि नक्शा बताता है कि अलास्का के पास एक ऐसी जगह है, जहां से आराम से रूस की सेना अमेरिका में घुसकर तबाही मचा सकती है और यही कारण है कि यूक्रेन बर्बाद हो रहा है, लेकिन अमेरिका रूस से सीधे भिड़ने की हिम्मत नहीं कर रहा। बाकी दुनिया में जितने भी देश चीन के भरोसे बैठे हैं, चाहे वह ईरान हो या वेनेजुएला या फिर क्यूबा, उनका वही हाल होगा, जो वेनेजुएला का हुआ है, क्योंकि बीजिंग कभी वाशिंगटन से सीधे युद्ध का खतरा मोल नहीं ले सकती। यही कारण है कि खुद को मजबूत बनाने की बात कही जाती है।

अमेरिका की यही ताकत है। वह खुद को मजबूत बनाने का कोई मौका नहीं छोड़ता, फिर चाहे उसकी कीमत कोई दूसरा क्यों न चुकाए। वह समझता है कि ताकत बनाए रखना कितना जरूरी है। इसीलिए, हर देश के लिए कहा जाता है कि मजबूत बनिए और सेनाओं को राजनीति व भ्रष्टाचार से दूर रखिए।

आदित्य मिश्र, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम

अमेरिका नीति

सभी देशों को भ्रमित कर रही ट्रंप नीति

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा ईरान में सैन्य हस्तक्षेप का संकेत केवल एक कूटनीतिक बयान नहीं है, बल्कि उस प्रवृत्ति का विस्तार है, जिसमें शक्ति का प्रयोग अंतरराष्ट्रीय सहमति से ऊपर रख दिया जाता है। वेनेजुएला को लेकर ट्रंप के हालिया दावों, यहां तक कि स्वयं को उसका 'कार्यवाहक राष्ट्रपति' बताने वाली उनकी सोशल मीडिया पोस्ट ने इस प्रवृत्ति को और उघाड़ दिया है। यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि ऐसे दावों को न तो किसी अंतरराष्ट्रीय संस्था ने मान्यता दी है और न ही आधिकारिक स्रोतों ने पुष्टि की है। फिर भी, इन बयानों का असर विश्व राजनीति में भ्रम और अस्थिरता बढ़ाने वाला है।

करीब चार वर्ष पहले रूस-यूक्रेन युद्ध के संदर्भ में अमेरिका और उसके सहयोगियों ने अंतरराष्ट्रीय कानून, विशेषकर संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुच्छेद 2(4) के उल्लंघन की बात जोर-शोर से उठाई थी, जो बल प्रयोग या उसकी धमकी पर रोक लगाता है। आज वही मानक ढीले पड़ते दिख रहे हैं। ईरान के भीतर जन-आंदोलनों और मानवाधिकार उल्लंघनों की वास्तविकता से इनकार नहीं किया जा सकता, पर यह भी उतना ही सच है कि किसी संप्रभु देश में एकतरफा सैन्य हस्तक्षेप अंतरराष्ट्रीय कानून के दायरे से बाहर है। ऐसे किसी कदम की वैधता केवल संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की सहमति और नेतृत्व में ही संभव है।

'नए तथ्यों' की बात करें, तो हाल के वर्षों में वैश्विक शासन-व्यवस्था में तीन बदलाव स्पष्ट हैं। पहला, सोशल मीडिया और निजी मीडिया प्लेटफॉर्म के जरिये राष्ट्राध्यक्षों द्वारा अनौपचारिक एलान अब कूटनीति को प्रभावित करने लगा है, ट्रुथ सोशल जैसे मंच नीति-निर्माण के समानांतर 'घोषणा-राजनीति' को जन्म दे रहे हैं। दूसरा, अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की सीमित प्रवर्तन क्षमता उजागर हुई है; अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय की अधिकार-सीमा और सदस्यता विवादों ने जवाबदेही को कमजोर किया है। तीसरा, घरेलू राजनीति और पारिवारिक व्यवसायों के हितों का टकराव- जिस पर अमेरिका में अदालतों में भी बहस चलती रही है, ने राष्ट्रपति पद की निष्पक्षता पर सवाल खड़े किए हैं। राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा नोबेल शांति पुरस्कार की आकांक्षा भी नई नहीं है, पर शांति पुरस्कार का मापदंड घोषणाओं से नहीं, स्थायी शांति और नियम-आधारित व्यवस्था को मजबूत करने से तय होता है। यदि अमेरिका वास्तव में वैश्विक नेतृत्व चाहता है, तो उसे यही मानक अपनाने होंगे- संयुक्त राष्ट्र की भूमिका का सम्मान, अंतरराष्ट्रीय कानूनों का पालन व संप्रभुता के प्रति प्रतिबद्धता। अन्यथा यह मनमानी दुनिया को और अधिक अस्थिर ही करेगी।

सुभाष बुड़ावन वाला, टिप्पणीकार

भारतीयों का साझा सूर्य महोत्सव

मकर संक्रांति एक सूर्य से जुड़ी अनेक परंपराओं का महोत्सव है। सबको सूर्य चाहिए, क्योंकि इससे जीवन की तमाम जरूरतें पूरी होती हैं। ऐसे में, आध्यात्मिक रूप से ही नहीं, व्यावहारिक रूप से भी मकर संक्रांति का महत्व बहुत बढ़ जाता है। यह महापर्व अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग ढंग से मनाया जाता है। प्रस्तुत है महिमा सामंत की कलम से इस महापर्व के विविध रूपों को समेटता आलेख...

मकर संक्रांति (14 जनवरी)

यह भारतीय एकता का महोत्सव है। भारत की पहचान उसकी विविध परंपराओं में नहीं, बल्कि उन्हें जोड़ने वाली भावना में है। अलग-अलग स्वाद, अलग-अलग रीतियां और अलग-अलग उत्सव हैं, पर सूर्य एक ही है। उसका प्रकाश सबके लिए समान है। यही कारण है कि मकर संक्रांति केवल एक पर्व नहीं, बल्कि भारत की सामूहिक मुस्कान और साझा आशा है। यह ऐसा पर्व है, जो पूरे देश में प्रायः एक ही समय पर मनाया जाता है, पर इसके हर क्षेत्र में अलग-अलग रूप और रंग हैं। यह पर्व केवल परंपरा नहीं, बल्कि प्रकृति, परिश्रम और कृतज्ञता का महोत्सव है।

कृषि से जुड़ा पर्व

यह प्रकृति से जुड़ा पर्व है। इस समय देश के अधिकांश क्षेत्रों में फसल कटाई हो जाती है। कृषक समाज अपनी मेहनत का फल पाकर प्रकृति व सूर्य के प्रति आभार व्यक्त करना चाहता है। यह पर्व समाज के श्रम, संतोष और साझा खुशियों को प्रकट करता है।

एक पर्व, अनेक नाम

मकर संक्रांति के कई रूप हैं, तो कई नाम भी हैं। इसके नाम बदलते हैं, पर भावना एक ही रहती है।

कर्नाटक में यह मिठास और सौहार्द का पर्व है। यह संबंधों को मजबूत करने का पर्व है। तिल, गुड़, मूंगफली और नारियल से बने पकवान विशेष रूप से तैयार किए जाते हैं। इन्हें पड़ोसियों और मित्रों में बांटकर मधुर व्यवहार दर्शाया जाता है। आंगन में रंगीन अल्पनाएं सजती हैं। हरी पत्तियों के साथ गन्ना घरों की शोभा बढ़ाता है। इस दिन पशुओं को भी सजाया जाता है, क्योंकि कृषि उनकी मदद से ही मुमकिन होती है।

तमिलनाडु में यह भोजन और समृद्धि का उत्सव है। यहां यह चार दिन चलने वाला महापर्व है। मिट्टी के पात्रों में नए चावल, दूध और गुड़ से विशेष व्यंजन पकाया जाता है और वह जब उफनता है, तब उसे समृद्धि और सौभाग्य का संकेत माना जाता है। यहां पशुओं की ही नहीं, उन खेतों की भी पूजा होती है, जो कृषि को संभव बनाते हैं।

केरल में यह परिवार और फसल का पर्व है। इस समय चावल की नई फसल की कटाई के बाद भगवान सूर्य और प्रकृति को धन्यवाद देने की परंपरा है। घरों में नारियल और गुड़ से बनी पारंपरिक मिठाइयां बनाई जाती हैं। लड्डू और हलवा बनता है। सभी मिलकर भोजन और प्रसाद पाते हैं।

आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में रंगों से सजे आंगन, पतंगों से भरा आकाश इसकी पहचान है। सुबह-सुबह घरों के सामने रंगीन अल्पनाएं बनाई जाती हैं। तिल, चावल और गुड़ से बने व्यंजन पकते हैं। बच्चों के हाथों में उड़ती पतंगें उत्साह का प्रतीक बन जाती हैं।

महाराष्ट्र में यह पर्व तिल और गुड़ की मिठास के माध्यम से सामाजिक सौहार्द का संदेश देता है। महिलाएं पारंपरिक रीति से पर्व मनाती हैं। घरों में विशेष भोजन बनते हैं और पतंगबाजी से परिवेश में उल्लास होता है।

गुजरात में यह पतंगों के महासमागम का महोत्सव है। रंग-बिरंगी पतंगों से भरा आकाश स्वतंत्रता और आनंद का उत्सव बन जाता है। परिवार छतों पर एकत्र हो, व्यंजनों का आनंद लेते हैं।

पंजाब और हरियाणा में यह अलाव के ताप और लोक उत्साह का पर्व है। यहां मकर संक्रांति से पहले लोहड़ी के रूप में अलाव जलाया जाता है। लोग उसके चारों ओर इकट्ठा होकर तिल, मूंगफली और गजक खाते हैं। लोकगीत, नृत्य, सामूहिक उल्लास इस पर्व को ऊर्जा से भर देते हैं।

उत्तर प्रदेश में इस दिन आस्था और सामाजिक सहभागिता का उत्कर्ष दिखता है। यहां नदियों में स्नान, दान-पुण्य और खिचड़ी के भोग की प्रधानता है।

बिहार व झारखंड में यह सादगी, स्वाद और परिवार का पर्व है। इन राज्यों में मकर संक्रांति सादगी से मनाई जाती है। दही-चूड़ा, तिल से बने पकवान और पारिवारिक भोजन इस दिन को खास बनाते हैं।

पश्चिम बंगाल, असम और ओडिशा में इस दिन लोक परंपराओं का संगम दिखाई देता है। पश्चिम बंगाल में चावल और गुड़ से बनी मिठाइयां उत्सव के केंद्र में रहती हैं। असम (माघ बिहू) और ओडिशा में सामूहिक भोज, अलाव और लोक परंपराएं इस पर्व को सामुदायिक उत्सव बनाती हैं।

राजस्थान, मध्य भारत और पर्वतीय क्षेत्रों में इस दिन दान-पुण्य और पतंगबाजी का विशेष महत्व है। मध्य भारत में लोक मेले और पारंपरिक गीत इस उत्सव को रंगीन बनाते हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में यह पर्व श्रद्धा और प्रकृति के प्रति सम्मान के रूप में मनाते हैं।

मकर संक्रांति से शबरीमला की आध्यात्मिक परंपरा भी जुड़ी हुई है। केरल में स्थित शबरीमला अयप्पा स्वामी का पवित्र तीर्थक्षेत्र मंडल काल की समाप्ति के बाद मकर संक्रांति के दिन विशेष भक्ति के साथ भक्तों के लिए खोला जाता है। भक्तों की आस्था के अनुसार मकरविलक्कु को दिव्य ज्योति के रूप में पूजा जाता है। स्वामी शरणं अयप्पा के जयघोष के साथ लाखों श्रद्धालु भगवान अयप्पा के दर्शन करते हैं। 41 दिनों के व्रत, सात्विक जीवन और आत्मसंयम के माध्यम से भक्त मकर संक्रांति को केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि और साधना के पावन पर्व के रूप में मनाते हैं।

स्नान
स्वच्छता-पवित्रता का संदेश। निरोग रहने के लिए जीवन में स्नान का महत्व है। सर्दियों में कुछ लोग स्नान से बचते हैं। उन्हें वापस स्नान के लिए प्रेरित करना जरूरी है।

ध्यान
प्रकृति के प्रति आभार प्रदर्शन। सूर्य, खेत, कृषि औजार, कृषि में सहायक पशु, नई फसल, अनाज की पूजा दरअसल प्रकृति का ध्यान करते हुए आभार प्रदर्शन का अवसर है।

दान
संसाधन साझा करने का संदेश। नई फसल के साथ संपन्नता आती है, पर उसका लाभ सबको समान रूप से नहीं मिलता है। समाज में जरूरतमंद लोगों के लिए दान जरूरी है।

सप्ताह के व्रत-त्योहार

13 जनवरी से 19 जनवरी 2026

13 जनवरी (मंगलवार) : माघ कृष्ण दशमी तिथि अपराह्न 03.18 मिनट तक पश्चात एकादशी तिथि। भद्रा अपराह्न 03.18 मिनट तक। लोहड़ी पर्व।

14 जनवरी (बुधवार) : माघ कृष्ण एकादशी तिथि सायं 05.53 मिनट तक पश्चात द्वादशी तिथि। षट्तिला एकादशी व्रत। मकर (माघ) संक्रांति। निरयण उत्तरायण प्रारंभ। शिशिर ऋतु प्रारंभ।

15 जनवरी (गुरुवार) : माघ कृष्ण द्वादशी तिथि रात्रि 08.17 मिनट तक पश्चात त्रयोदशी तिथि। तिलद्वादशी। गंडमूल विचार।

16 जनवरी (शुक्रवार) : माघ कृष्ण त्रयोदशी तिथि रात्रि 10.22 मिनट तक। भद्रा रात्रि 10.22 मिनट से। प्रदोष व्रत। मास शिवरात्रि व्रत।

17 जनवरी (शनिवार) : माघ कृष्ण चतुर्दशी तिथि रात्रि 12.04 मिनट तक पश्चात अमावस तिथि। भद्रा प्रातः 11.13 मिनट तक।

18 जनवरी (रविवार) : माघ कृष्ण अमावस्या तिथि रात्रि 01.22 मिनट तक पश्चात प्रतिपदा तिथि। माघ (मौनी) अमावस्या। तीर्थ स्नान माहात्म्य (हरिद्वार, प्रयागादि)।

19 जनवरी (सोमवार) : माघ शुक्ल प्रतिपदा तिथि रात्रि 02.15 मिनट तक पश्चात द्वितीया तिथि। माघ शुक्ल पक्ष प्रारंभ। गुप्त नवरात्र प्रारंभ।

-पं. ऋभुकांत गोस्वामी

आस्था-अनास्था

एकराट् पं. श्यामजीत दुबे 'आथर्वण'

मंगल भी कराता है अमंगल

नवग्रहों में मंगल ग्रह का स्वभाव कैसा है?

-कुमार भौमिक, मथुरा

मंगल शब्द कल्याण वाचक है। शुभ क्षेम कुशल, समृद्धि, सौभाग्य, आनंद प्रसाद का इससे बोध होता है, किंतु मंगल ग्रह अमंगल रूप भी है। यह पापी और क्रूर ग्रह है। नवग्रहों में यह सेनापति है। पाप ग्रहों की श्रेणी में इसे महापापी माना जाता है। यह नए-नए पाप कराता है। लड़ाई-झगड़ा, विप्लव, ध्वंस, उत्पात, अशांति का कारक यही है। फिर भी यह मंगल है, यही आश्चर्य की बात है!

मंगल शुभ प्रभाव में दुष्टों का दलन करता है। हिंसा से हिंसा पर विजय पा कर धर्म की स्थापना करता है। अशुभ प्रभाव में इसका उल्टा है। वह देवता एवं दैत्य दोनों है। शुभ होने से वह मंगल नाम से भूषित होता है। अशुभ होने से वह नरक नाम से अलंकृत है।

मंगल का अर्थ है- गतियुक्त, गतिशील, गतिमान। गति जहां होती है, जिसमें होती है; निश्चय ही वहां उसमें रजोगुण होता है। अतः मंगल रजोगुणी है।

मंगल प्रवृत्ति परक ग्रह है। यह ऊपर उठने नहीं देता। बीच में लटकाए रहता है। मंगल प्रधान जातक कभी शांत नहीं रहता। ऐसा जातक निष्क्रिय भी नहीं होता। अतः उसका पराभव भी नहीं होता।

मंगल में म् व्यञ्जन भूमि (पृथ्वी) का बोधक है, इसलिए इसे भौम कहते हैं। भूमि से उत्पन्न होने के कारण अथवा भूमि तत्व से युक्त होने के कारण म् व्यञ्जन को भौम नाम दिया गया है। मंगल के दो नाम हैं- भौम और नरक। मंगल पापी है। अतः इसे पुराणों में भौमासुर/नरकासुर कहा गया है। श्रीमद्भागवत में भी नरकासुर को भूमिपुत्र (भौम) कहा गया है।

कुंडली में निर्बल मंगल चोर बनाता है। बलवान मंगल चोरों का सरदार बनाता है। थोड़ा बलवान मंगल डकैत बनाता है, अधिक बलवान मंगल डकैतों का मुखिया बनाता है। हत्या, लूटपाट, छीना-झपटी, अपहरण, मंगल के सहजात गुण हैं। पौराणिक कथा के अनुसार भौम ने सोलह हजार राज कन्याओं का अपहरण कर उन्हें अपने महल में बंद किया था।

भौम ने देवमाता अदिति के कानों का कुंडल चुरा लिया था। वरुण का छत्र छीन लिया था। वह प्राग्ज्योतिषपुर का राजा था। प्राग् का अर्थ है- पूर्व वा पहले। ज्योतिष का अर्थ है- प्रकाश व ज्ञान का होना। इस प्रकार प्राग् ज्योतिषपुर का अर्थ हुआ- 'प्रकाश से पहले की अवस्था' अर्थात अंधकारमय स्थान। स्पष्ट है, वह अज्ञान का अधिपति था। तात्पर्य यह कि मंगल के कारण जातक अज्ञान की ओर उन्मुख होता है।

(साभार : वैदिक ज्योतिष, भाग-1 (पूर्व सत्यवाक्) अग्नि मंदिर प्रकाशन, इलाहाबाद)

भेजें अपने सवाल

स्वर्ग-नरक की कल्पना का आधार क्या है?

पाप क्या है, पुण्य क्या है? धर्म क्या है, अधर्म क्या है? ईश्वर की आराधना कैसे करें? ऐसे सवाल अकसर हमारे मन में उठते हैं, पर इनका जवाब हमारे पास नहीं होता। मन-मस्तिष्क में आने वाले ऐसे ही सवालों के जवाब हमारे पैनल में शामिल धर्माचार्य आपको देंगे।

अपने सवाल हमें इस पते पर भेजें :
धर्मक्षेत्रे, हिन्दुस्तान, 11वां तल, द आइकॉन टॉवर, एफ सी-24 सी, फिल्म सिटी, सेक्टर-16ए, नोएडा, गौतम बुद्ध नगर-201301 (उत्तर प्रदेश)

ऋषभ देव निर्वाण दिवस (17 जनवरी)

धर्म का उपदेश देते हुए पाया निर्वाण

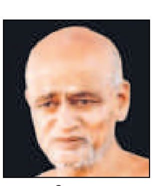

आचार्य विद्यासागर

भोगभूमि का अवसान हो रहा था और कर्मभूमि का प्रारंभ। उसी समय बालक ऋषभ का जन्म अयोध्या में हुआ। उनके पिता राजा नाभिराय एवं माता रानी मरूदेवी थीं। पहले भोगभूमि में भोग सामग्री कल्पवृक्षों से मिलती थी। कर्मभूमि प्रारंभ होते ही कल्पवृक्षों ने भोग सामग्री देना बंद कर दिया था, जिससे जनता में त्राहि-त्राहि मच गई। सारे मानव इस समस्या को लेकर राजा नाभिराय के पास पहुंचे। राजा नाभिराय ने कहा इसका समाधान अवधिज्ञानी राजकुमार ऋषभदेव करेंगे। राजकुमार ऋषभदेव ने दुखी जनता को देखकर आजीविका चलाने के लिए षट्कर्म का उपदेश दिया। ये हैं- असि, मसि, कृषि, विद्या, शिल्प, वाणिज्य।

कुछ समय के पश्चात पिता ने समय देखकर राजकुमार ऋषभदेव का राजतिलक कर दिया। एक समय राजा ऋषभदेव अपने राजदरबार में स्वर्ग की अप्सरा नीलांजना का नृत्य देख रहे थे कि उसका अचानक मरण हो गया। इंद्र ने तुरंत दूसरी अप्सरा भेजी, किंतु राजा ऋषभदेव ने अवधिज्ञान से जान लिया कि प्रथम अप्सरा का मरण हो गया है। इससे उन्हें वैराग्य हो गया और राजपाट भरत-बाहुबली को देकर, दिगंबरी दीक्षा धारण कर ली।

उन्होंने छह माह का उपवास किया। जब वे पारणा (आहार) करने निकले, तब कोई भी श्रावक नवधा भक्ति नहीं जानता था। अतः 7 माह 9 दिन के उपवास और हो गए। विहार करते-करते एक दिन मुनि ऋषभदेव का हस्तिनापुर में आगमन हुआ। मुनि ऋषभदेव का दर्शन करते ही राजा श्रेयांस को जाति स्मरण हो गया कि पिछले आठवें भव में मैंने चारण ऋद्धिधारी मुनिराज को नवधा भक्तिपूर्वक आहार दान दिया था। इसी नवधा भक्ति के न मिलने से ऋषभदेव मुनिराज का आहार नहीं हो पा रहा है। फिर क्या था। जब ऋषभदेव मुनि आहार को निकले, तो राजा श्रेयांस एवं राजा सोम ने प्रथम तीर्थंकर की प्रथम पारणा वैशाख शुक्ल तीज के दिन कराई।

एक हजार वर्ष तपस्या करने के बाद मुनि ऋषभदेव को 'केवलज्ञान' की प्राप्ति हुई और समवसरण में दिव्य ध्वनि द्वारा धर्म उपदेश दिया। कालांतर में आयु के चौदह दिन शेष रहने पर वे समवसरण को छोड़कर कैलास पर्वत पर चले गए। वहां माघ कृष्ण चतुर्दशी को निर्वाण प्राप्त किया।

मौनी अमावस्या (18 जनवरी)

मौन रहकर सुनें अपनी गूंज

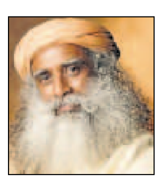

सद्गुरु

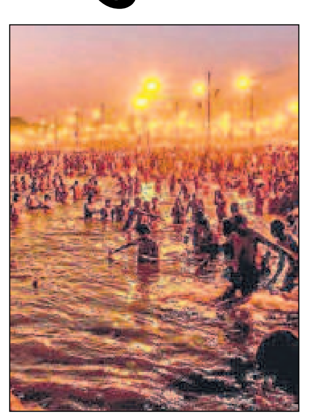

यौगिक परंपरा में कई अवसरों पर मौन धारण किया जाता है। इनमें से एक है-मौनी अमावस्या। मौन का अभ्यास करने और मौन होने में अंतर है। अस्तित्व की हर वह चीज जिसको पांचों इंद्रियों से महसूस किया जा सके, वह दरअसल ध्वनि की एक गूंज है। हर चीज जिसे देखा, सुना, सूंघा जा सके, जिसका स्वाद लिया जा सके या जिसे स्पर्श किया जा सके, ध्वनि या नाद का एक खेल है।

मनुष्य का शरीर और मन भी एक प्रतिध्वनि या कंपन ही है, लेकिन शरीर और मन अपने आप में सब कुछ नहीं हैं। वे तो बस एक बड़ी संभावना की ऊपरी परतभर हैं। बहुत से लोग ऊपरी परत के नीचे नहीं देखते, वे दरवाजे की चौखट पर बैठकर पूरी जिंदगी बिता देते हैं, लेकिन दरवाजा अंदर जाने के लिए होता है। इस दरवाजे के आगे जो चीज है, उसका अनुभव करने के लिए चुप रहने का अभ्यास ही मौन कहलाता है।

अंग्रेजी शब्द 'साइलेंस' बहुत कुछ नहीं बता पाता है। संस्कृत में 'मौन' और 'निःशब्द' दो महत्वपूर्ण शब्द हैं। मौन का अर्थ आम भाषा में चुप रहना होता है- यानी आप कुछ बोलते नहीं हैं। 'निःशब्द' का मतलब है, जहां शब्द या ध्वनि नहीं है- शरीर, मन और सारी सृष्टि के परे। ध्वनि के परे का मतलब ध्वनि की गैरमौजूदगी नहीं, बल्कि ध्वनि से आगे जाना है।

ध्वनि सतह पर होती है, मौन अंतरतम में होता है। अंतरतम में ध्वनि बिल्कुल नहीं होती है। ध्वनि की अनुपस्थिति का मतलब कंपन और गूंज, जीवन और मृत्यु, यानी पूरी सृष्टि की अनुपस्थिति। अनुभव में सृष्टि के अनुपस्थित होने का मतलब है- सृष्टि के स्रोत की व्यापक मौजूदगी की ओर बढ़ना। ऐसा स्थान, जो सृष्टि के परे हो। ऐसा आयाम, जो जीवन और मृत्यु के परे हो, मौन या निःशब्द कहलाता है।

मौन का अभ्यास करने और मौन होने में अंतर है। अगर आप किसी चीज का अभ्यास कर रहे हैं, तो निश्चित रूप से आप वह नहीं हैं। अगर आप पूरी जागरूकता के साथ मौन में प्रवेश करने की चेष्टा करते हैं, तो आपके मौन होने की संभावना बनती है।

मौनी अमावस्या शरद-संक्रांति के बाद की दूसरी या महाशिवरात्रि से पहले की अमावस्या होती है। यह बात हमारे देश के किसान भी जानते हैं कि अमावस्या के दौरान बीजों का अंकुरण और पौधों का विकास मंद हो जाता है। किसी पौधे के रस को ऊपर तक पहुंचने में बहुत मुश्किल होती है और यही सीधी रीढ़ वाले इंसान के साथ भी होता है। खासतौर पर इन तीन महीनों के दौरान, संक्रांति से लेकर महाशिवरात्रि तक, उत्तरायण के पहले चरण में, जीरो डिग्री से तैंतीस डिग्री उत्तर तक के अक्षांश में, पूर्णिमा और अमावस्या दोनों का असर बढ़ जाता है।

इंसानी अनुभव में समय की धारणा बुनियादी रूप से सूर्य और चंद्रमा की गति से ही आई है। यह चुनाव हमें खुद करना है कि हम काल-चक्र की सवारी करें या काल के अंतहीन चक्रों में फंसे रहें। यह समय और यह दिन सबके परे जाने का एक अनुपम अवसर प्रदान करता है।

रोजनामचा

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष : आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। मन में शांति व प्रसन्नता रहेगी। लेखनादि-बौद्धिक कार्यों में मान-सम्मान की प्राप्ति हो सकती है। परिवार में सुख-शांति रहेगी।

वृष : आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। धार्मिक संगीत के प्रति रुझान बढ़ सकता है। नौकरी में कार्यक्षेत्र में बदलाव हो सकता है। आय में वृद्धि होगी। सेहत का ध्यान रखें।

मिथुन : मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। संतान की सेहत का ध्यान रखें। कारोबार में वृद्धि होगी। भागदौड़ अधिक रहेगी।

कर्क : आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन में उतार-चढ़ाव भी हो सकते हैं। माता की सेहत में सुधार होगा। नौकरी में बदलाव के अवसर मिल सकते हैं। आय में वृद्धि होगी।

सिंह : मन परेशान हो सकता है। पिता की सेहत का ध्यान रखें। नौकरी में बदलाव के योग बन रहे हैं। तरक्की के अवसर भी मिल सकते हैं। आय में वृद्धि होगी।

कन्या : आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। नौकरी में बदलाव के साथ तरक्की के अवसर मिल सकते हैं। कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी। किसी पुराने मित्र से भेंट हो सकती है।

तुला : मन में शांति व प्रसन्नता रहेगी। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। वाहन सुख में वृद्धि हो सकती है। परिवार के किसी बुजुर्ग से धन की प्राप्ति हो सकती है। सेहत का ध्यान रखें।

वृश्चिक : आत्मविश्वास में कमी रहेगी। आत्मसंयत रहें। व्यर्थ के क्रोध से बचें। बातचीत में संतुलित रहें। कारोबार के लिए पिता से धन की प्राप्ति हो सकती है।

धनु : मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। परिवार का साथ मिलेगा। शैक्षिक व बौद्धिक कार्यों में सम्मान की प्राप्ति हो सकती है। पटन-पाठन में रुचि बढ़ेगी।

मकर : मन प्रसन्न रहेगा। पिता का सान्निध्य मिलेगा। माता की सेहत का ध्यान रखें। आय में कमी व खर्च अधिक की स्थिति हो सकती है। शैक्षिक कार्यों में सुधार होगा।

कुंभ : मन परेशान हो सकता है। माता की सेहत का ध्यान रखें। खर्चों की अधिकता रहेगी। लेखनादि-बौद्धिक कार्यों से आय हो सकती है। रहन-सहन कष्टमय हो सकता है।

मीन : आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। घर-परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। वस्त्र उपहार में मिल सकते हैं। भागदौड़ अधिक रहेगी। सेहत का ध्यान रखें।

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

13 जनवरी, मंगलवार, **शक संवत्:** 23 पौष (सौर) 1947, **पंजाब पंचांग:** 30 पौष मास प्रविष्टे 2082, **इस्लाम:** 23 रज्जब, 1447, **विक्रमी संवत्:** माघ कृष्ण दशमी तिथि अपराह्न 03.18 मिनट तक पश्चात एकादशी तिथि। गंड योग, विष्टि (भद्रा) करण अपराह्न 03.18 मिनट तक। चंद्रमा तुला राशि में सायं 05.21 मिनट तक उपरांत वृश्चिक राशि में।

सूर्य दक्षिणायन। सूर्य दक्षिण गोल। हेमंत ऋतु। अपराह्न 03 बजे से सायं 04.30 मिनट तक राहुकालम्। भद्रा अपराह्न 03.18 मिनट तक। लोहड़ी पर्व।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

कृपया यह बताएं कि घर में सुख एवं खुशियां बनाए रखने के लिए क्या करें?

-प्रगति, भोपाल

- सप्ताह में कम-से-कम दो बार घर में लोबान एवं जटामांसी का धुआं अवश्य करें। यदि घर में तीन दरवाजे एक लाइन में हों, तो उनमें से एक बंद कर दें। घर में सूखे हुए मुरझाए हुए फूल बिल्कुल भी नहीं रखें। घर में यदि कोई भी तिजोरी या लॉकर बना रखा है, तो उसको खाली न रखें। रसोई में नित्य प्रति अग्नि को भोग लगाएं। जब भी घर से निकलें, तो भगवान के दर्शन करके निकलें, लेकिन टॉयलेट जाकर कभी नहीं निकलें। नित्य प्रति पूजा में सुबह को अपनी सामर्थ्यनुसार कुछ पैसा अवश्य निकालें।

वर्ग पहेली : 8208

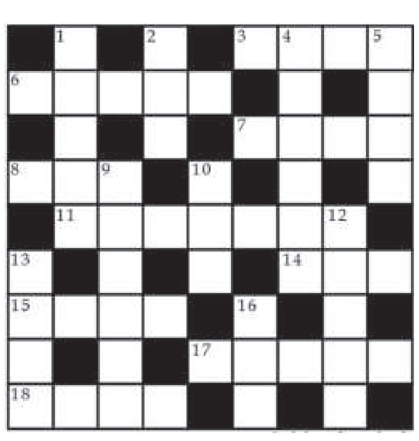

बाएं से दाएं
3. जिसके साथ उपकार किया गया हो; कृपा प्राप्त; एहसानमंद (4)
6. सबके काम आने वाला; सबसे संबंध रखने वाला; शासकीय; सामूहिक (5)
7. घबराया हुआ; परम उत्सुक; बेचैन; व्याकुल (4)
8. अच्छी तरह तैरने वाला (3)
11. उलटा-सीधा बोलने के लिए विवश करना; कुछ कहने को मजबूर करना (3,4)
14. थूहर; संस्कृत, हिंदी, मराठी की लिपि (3)
15. हार जाना; टूट जाना; थकना (2,2)
17. चरण कमल; पद कमल (2,3)
18. यदुवंश के नाथ; श्रीकृष्ण (4)

ऊपर से नीचे
1. बड़ा पहाड़; पर्वतों का राजा; हिमालय (5)
2. जो बाद में उत्पन्न हुआ हो; उमर में छोटा; पद में छोटा (3)
4. आक्त करवाना; कमजोर कराना (2,4)
5. सन्नद्धता; दक्षता; चतुराई (4)
9. बहुत ही क्रोधित हो जाना; जल-भुन जाना (3,1,2)
10. अप्रसन्न; नाराज (3)
12. नागरिक अधिकारों से युक्त होने की अवस्था; निवासी होने का अधिकार (5)
13. अनुचित व्यय; फिजूलखर्ची; व्यर्थ व्यय (4)
16. जो राग, द्वेष, मान, अपमान आदि विकारों से शून्य हो; नासमझ; बुद्धू (3)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली : 8207

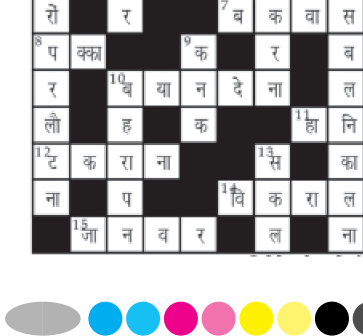

सुडोकू : 8190

* कठिन

	6							
7		9		4			2	
		2			3	1		
	4		7		9	5		
	5						6	
		3	6		4		1	
		4	5			6		
	2			8		4		3
							9	

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

सुडोकू : 8189

3	8	9	7	2	4	5	6	1
7	6	1	3	9	5	2	8	4
4	2	5	6	1	8	7	9	3
1	5	2	9	6	3	4	7	8
9	4	7	2	8	1	3	5	6
8	3	6	5	4	7	1	2	9
5	9	4	8	3	2	6	1	7
6	7	3	1	5	9	8	4	2
2	1	8	4	7	6	9	3	5

संकट : आर्थिक महाशक्ति चीन की डगमगा रही अर्थव्यवस्था

बीजिंग, एजेंसी। दुनिया के सामने चीन खुद को आधुनिकता, तेज रफ्तार विकास और आर्थिक महाशक्ति के रूप में पेश करता रहा है। ऊंची गगनचुंबी इमारतें, बुलेट ट्रेनों का विशाल नेटवर्क और वैश्विक बाजारों में बढ़ती मौजूदगी उसकी इसी छवि को मजबूत करती हैं।

इस चमक के पीछे एक ऐसी सच्चाई छिपी है, जो आने वाले समय में बड़े आर्थिक संकट का कारण बन सकती है।

ब्लूमबर्ग और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की ताजा रिपोर्ट्स ने साफ किया है कि चीन की अर्थव्यवस्था भीतर से कमजोर होती जा रही है और कर्ज का बोझ खतरनाक स्तर पर पहुंच चुका है। ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट के मुताबिक, चीन इस वक्त डिफ्लेशन यानी अपस्फीति की चपेट में है। बाजारों में सामान की कोई कमी नहीं है, लेकिन ग्राहक लगातार गायब होते जा रहे हैं।

अतिरिक्त उत्पादन क्षमता के चलते चीन में करीब 70 रोजमर्रा के उत्पादों की कीमतें उपभोक्ता मूल्य सूचकांक से भी ज्यादा तेजी से गिर रही हैं। फैक्ट्रियां लगातार उत्पादन कर रही हैं, पर घरेलू खपत कमजोर बनी हुई है।

कंपनियों को माल बेचने के लिए कीमतें इतनी घटानी पड़ रही हैं कि मुनाफा कमाना तो दूर, लागत निकालना भी चुनौती बन गया है।

कर्ज का पहाड़ और सरकारी दावों पर सवाल

रिपोर्ट में चीन के बढ़ते कर्ज को सबसे बड़ी चिंता बताया गया है। भले ही बीजिंग सरकार जीडीपी को पांच प्रतिशत के आसपास दिखा रही हो, लेकिन स्टेट एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ फॉरेन एक्सचेंज के आंकड़े कहीं ज्यादा गंभीर तस्वीर पेश करते हैं। अनुमान है कि 2025 के अंत तक चीन का सरकारी कर्ज करीब 18.8 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच सकता है। इसके अलावा, बाहरी कर्ज 2.37 से 2.44 ट्रिलियन डॉलर के बीच आंका जा रहा है। सबसे चिंताजनक स्थिति निजी और घरेलू कर्ज की है। निजी क्षेत्र का कर्ज इतनी तेजी से बढ़ा है कि वह अब चीन की जीडीपी के बराबर या उससे भी अधिक स्तर पर पहुंच चुका है। वर्ष 2016 में जहां कर्ज-जीडीपी अनुपात 106 प्रतिशत था, वहीं अब यह कई गुना बढ़कर अर्थव्यवस्था के लिए बड़ा खतरा बनता जा रहा है।

सेवा क्षेत्र की रफ्तार धीमी

ब्लूमबर्ग के विश्लेषण के अनुसार, चीन का सेवा क्षेत्र पिछले कुछ महीनों में लगातार कमजोर पड़ा है। हालात यह है कि सेवाओं से जुड़ा ग्रोथ इंडेक्स छह महीने के निचले स्तर पर पहुंच गया है। होटल, ट्रैवल, रिटेल और बिजनेस सर्विसेज जैसे सेक्टर उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर पा रहे हैं।

निर्यात के भरोसे जीडीपी

जीडीपी में बढ़ोतरी का कारण निर्यात बताया जा रहा है। घरेलू बाजार में न बिक पाने वाला माल चीन विदेशी बाजारों में भेज रहा है। दशकों में चीन की प्रति व्यक्ति आय जरूर बढ़ी है–1960 के दशक में 100 डॉलर से भी कम रहने वाली प्रति व्यक्ति जीडीपी 2024–25 में करीब 13,800 डॉलर तक पहुंच गई है।

आगे का रास्ता जोखिम भरा

आर्थिक इतिहास गवाह है कि जब किसी देश का कर्ज उसकी वास्तविक आय और उत्पादन क्षमता से तेज बढ़ता है, तो संकट टलना मुश्किल हो जाता है। ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट चेतावनी देती है कि चीन आज उसी नाजुक मोड़ पर खड़ा है। चमकदार विकास के पीछे छिपा कर्ज का गड्ढा अगर समय रहते नहीं संभाला गया, तो यह न सिर्फ चीन बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए भी बड़ा झटका साबित हो सकता है।

बाजार 30's

शेयर बाजार

सेंसेक्स			निफ्टी		
83,878	301.93		25,790	106.95	
टॉप गेनर			**टॉप गेनर**		
कंपनी	बंद भाव	बदलाव%	कंपनी	बंद भाव	बदलाव%
टाटा स्टील	183.20	2.75	कोल इंडिया	432.55	3.39
एशियन पेंट	2896.35	2.54	टाटा स्टील	183.30	2.75
टॉप लूजर			**टॉप लूजर**		
इंफोसिस	1595.95	-1.16	इंफोसिस	1597.60	-1.02
बजाजफाइनेंस	951.65	-0.93	टीएमपीवी	360.60	-1.00

कमोडिटी

	भाव	बदलाव
सोना	1,44,600	+2,900
चांदी	2,65,000	+15,000

करेंसी

डॉलर/रुपया

90.16 +0.02

एयर इंडिया ड्रीमलाइनर तैनात करेगी

नई दिल्ली। एयर इंडिया फरवरी से लंबी दूरी की अंतरराष्ट्रीय सेवाओं के लिए अपना नया बोइंग 787–9 विमान तैनात करेगी। निजीकरण के बाद विमान बेड़े में शामिल होने वाला पहला ड्रीमलाइनर है। एयर इंडिया ने सात जनवरी को सिएटल में बोइंग की एवरेट फैक्ट्री में पहले 'लाइन फिट ड्रीमलाइनर' का टाइटल हस्तांतरण पूरा किया और एयरक्राफ्ट 11 जनवरी को दिल्ली में उतरा।

बैटरी भंडारण योजना तय समयसीमा के अनुरूप

नई दिल्ली। रिलायंस इंडस्ट्रीज ने सोमवार को कहा कि बैटरी भंडारण विनिर्माण से जुड़ी उसकी योजनाओं में कोई बदलाव नहीं हुआ है और ये तय समयसीमा के अनुरूप आगे बढ़ रही हैं। चीन से प्रौद्योगिकी नहीं मिलने के बाद भारत में लिथियम–आयन बैटरी सेल बनाने की योजना रोकने से जुड़ी खबरों पर प्रतिक्रिया देते हुए रिलायंस इंडस्ट्रीज ने यह स्पष्टीकरण दिया।

रुपया अमेरिकी डॉलर के मुकाबले एक पैसे बढ़ा

मुंबई। रुपया सोमवार को निचले स्तर से उबरते हुए अमेरिकी डॉलर के मुकाबले एक पैसे की बढ़त के साथ 90.17 (अनंतिम) पर बंद हुआ। अमेरिकी मुद्रा में गिरावट और कच्चे तेल की कीमतों में कमी से रुपया लाभ में रहा। विदेशी मुद्रा विश्लेषकों ने कहा कि भारत में अमेरिका के नए दूत सर्जियो गोर के उस बयान के बाद शेयर बाजार की धारणा में भी सुधार हुआ।

आर्थिक वृद्धि दर सात प्रतिशत रहने का अनुमान

नई दिल्ली। भारत की आर्थिक वृद्धि दर के चालू वित्त वर्ष में 7.4 प्रतिशत और वित्त वर्ष 2026–27 में सात प्रतिशत रहने का अनुमान है। फिच ग्रुप की कंपनी बीएमआई ने कहा, 'चालू वित्त वर्ष 2025–26 के जीडीपी के मजबूत अग्रिम अनुमान, पिछले दो महीनों के दौरान अमेरिका को निर्यात होने वाले माल में वृद्धि और भारत के आर्थिक दृष्टिकोण के लिए अच्छे संकेत हैं।'

रोजगार में 2026 तक 11% वृद्धि की संभावना

मुंबई। वैश्विक डिजिटल प्रतिभा समाधान प्रदाता एनएलबी सर्विसेज ने सोमवार को कहा कि भारत में युवाओं की भर्ती 2026 तक 11 प्रतिशत बढ़ने का अनुमान है। इस दौरान आईटी सेवाओं, फिनटेक और हरित ऊर्जा क्षेत्रों में लगभग 1.28 करोड़ नौकरियां सृजित होंगी। हालांकि इसके लिए एआई कुशल और भविष्य के अनुकूल कार्यबल की बढ़ती मांग को पूरा करना जरूरी है।

चुनाव के कारण गुरुवार को बाजार बंद रहेंगे

नई दिल्ली। महाराष्ट्र में स्थानीय निकाय चुनावों के कारण गुरुवार, 15 जनवरी को शेयर बाजार बंद रहेंगे। बीएसई और एनएसई ने यह जानकारी दी। शेयर, वायदा, जिंस और 'इलेक्ट्रॉनिक गोल्ड रिसीट्स' में कारोबार बंद रहेगा। एनएसई ने कहा, 'महाराष्ट्र में 'नगर निगम' चुनाव के कारण गुरुवार, 15 जनवरी, 2026 को पूंजी बाजार खंड में अवकाश घोषित किया गया है।'

नवंबर के मुकाबले सब्जियों, मांस-मछली, अंडा, दाल और मसालों के दाम तेजी से बढ़े

झटका : दिसंबर में खुदरा महंगाई बढ़कर तीन माह की ऊंचाई पर

नई दिल्ली, विशेष संवाददाता। बीते महीने के दौरान खुदरा महंगाई दर में बढ़ोतरी दर्ज की गई है जो बढ़कर 1.33 फीसदी रही है। इससे पहले नवंबर में सीपीआई 0.71 फीसदी थी। वहीं, खाद्य वस्तुओं की महंगाई दर -2.71 फीसदी दर्ज की गई है, जो नवंबर में -3.91 प्रतित रही थी।

आंकड़ों से पता चलता है कि सब्जियों, मांस-मछली, अंडा, दाल, मसाले और व्यक्तिगत देखभाल के सामान की कीमतों में बढ़ोतरी के कारण कुल स्तर पर महंगाई दर में इजाफा हुआ है।

सोमवार को राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय की तरफ से जारी आंकड़ों से पता चलता है कि नवंबर के मुकाबले दिसंबर में महंगाई दर 0.62 अंकों को बढ़ोतरी हुई है लेकिन उसके बाद भी महंगाई दर रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के अनुमान से कम रही है। चालू वित्तीय वर्ष की तीसरी तिमाही में आरबीआई ने महंगाई दर 3.9 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया था।

बीते महीने ग्रामीण इलाकों में महंगाई दर बढ़कर 0.76 फीसदी रही, जो नवंबर में 0.10 फीसदी थी। वहीं, शहरी क्षेत्रों में महंगाई बढ़कर 2.03 फीसदी पहुंच गई, जो उससे पहले महीने 1.40 फीसदी थी।

इस अवधि में कई क्षेत्रों से जुड़ी महंगाई दर में नरमी भी देखने को मिली है। जैसे मकान (हाउसिंग) की महंगाई 2.86 फीसदी रही है जो एक महीने पहले 2.96 प्रतिशत थी। शिक्षा महंगाई 3.38 से घटकर 3.32 फीसदी रही है। वहीं, स्वास्थ्य महंगाई 3.60 से घटकर 3.43 फीसदी रही है।

ईंधन और बिजली की महंगाई दर 1.97 फीसदी रही है जो नवंबर में 2.32 प्रतिशत रही थी। जबकि परिवहन और संचार क्षेत्र की महंगाई 0.88 प्रतिशत से घटकर 0.76 फीसदी रही।

खुदरा और खाद्य महंगाई का सफर (प्रतिशत में)

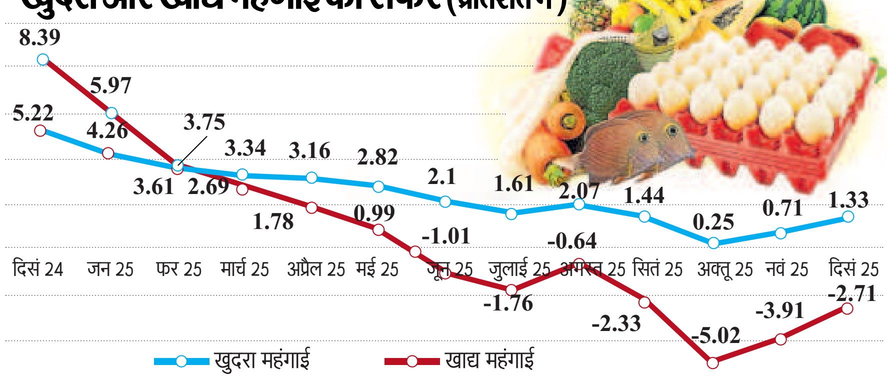

0.71 फीसदी थी नवंबर में खुदरा महंगाई दर

1.33 फीसदी हो गई दिसंबर में खुदरा महंगाई दर

इन राज्यों में महंगाई की दर सबसे ज्यादा दर्ज की गई

राज्यों के लिहाज से देखा जाए तो केरल में सबसे अधिक महंगाई है। जहां पर बीते महीने औसत महंगाई दर 9.49 फीदी रही है। इसके बाद कर्नाटक का नंबर आता है। जहां पर महंगाई दर 2.99 फीसदी दर्ज की हई है। इसके बाद आंध्र प्रदेश (2.71%), तमिलनाडु (2.67%) और जम्मू–कश्मीर (2.26%) रही है।

महीने के आधार पर बढ़ी-सालाना आधार पर घटी

महीने के आधार पर देखा जाए तो नवंबर के मुकाबले दिसंबर में सब्जियों, अनाज और मसालों की कीमतें बढ़ीं लेकिन सालाना आधार पर दिसंबर 2024 के मुकाबले दिसंबर 2025 में कीमतों में गिरावट आई है। सब्जियों के दाम 18.47% और दालें 15.09% घट गई। मसालों के दामों में भी 2.15 और अनाजों में 0.35% की नरमी रही। हालांकि तेल के दाम 6.75, फलों के 6.66 और मांस एवं मछलियों के दामों में 5.12% की वृद्धि हुई।

आईएमपीएस के जरिए राशि भेजना होगा महंगा

- एसबीआई के संशोधित शुल्क 15 फरवरी से, 25 हजार से अधिक धनराशि भेजने पर लगेगा शुल्क

नई दिल्ली, विशेष संवाददाता। भारतीय स्टेट बैंक के करोड़ों ग्राहकों के लिए मोबाइल ऐप या इंटरनेट बैंकिंग के जरिए तत्काल भुगतान सेवा (आईएमपीएस) महंगी होने जा रही है।

15 फरवरी से आईएमपीएस के जरिए ज्यादा रकम भेजने पर चार्ज देना होगा। अभी तक यह सेवा ज्यादातर मामलों में मुफ्त थी। अब 25 हजार रुपये तक आईएमपीएस के जरिए ऑनलाइन पैसे भेजना पहले की तरह बिल्कुल मुफ्त रहेगा, जिससे आम ग्राहकों पर ज्यादा असर नहीं पड़ेगा, लेकिन उससे ज्यादा की धनराशि भेजने पर शुल्क लगेगा।

बैंक के नए नियमों के हिसाब से ऑनलाइन चैनल के जरिए 25,000 से ज्यादा रकम भेजने पर शुल्क देना होगा। जैसे-जैसे रकम बढ़ेगी, शुल्क भी बढ़ता जाएगा। आईएमपीएस के जरिए 25 हजार से एक लाख रुपये तक भेजने पर दो रुपये शुल्क और उसके ऊपर जीएसटी देनी होगा। इसी तरह से एक से दो लाख पर छह फीसदी सेवा शुल्क और ऊपर से जीएसटी अतिरिक्त लगेगी। वहीं, दो से पांच लाख रुपये की धनराशि आईएमपीएस के माध्यम से ट्रांसफर करने पर 10 शुल्क और जीएसटी देना होगा।

अगर ग्राहक शाखा से आईएमपीएस करता है तो वहां पहले से ही चार्ज लगता आ रहा है जो आगे भी जारी रहेगा।

जनवरी तक शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह नौ प्रतिशत बढ़ा

नई दिल्ली, एजेंसी। चालू वित्त वर्ष में 11 जनवरी तक शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह 8.82 प्रतिशत बढ़कर 18.38 लाख करोड़ रुपये से अधिक हो गया है। आयकर विभाग ने कहा कि एक अप्रैल, 2025 से लेकर 11 जनवरी, 2026 के दौरान शुद्ध कॉरपोरेट कर संग्रह 8.63 लाख करोड़ रुपये से अधिक रहा जबकि गैर-कॉरपोरेट कर से 9.30 लाख करोड़ रुपये का संग्रह हुआ।

आयकर विभाग के मुताबिक, इस अवधि में प्रतिभूति लेनदेन कर से संग्रह 44,867 करोड़ रुपये का रहा। इस दौरान कर रिफंड सालाना आधार पर 17 प्रतिशत घटकर 3.12 लाख करोड़ रुपये रह गया।

सकल प्रत्यक्ष कर संग्रह चालू वित्त वर्ष में 11 जनवरी तक 4.14 प्रतिशत बढ़कर लगभग 21.50 लाख करोड़ रुपये रहा। वित्त वर्ष 2025-26 में सरकार ने प्रत्यक्ष कर संग्रह का लक्ष्य 25.20 लाख करोड़ रुपये रखा है।

स्टार-रेटिंग से एसी 7-8% तक महंगे होने के आसार

- अप्रैल-मई 2026 में कीमतों में एक और बढ़ोतरी संभव

नई दिल्ली, एजेंसी। अगर आप रूम एयर कंडीशनर खरीदने की योजना बना रहे हैं, तो आने वाले समय में आपको ज्यादा कीमत चुकानी पड़ सकती है। ब्रोकरेज फर्म इक्विरस की रिपोर्ट के अनुसार, जनवरी 2026 से लागू होने वाले नए स्टार-रेटिंग नियमों और लगातार बनी हुई कमोडिटी महंगाई के चलते एसी की कीमतों में 7-8 फीसदी तक बढ़ोतरी होने की संभावना है।

नई रेटिंग प्रणाली का मतलब है कि आपको पहले से कहीं ज़्यादा कुशल उपकरण मिल रहे हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि नए नियम लागू होने के बाद कंपनियां अपने नए मॉडल्स की कीमतों में इजाफा करेंगी। इसके अलावा अप्रैल–मई 2026 के दौरान कीमतों में एक और बढ़ोतरी हो सकती है, जिससे पूरे उद्योग में दामों का नया स्तर तय होगा और कंपनियों के मुनाफे पर बना दबाव कुछ हद तक कम होगा।

नए स्टार-वाले उपकरण पहले से महंगे होंगे। इसी आशंका के चलते बाजार में पहले ही खरीदारी का रुझान दिखने लगा है। रिपोर्ट के मुताबिक, दिसंबर से ही डीलर्स और ग्राहक बड़ी संख्या में पुराने स्टार-रेटिंग वाले मॉडल्स का स्टॉक कर रहे हैं।

दुर्लभ खनिज चुंबक योजना को अंतिम रूप दे रही सरकार

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय मंत्री एच डी कुमारस्वामी ने सोमवार को कहा कि सरकार दुर्लभ खनिज स्थायी चुंबक के निर्माण को बढ़ावा देने वाली योजना के लिए अनुरोध प्रस्ताव को अंतिम रूप देने की प्रक्रिया में है। उन्होंने घरेलू और अंतरराष्ट्रीय कंपनियों से इस बोली प्रक्रिया में भाग लेने का आग्रह किया।

भारी उद्योग और इस्पात मंत्री ने भारत और विदेश के विभिन्न औद्योगिक हितधारकों के साथ परामर्श बैठक की अध्यक्षता की। यह योजना दुर्लभ पृथ्वी स्थायी चुंबक के लिए एक आत्मनिर्भर, लचीला और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी परिवेश स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

मोबाइल फोन उत्पादन 75 अरब डॉलर तक पहुंचेगा

अनुमान

- 30 अरब डॉलर से अधिक का निर्यात शामिल होगा, पीएलआई योजना जारी रहेगी

नई दिल्ली, एजेंसी। उद्योग संगठन आईसीईए ने सोमवार को कहा कि चालू वित्त वर्ष के अंत तक देश में मोबाइल फोन उत्पादन 75 अरब डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है, जिसमें 30 अरब डॉलर से अधिक का निर्यात शामिल होगा।

इंडिया सेलुलर एंड इलेक्ट्रॉनिक्स एसोसिएशन (आईसीईए) के चेयरमैन पंकज महेंद्रू ने बताया कि भारत ने इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पादन में मजबूत वृद्धि दर्ज की है, जो 2025 में 133 अरब डॉलर तक पहुंच गया। इस दौरान निर्यात में तेजी से विस्तार जारी रहा।

उन्होंने कहा, मोबाइल फोन पीएलआई योजना 2025-26 के दौरान भी जारी रही, और मार्च 2026 में इसका आगामी समापन इस क्षेत्र के लिए एक और महत्वपूर्ण मील का पत्थर होगा। इस योजना में मोबाइल उत्पादन में काफी वृद्धि हुई है। आईसीईए के सदस्यों में एप्पल, फॉक्सकॉन, डिक्सन, वीवो, ओप्पो और लावा जैसी कंपनियां शामिल हैं।

सेंसेक्स पांच दिन की गिरावट से उबरा

मुंबई, एजेंसी। पिछले पांच कारोबारी सत्रों में भारी गिरावट के बाद सोमवार को स्थानीय शेयर बाजार उतार-चढ़ाव भरे कारोबार में बढ़त के साथ बंद हुए। शुरुआती 700 अंक गिरावट के बाद सेंसेक्स तेज वापसी करते हुए 300 अंक की तेजी के साथ बंद हुआ। कुल मिलाकर दिन में उसने 1000 अंक की बढ़त हासिल की। अंत में सेंसेक्स में 302 अंक की तेजी रही जबकि एनएसई निफ्टी 107 अंक चढ़ गया।

इस तरह स्थानीय शेयर बाजार पांच दिनों की गिरावट से उबरने में सफल रहा। पिछले पांच कारोबारी सत्रों में सेंसेक्स में कुल 2,185.77 अंक यानी 2.54 प्रतिशत और निफ्टी में 645.25 अंक यानी 2.45 प्रतिशत की गिरावट आई थी।

जानकारों ने कहा, बाजार की धारणा पर वैश्विक एवं द्विपक्षीय घटनाक्रम का मिला-जुला असर देखने को मिला। शुरुआती कारोबार में मौजूदा भू-राजनीतिक तनाव के चलते सतर्कता हावी रही लेकिन भारत-अमेरिका व्यापार समझौते पर प्रगति की खबर आने से बाजार की मनोदशा में सुधार देखा गया। सेंसेक्स के समूह में शामिल कंपनियों में से टाटा स्टील, एशियन पेंट्स, ट्रेंट, भारतीय स्टेट बैंक, हिंदुस्तान यूनिलीवर, अल्ट्राटेक सीमेंट, आईसीआईसीआई बैंक और भारती एयरटेल प्रमुख रूप से लाभ में रहीं।

अमेरिकी राजदूत के बयान से नई उम्मीद जगी

कारोबारियों ने कहा कि अमेरिका के नए राजदूत सर्जियो गोर के बयान से भारत–अमेरिका व्यापार समझौते को लेकर नई उम्मीद जगने और ऊर्जा, बैंकिंग एवं धातु शेयरों में निचले स्तरों पर खरीदारी आने से बाजार को सहारा मिला। हालांकि भू–राजनीतिक तनाव और विदेशी निवेशकों की लगातार बिकवाली ने तेजी को सीमित रखा। गोर ने कहा कि अमेरिका के लिए भारत जितना महत्वपूर्ण कोई अन्य देश नहीं है और दोनों पक्ष व्यापार समझौते को अंतिम रूप देने के लिए सक्रिय रूप से बातचीत कर रहे हैं।

कारपोरेट कॉर्नर

भारत के उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन ने दिल्ली कैंट में डीजी एनसीसी कैंप में नेशनल कैडेट कोर रिपब्लिक डे कैंप (आरडीसी) 2026 का उद्घाटन किया। भारत भर के 17 एनसीसी निदेशालयों से 898 गर्ल कैडेट्स सहित कुल 2406 कैडेट्स आरडीसी 2026 में भाग ले रहे हैं। कैडेट्स को संबोधित करते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा, आप आरडीसी में हिस्सा लेने वाले नहीं हैं, बल्कि न्यू इंडिया का चेहरा हैं।

डीएफसीसीआईएल और जेएनपीटी के बीच समन्वय बैठक आयोजित की गई, जिसमें जवाहरलाल नेहरू पोर्ट और पश्चिमी डेडीकेटेड फ्रेट कॉरिडोर के बीच रेल कनेक्टिविटी की स्थापना संबंधी प्रगति की समीक्षा हुई। इस दौरान डीएफसीसीआईएल प्रबंध निदेशक प्रवीण कुमार, जेएनपीटी के अध्यक्ष गौरव दयाल, निदेशक अनुराग शर्मा, कार्यकारी निदेशक मनीष कुमार अवस्थी समेत अन्य गणमान्य मौजूद रहे।

एनडीएमसी ने पालिका केंद्र नई दिल्ली में आयोजित विशेष परिषद बैठक में एनडीएमसी बजट 2026–27 प्रस्तुत किया। बैठक की अध्यक्षता मंत्री प्रवेश वर्मा ने की। बैठक में नई दिल्ली की सांसद बांसुरी स्वराज, एनडीएमसी अध्यक्ष केशव चंद्रा, उपाध्यक्ष कुलजीत सिंह चहल, परिषद के सदस्य अनिल वाल्मीकि, सरिता तोमर, दिनेश प्रताप सिंह और एनडीएमसी के सचिव/वित्तीय सलाहकार राकेश कुमार उपस्थित रहे।

बीएचईएल को कोयला गैसीकरण पैकेज मिला

नई दिल्ली। भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड ने बीसीजीसीएल से झारसुगुड़ा, ओडिशा में कोल टू 2000 टीपीडी अमोनियम नाइट्रेट परियोजना के लिए कोयला गैसीकरण और रॉ सिनगैस क्लीनिंग पैकेज का अनुबंध प्राप्त किया है। इस अनुबंध के अंतर्गत कोयला गैसीकरण और रॉ सिनगैस क्लीनिंग सुविधाओं की इंजीनियरिंग, खरीद, निर्माण, कमीशनिंग और प्रदर्शन गारंटी शामिल है, जो एकीकृत रासायनिक परिसर की मुख्य प्रक्रिया इकाइयां हैं।

आरईसी लिमिटेड को प्रतिष्ठित स्कोच अवार्ड्स–2025 में कॉर्पोरेट नेट जीरो ट्रांजिशन कैटेगरी में सिल्वर अवार्ड से सम्मानित किया गया है। यह अवॉर्ड आरईसी लिमिटेड की ओर से जनरल मैनेजर अवनीश कुमार भारती ने लिया।

आरईसी लिमिटेड ने शानदार प्रदर्शन किया

नई दिल्ली। आरईसी लिमिटेड ने वित्त वर्ष 2024–25 के लिए 'उत्कृष्ट' एमओयू रेटिंग हासिल की है। यह रेटिंग डिपार्टमेंट ऑफ पब्लिक एंटरप्राइजेज (डीपीई), वित्त मंत्रालय द्वारा इस बारे में तय दिशानिर्देशों के अनुसार दी जाती है।

एमओयू फ्रेमवर्क को भारत सरकार ने केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों के प्रदर्शन के मूल्यांकन के लिए तैयार किया है, ताकि उन उद्देश्यों को पूरा करने की उनकी क्षमता का आकलन किया जा सके, जिनके लिए इन उपक्रमों की स्थापना की गई है।

आईआरईडीए ने घोषित किए वित्तीय परिणाम

नई दिल्ली। इंडियन रिन्यूएबल एनर्जी डेवलपमेंट एजेंसी लिमिटेड ने वित्त वर्ष 2025–26 की तीसरी तिमाही के लिए अपने ऑडिटेड वित्तीय परिणामों की घोषणा की है। कंपनी ने इस अवधि में साल–दर–साल आधार पर मजबूत वृद्धि दर्ज की है, जो इसके प्रमुख वित्तीय संकेतकों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। आईआरईडीए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक प्रदीप कुमार दास ने कहा कि आईआरईडीए का प्रदर्शन नवीकरणीय ऊर्जा परिवर्तन को तेज करने के प्रति हमारी निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

एनबीसीसी ने हासिल की 'उत्कृष्ट' रेटिंग

नई दिल्ली। आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय के अधीन आने वाली नवरत्न सीपीएसई, एनबीसीसी (इंडिया) ने अपने एमओयू मूल्यांकन वर्ष 2024–25 में 97.58 अंकों के साथ 'उत्कृष्ट' रेटिंग प्राप्त की है। यह उपलब्धि परियोजना निष्पादन, गुणवत्ता मानकों, संधारणीयता कार्य पद्धतियों और निगमित अभिशासन में कंपनी के सशक्त प्रदर्शन की पुनः पुष्टि करती है। एनबीसीसी ने इससे पूर्व वर्ष 2023–24 के एमओयू मूल्यांकन में भी 'उत्कृष्ट' रेटिंग प्राप्त की थी।

गाजियाबाद नगर आयुक्त विक्रमादित्य सिंह मलिक के निर्देश अनुसार स्वास्थ्य विभाग टीम ने अकबरपुर बहरामपुर स्थित ट्रांसफर स्टेशन पर सफाई मित्रों का सम्मान किया गया। नगर आयुक्त ने 150 सफाई मित्रों को पीपीई किट भेंट कीं। इस मौके पर मुख्य अभियंता निर्माण नरेंद्र कुमार चौधरी, नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉ मिथिलेश तथा जेएस एनवायरो से मैनेजिंग डायरेक्टर जीवन उपाध्याय उपस्थित रहे।

राज्य निर्वाचन आयोग, राजस्थान
(द्वितीय तल, विकास खण्ड, सचिवालय, जयपुर)
email- secraj@rajasthan.gov.in, FAX: 0141-2227280, 2227072
क्रमांकः F3 (58)/नपा./स्टोर/रानिआ/2025/337 दिनांकः– 09.01.2026
अल्पकालीन बोली आमंत्रण सूचना
राज्य निर्वाचन आयोग राजस्थान, जयपुर में निर्वाचन कार्य हेतु अमिट स्याही (अनुमानित लागत 9,50,00000/- रुपये) कय हेतु दर संविदा के लिए अनुभवी विनिर्दिष्ट ओइएम/मूल विनिर्माताओं से बोली, दिनांक 19.01.26 को अपरान्ह 02.00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। विस्तृत बोली आमंत्रण सूचना एवं बोली दस्तावेज आयोग की वेबसाईट http://secrajasthan.gov.in, SPPP Portal पर एवं ई-प्रोक पर देखे व प्राप्त किये जा सकते हैं।
NIB CODE- SEC2526A0014 सचिव
UBN- SEC2526GLRC00013 राज्य निर्वाचन आयोग
E-Proc Tender ID- 2026_SECRJ_526569_1 राजस्थान, जयपुर
DIPR/C/425/2026

बनारस रेल इंजन कारखाना, वाराणसी-221004
बिड नं. : ई–52/2025–26 ई–निविदायें दिनांक 10.01.2026
भारत के राष्ट्रपति के लिए एवं उनकी ओर से निम्नलिखित वस्तुओं का आपूर्ति हेतु ई–निविदायें आमंत्रित की जाती है। केवल ई–प्रस्ताव ही स्वीकार है, जिनके लिए वेंडर का क्लास ।।। का डिजिटल सिग्नेचर एवं IREPS पर पंजीकरण आवश्यक है। निविदाओं का विवरण निम्नलिखित क्रम से हैं–: क्रम सं., निविदा संख्या, (खुलने की तिथि), विवरण और मात्रा।
1. 09251196ए विश्वजनिन निविदा (05.02.2026) 800 एम्पियर फ्यूज, पुर्जा सं. (18310072), 835 नग। बिड संख्या : ई–52/2025–2026 दिनांक 03.01.2026, 2. 04251067ए (03.02.2026) किट फॉर बोगी फ्रेम असेम्बली, एज पर ड्राइंग सं. ELSK-0200 टू पार्ट नं. 29100781, 102 सेट। बिड संख्या : ई–52/2025–2026 दिनांक 05.01.2026, 3. 04251062सी (27.01.2026) बोगी फ्रेम अरेंजमेंट टू पी0 एल0 नं0 11522010, 06 नं0। बिड संख्या : ई–52/2025–2026 दिनांक 05.01.2026, शुद्धि–पत्र– 4. बिड सं. ई–43/2025–26, 04251020ए (27.01.2026) रिवीजन– 4, सुधार का पूर्ण विवरण– निविदा खुलने की तिथि को 06.01.2026 के स्थान पर 27.01.2026 पढ़ा जाय। बिड संख्याः नोटिस/शुद्धिपत्र/ आईआरईपीएस/ 2025–26/52 दिनांक 05.01.2026, शुद्धिपत्र– 5. निविदा सं. 10251327, पार्ट नंबर 16160034 स्प्रिंग एग्जॉस्ट वाल्व रिवीजन–01, सुधार का विवरण– 1. यह निविदा दिनांक– 05.01.2026 के स्थान पर दिनांक– 16.01.2026 को खुलेगी। संशोधन सूचना– बिड संख्या : ई–52/2025–2026 दिनांक 08.01.2026, 6. 05255305 बिड आमंत्रण सं.–50, वर्तमान खुलने की तिथि– 09.01.2026, संशोधित खुलने की तिथि– 15.01.2026, संशोधन सूचना– बिड संख्या : ई–52/2025–2026 दिनांक 02.01.2026, 7. बिड आमंत्रण सं.–ई–48/2025–26, निविदा सं. 06251062, क्लाउज– निविदा खुलने की तिथि, वर्तमान निविदा खुलने की तिथि– 29.12.2025, संशोधित निविदा खुलने की तिथि– 15.01.2026, अन्य नियम एवं शर्तें अपरवर्तित रहेंगी। उक्त निविदाओं का विस्तृत विवरण www.blw.indianrailways.gov.in और www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है।
पीआरओ/बरेका/एस–55 प्र.मु.सा.प्र.
/blwvaranasi वेबसाइट: www.blw.indianrailways.gov.in

चिंतन

भारत-अमेरिका संबंधों को सुधार पाएंगे गोर?

भारत में अमेरिका के राजदूत सर्जियो गोर ने सोमवार को नई दिल्ली में कार्यभार संभाल लिया। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पिछले साल गोर की नियुक्ति की घोषणा की थी। भारत-अमेरिका संबंध पिछले एक साल में अब तक के सबसे निचले स्तर पर हैं। अमेरिकी वाणिज्य मंत्री हावर्ड लुटनिक की हालिया टिप्पणी से ऐसा संदेश गया, जैसे भारत-अमेरिका व्यापार समझौता पूरी तरह पटरी से उतर गया है, क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ट्रंप को फोन नहीं किया। जबकि पिछले साल दोनों नेताओं के बीच आठ बार बातचीत हुई थी। भारत पर इस समय दुनिया में सर्वाधिक टैरिफ लागू है। लगातार वार्ता होने के बावजूद दोनों देश अब तक किसी समझौते पर नहीं पहुंच सके हैं। समझा जाता है कि गोर के आने के बाद दोनों देशों के संबंध एक बार फिर पटरी पर लौट सकते हैं। गोर की टैरिफ पर समझौते को लेकर दोनों देशों के बीच चल रही वार्ता पर यह टिप्पणी खास तौर पर ध्यान देने योग्य है। गोर ने कहा, 'सच्चे दोस्त असहमत हो सकते हैं, लेकिन अंत में हमेशा अपने मतभेद दूर कर लेते हैं।' राष्ट्रपति ट्रंप की हाल की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ बातचीत को याद करते हुए गोर ने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति अक्सर अपनी भारत यात्रा और प्रधानमंत्री मोदी के साथ अपनी व्यक्तिगत समझ का जिक्र करते हैं। गोर ने कहा, आशा है कि राष्ट्रपति जल्द ही भारत आएंगे, उम्मीद है अगले एक या दो वर्षों में। दोनों देशों के संबंधों पर गोर ने आगे कहा, 'भारत से अधिक महत्वपूर्ण कोई साझेदार नहीं है। आने वाले महीनों और वर्षों में भारत में राजदूत के रूप में मेरा लक्ष्य एक अत्यंत महत्वाकांक्षी एजेंडा आगे बढ़ाना है। हम यह एक सच्चे रणनीतिक साझेदार के रूप में करेंगे, जहां दोनों देश अपनी-अपनी ताकत, सम्मान और नेतृत्व लेकर आगे आएंगे।' गोर का यह रुख दोनों देशों के रिश्तों पर जमी बर्फ को पिघलाने का काम कर सकता है। हालांकि ट्रंप का एक साल का कार्यकाल भारत के लिए किसी भी दृष्टि से अच्छा नहीं रहा। टैरिफ को अगर छोड़ भी दें तो भी ट्रंप ने वह हर काम किया, जिससे भारत के हितों पर प्रतिकूल असर पड़ता हो। एच1बी वीजा से लेकर रेमिटेंस पर टैक्स बढ़ाना, अवैध भारतीयों को हथकड़ी लगाकर वापस भेजना, अमेरिका जाने के इच्छुक भारतीयों के लिए वीजा में देरी आदि ऐसे कई काम हुए हैं, जिसने आम भारतीय के दिल में भी अमेरिका के प्रति सम्मान को कम किया है। गोर अभी अपने कार्यकाल की शुरुआत कर रहे हैं, लेकिन उनके लिए भारतीयों के मन में अमेरिका का सम्मान स्थापित करना भी बड़ी चुनौती होगा। पाकिस्तान के परोक्ष शासक आसिम मुनीर को ट्रंप ने जिस तरह से गले लगाया है, वह किसी भारतीय को पसंद नहीं आया। इसलिए गोर की भारत में राह बहुत आसान होगी, यह कह पाना मुश्किल है। उन्होंने खुद स्वीकार किया कि यह 'आसान काम नहीं' है। जब वह कहते हैं कि व्यापार हमारे रिश्ते का महत्वपूर्ण हिस्सा है, लेकिन हम सुरक्षा, आतंकवादरोधी प्रयास, ऊर्जा, प्रौद्योगिकी, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भी मिलकर काम करते रहेंगे तो साफ हो जाता है कि अमेरिका की प्राथमिकता क्या है? गोर भारत में अमेरिकी राजदूत के साथ ही दक्षिण एवं मध्य एशिया के विशेष दूत भी हैं।

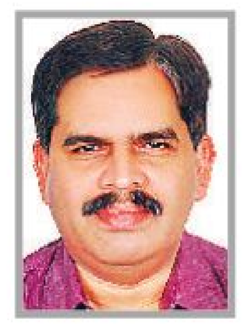

आर्थिकी
अश्विनी महाजन

जीडीपी वृद्धि से नहीं रुकेगी रुपए की गिरावट

पिछली तिमाही में भारत की जीडीपी ग्रोथ 8.2 प्रतिशत तक पहुँच गई है। तेज़ आर्थिक ग्रोथ से आम तौर पर किसी देश की करेंसी मज़बूत होनी चाहिए, लेकिन भारत अक्सर एक विरोधाभास का अनुभव करता है, जहां जीडीपी ग्रोथ ज़्यादा होने पर भी उसकी करेंसी काफ़ी कम हो जाती है। इस विरोधाभास को समझने की ज़रूरत है, क्योंकि विनिमय दर में उतार-चढ़ाव जीडीपी ग्रोथ से तय नहीं होता है, बल्कि कई तत्वों से तय होता है, जिनका असर विदेशी मुद्रा की मांग और पूर्ति पर पड़ता है। वास्तव में, हाई ग्रोथ वास्तविक आर्थिक विस्तार को दर्शाती है, जबकि रुपये का मूल्य सापेक्ष कीमतों, पूंजी प्रवाह और वैश्विक वित्तीय परिस्थितियों को प्रतिबिंबित करता है।

आज़ादी के बाद से, भारतीय रुपये की अमेरिकी डॉलर के मुकाबले धीरे-धीरे कमज़ोर होने की प्रवृत्ति रही है। 2024 में 3.30 रुपये प्रति अमेरिकी डॉलर से गिरता हुआ 2025 के मध्य तक 83.4 रुपये और दिसंबर 2025 तक लगभग 90 रुपये प्रति अमेरिकी डॉलर हो गया। रुपये की कमज़ोरी की रफ़्तार दशकों में अलग-अलग रही है, जो घरेलू पॉलिसी और अंतरराष्ट्रीय आर्थिक हालात दोनों को दिखाती है। शुरुआती सालों (1947–1966) में, ब्रिटिश पाउंड से जुड़े स्थिर विनिमय डर के तहत रुपया लगभग 4.4% वार्षिक की दर से गिरा। 1966 और 1976 के बीच, 1966 के अवमूल्यन और कड़े नियमन के बाद अवमूल्यन सालाना 1.8% तक धीमा हो गया।

1976-1986 के बीच तेल के झटकों और आर्थिक दबाव की वजह से हर साल 3.5% की थोड़ी ज़्यादा गिरावट देखी गई, जबकि 1986-1996 में सबसे ज़्यादा 10.9% सालाना गिरावट देखी गई, जो भुगतान शेष संकट और बाज़ार निर्धारित विनिमय दर की वजह से हुई। उदारीकरण के बाद, 1996 के बाद से, रुपये की गिरावट में कमी आई। 1996-2004 के दौरान हर साल 3.0%, 2004-2014 में हर साल 2.9%, और 2014-2024 तक हर साल 3.3%। कुल मिलाकर, जबकि गिरावट संरचनात्मक है, 1990 के दशक के बाद नीति सुधारों और आर्थिक स्थिरता ने इस प्रवृत्ति को स्थायित्व प्रदान किया। हालांकि, पिछले एक साल में रुपये में 4.7 प्रतिशत की ज़्यादा तेज़ी से गिरावट आई है, यह एक अल्पकालिक घटना लगती है। यह एक आम धारणा है कि एक मजबूत अर्थव्यवस्था का मतलब है कि उस मुद्रा की ताकत भी मजबूत होगी। वर्तमान समय में यह धारणा ग़लत साबित हो रही है। हम देखते हैं कि पिछले लगभग एक दशक में भारत की अर्थव्यवस्था अन्य बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में तेज़ गति से बढ़ रही है और पिछले लगभग पांच वर्षों से इसे दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था होने का गौरव प्राप्त है। भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार (जीडीपी) 2014 में 2.07 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2025 में 4.18 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया है। इस दौरान प्रति व्यक्ति आय भी 1554 अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2878 अमेरिकी डॉलर हो गई है। अगर हम वर्तमान मूल्यों पर जीडीपी देखें, तो यह 2014-15 में 106.6 लाख करोड़ रुपये से तीन गुना से भी अधिक बढ़कर 2024-25 में 331.03 लाख करोड़ रुपये हो गई है। दिलचस्प बात यह है कि पिछले दो सालों में, रुपये-डॉलर विनिमय दर में उतार-चढ़ाव एक जैसा नहीं रहा है। पिछली तिमाही में, भारत की जीडीपी ग्रोथ 8.2 प्रतिशत तक पहुंच गई है, जिसे संघर्षों और युद्धों के कारण भूराजनीतिक तनाव और अमरीका के राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा शुरू किए गए अभूतपूर्व टैरिफ युद्ध के कारण अस्त-व्यस्त वैश्विक अर्थव्यवस्था के बीच काफी अच्छा माना जाता है। तेज़ आर्थिक ग्रोथ से आम तौर पर किसी देश की करेंसी मज़बूत होनी चाहिए, लेकिन भारत अक्सर एक विरोधाभास का अनुभव करता है, जहां जीडीपी ग्रोथ ज़्यादा होने पर भी उसकी करेंसी काफ़ी कम हो जाती है। इस विरोधाभास को समझने की ज़रूरत है, क्योंकि विनिमय दर में उतार-चढ़ाव जीडीपी ग्रोथ से तय नहीं होता है, बल्कि कई तत्वों से तय होता है, जिनका असर

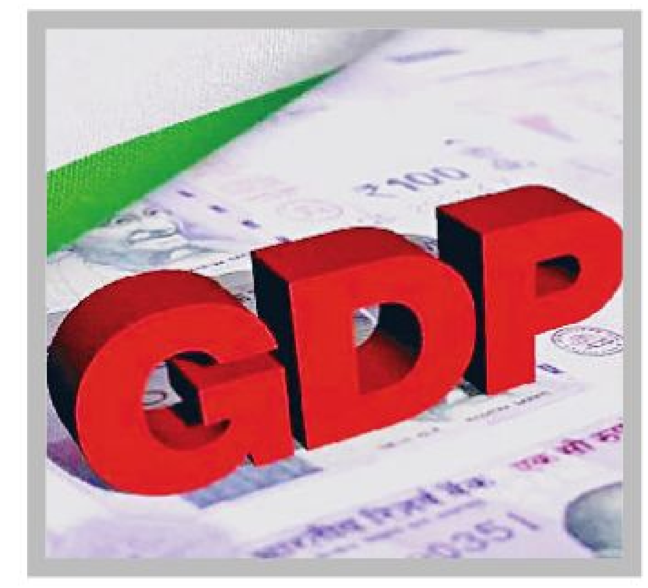

विदेशी मुद्रा की मांग और पूर्ति पर पड़ता है। पहला, विनिमय दर सिर्फ़ जीडीपी ग्रोथ के बजाय पूंजीगत प्रवाह से ज़्यादा चलती है। मज़बूत ग्रोथ के बावजूद, अगर विदेशी निवेशक वैश्विक अनिश्चितता, अपने देश/देशों में बढ़ती ब्याज दरों, या रिस्क से बचने की वजह से पूंजी निकालते हैं, तो रुपया कमज़ोर हो जाता है। भारत में ठीक यही हुआ है; 2025 में ही, विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफपीआई) ने 15 दिसंबर, 2025 तक भारतीय स्टॉक मार्केट से 18.4 बिलियन अमरीकी डॉलर निकाले, भारतीय अर्थव्यवस्था में किसी कमज़ोरी की वजह से नहीं, बल्कि अपने ही कारणों से। फिर से, हम देखते हैं कि एफपीआई की भारी निकासी के बावजूद, भारतीय स्टॉक मार्केट अपने ग्रोथ के रास्ते पर चलते रहे हैं। निकासी के लगातार दबाव का विदेशी मुद्रा की पूर्ति पर बुरा असर पड़ा है और इसके कुल असर ने रुपये की गिरावट में अहम भूमिका निभाई है। दूसरा, मज़बूत होने के बजाय, ज़्यादा जीडीपी ग्रोथ, रुपये की गिरावट का कारण भी बन सकती है। भारत में ज़्यादा ग्रोथ अक्सर आयात को बढ़ाती है, खासकर कच्चे तेल, इलेक्ट्रॉनिक्स और पूंजीगत सामान के लिए। बढ़ते आयात से डॉलर की मांग बढ़ती है और रुपये पर दबाव पड़ता है। हम देखते हैं कि इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल, मशीनरी और कई दूसरे क्षेत्रों की मैन्युफैक्चरिंग के लिए कलपुर्जों और कच्चे माल का आयात ज़रूरी हो जाता है, जिससे विदेशी मुद्रा की माँग बढ़ती है। इसके अलावा, बढ़ी हुई मैन्युफैक्चरिंग निर्यात से ज्यादा देश में ही उपभोग हो जाती है। गौरतलब है कि भारत के वस्तु व्यापार में घाटा 2023-24 में 240 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2024-25 में 282.2 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया। इससे भी बड़ी बात यह है कि इस घाटे में से 85.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर और 99.2 बिलियन यूएस डॉलर सिर्फ़ चीन से थे। यह प्रवृत्ति 2025-26 में भी जारी रहेगी, जहाँ अप्रैल से सितंबर 2025 के पहले छह महीनों में, वस्तु व्यापार में घाटा 59.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया है। तीसरा, डॉलर के दबदबे और दुनिया भर में मॉनेटरी सख्ती से भी रुपया कमजोर हो रहा है, जो भारतीय अर्थव्यवस्था के दायरे से बाहर है। अमेरिकी फेडरल रिजर्व द्वारा सख्ती के समय, ज़्यादातर करेंसी के मुकाबले डॉलर मजबूत होता है। ऐसे समय में, रुपये में गिरावट दुनिया भर में डॉलर की मजबूती को दिखाती है, घरेलू कमजोरी को नहीं। चौथी बात, महंगाई से करेंसी की वैल्यू में गिरावट आती है। भारत के मामले में, अतीत में अधिक महंगाई रुपये के कमज़ोर होने का एक बड़ा कारण रही है। कम महंगाई न केवल हमारे निर्यात की प्रतिस्पर्धात्मकता को बेहतर बनाती है, बल्कि आयात पर भी दबाव कम करती है। इस तरह यह व्यापार शेष और भुगतान शेष को नियंत्रण में रखने तथा घरेलू करेंसी को स्थिर बनाए रखने में मदद कर सकती है।

पांचवीं बात, भारत की अधिकांश ग्रोथ निर्यात के बजाय घरेलू खपत और सार्वजनिक निवेश से संचालित होती है। जब ग्रोथ घरेलू मांग से आती है, तो निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता में समान अनुपात में वृद्धि हुए बिना यह अपने आप करेंसी की मज़बूती में नहीं बदलती। छठी बात, कई बार सरकार स्वयं निर्यात की प्रतिस्पर्धात्मकता बनाए रखने के लिए रुपये की कीमत कम होने देती है या उसे प्रोत्साहित करती है। इसलिए, कभी-कभी रुपये की गिरावट एक नीति होती है, न कि किसी आर्थिक विफलता का संकेत। वास्तव में, हाई ग्रोथ वास्तविक आर्थिक विस्तार को दर्शाती है, जबकि रुपये का मूल्य सापेक्ष कीमतों, पूंजी प्रवाह और वैश्विक वित्तीय परिस्थितियों को प्रतिबिंबित करता है। दोनों का एक साथ होना कोई विरोधाभास नहीं है, बल्कि संरचनात्मक रूप से आयात-निर्भर अर्थव्यवस्था की एक विशेषता है।

(लेखक दिल्ली विवि के पूर्व प्रोफेसर हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया **haribhoomi@gmail.com** पर दे सकते हैं।

लोक संस्कृति
बाल मुकुन्द ओझा

लोक संस्कृति और समृद्धि का पर्व है लोहड़ी

देश की बहुरंगी लोकसंस्कृति का महत्वपूर्ण त्योहार लोहड़ी मकर संक्रान्ति के एक दिन पहले मनाया जाता है। इस साल लोहड़ी पर्व 13 जनवरी को मनाया जाएगा। लोहड़ी का पर्व फसल से जुड़ा है। यह पर्व नई फसल की बुआई और पुरानी फसल की कटाई से संबंधित है। विशेष रूप से पंजाब और हरियाणा सहित उत्तर भारत में यह त्योहार परंपरागत हंसी-ख़ुशी, उमंग-उत्साह के साथ मनाया जाता है। प्रवासी भारतवासी विदेशों में भी अपने रंगीले त्योहार की खुशियां गीत, संगीत और नृत्य के साथ बांटते है। लोहड़ी का त्योहार हर साल 13 जनवरी को मनाया जाता है। ज्योतिष विज्ञान के अनुसार, यह त्योहार सूर्य की उत्तरी गोलार्ध की यात्रा का प्रतीक है। मुख्यतः पंजाब और हरियाणा सहित उत्तर भारत के इस लोकप्रिय फसल उत्सव में अच्छी फसल के लिए आभार व्यक्त करने और ईश्वर से सुख समृद्धि के लिए प्रार्थना करने के लिए पवित्र अलाव जलाया जाता है। लोहड़ी मनाने के पीछे भी एक कहानी है जिसके नायक दुल्ला भट्टी हैं। बताया जाता है कि सांदल बार इलाके के जागीरदार ने एक ब्राह्मण की दो बेटियों को उठा लिया था। यह इलाका अब पाकिस्तान के मुल्तान शहर के पास है। दुल्ला मुगलों के खिलाफ तब गुरिल्ला लड़ाई कर रहे थे। कहानी के मुताबिक दुल्ला भट्टी ने दोनों लड़कियों को छुड़ाया और खुद गरीब ब्राह्मण की जगह उनका बाप बना। लड़कियों के सिर के सालू (पल्लू) को बेटियों की इज्जत माना जाता था, जिसे उसने रखवाया। तब किसी गरीब के हक में और वह भी लड़कियों के हक में खड़े होना बड़ी बात थी। हर त्योहार की तरह यह भी दोस्तों, परिवार और रिश्तेदारों के साथ मिलकर मनाया जाता है। उपले और लकड़ी की मदद से बोनफायर जलाया जाता है। पंजाब में लोहड़ी का त्योहार प्रमुख रूप से और बड़े धूमधाम के साथ मनाया जाता है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन से दिन छोटा और रात काफी बड़ी होती है। फसल कटाई के मौके पर मनाए जाने वाले इस त्योहार को बोनफायर जलाकर सेलिब्रेट किया जाता है। वहीं लोग इसके चारों तरफ घूमकर नाचते हैं और आग में प्रसाद डालते हैं। पंजाब के अलावा हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश आदि राज्यों में इसकी धूम होती है। पारिवारिक समूह के साथ लोहड़ी पूजन करने के बाद उसमें तिल, गुड़, रेवड़ी एवं मूंगफली का भोग लगाया जाता है। ढोल की थाप के साथ गिद्दा और भाँगड़ा नृत्य इस अवसर पर विशेष आकर्षण का केंद्र होते हैं। पंजाबी समाज में इस पर्व की तैयारी कई दिनों पहले ही शुरू हो जाती है। इसका संबंध मन्नत से जोड़ा गया है अर्थात जिस घर में नई बहू आई होती है या घर में संतान का जन्म हुआ होता है तो उस परिवार की ओर से खुशी बाँटते हुए लोहड़ी मनाई जाती है। सगे-संबंधी और रिश्तेदार उन्हें आज के दिन विशेष सौगात के साथ बधाइयाँ भी देते हैं। लोहड़ी से 10-12 दिन पहले ही बच्चे 'लोहड़ी' के लोकगीत गाकर दाने, लकड़ी और उपले इकट्ठे करते हैं। इस सामग्री से चौराहे या मुहल्ले के किसी खुले स्थान पर आग जलाई जाती है। रेवड़ी और मूंगफली अग्नि की भेंट किए जाते हैं तथा ये ही चीजें प्रसाद के रूप में सभी लोगों को बाँटी जाती हैं। घर लौटते समय 'लोहड़ी में से दो चार कोयले प्रसाद के रूप में, घर पर लाने की प्रथा भी है। लोग अग्नि के चारों ओर चक्कर काटते हुए नाचते-गाते हैं व आग मे रेवड़ी, मूंगफली, खील, मक्की के दानों की आहुति देते हैं। आग के चारों ओर बैठकर लोग आग सेंकते हैं व रेवड़ी, खील, गज्जक, मक्का खाने का आनंद लेते हैं। जिस घर में नई शादी हुई हो या बच्चा हुआ हो उन्हें विशेष तौर पर बधाई दी जाती है। पहले बेटा होने पर त्योहार मनाया जाता था, मगर अब कन्या होने पर दूने जोश और उत्साह से कन्या लोहिड़ी का पर्व मनाया जाता है। इस आयोजन का उद्देश्य बेटियों को समाज में बेटों के बराबर मान-सम्मान मिले व लोगों की नकारात्मक सोच को बदलना है। आज लोहड़ी के त्योहार की पवित्रता सैकड़ों गुणा बढ़ गई है, क्योंकि यहां भारतीय संस्कृति में देवी के रूप में पूजी जाने वाली कन्याओं की लोहड़ी मनाई जा रही है। सच है कि जिनके यहां बेटी ने जन्म लिया है, वे समाज की रूढ़ियों को तोड़कर बेटी की पहली लोहड़ी हर्षोल्लास से मना रहे हैं। पंजाबी समाज ने कन्या लोहड़ी मनाने की पहल कर देशवासियों का ध्यान बेटी के मान-सम्मान से जोड़कर पर्व मानाने की पवित्रता को द्विगुणित किया है।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

श्रीकृष्ण का क्रिया योग

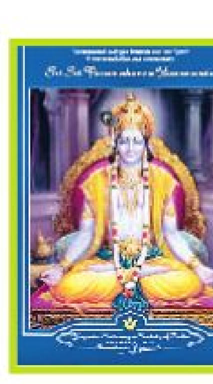

संकलित
दर्शन

योगदा सत्संग सोसाइटी के संस्थापक और 'योगी कथामृत' के लेखक श्री श्री परमहंस योगानंद की श्रीमद्भगवद्गीता पर व्याख्या 'ईश्वर-अर्जुन संवाद' के अनुसार, कृष्ण शब्द की अनेक व्युत्पत्ति में हैं। इनमें 'श्याम' सर्वाधिक प्रचलित है, जो उनके रंग-रूप की ओर संकेत करता है। उन्हें चित्रों में प्रायः गाढ़े नीले रंग का दिखाया जाता है, जो देवत्व का प्रतीक है। नीला रंग दिव्य नेत्र में (भ्रूमध्य के बीच) दिखने वाले नीले प्रकाश का भी प्रतीक है, जो योग में चेतना की कूटस्थ चैतन्य अवस्था को दर्शाता है। मतलब कृष्ण का रंग आध्यात्मिकता का भी प्रतीक है और एक गूढ़ अर्थ की ओर संकेत करता है। योगानंद जी के अनुसार, इंद्रिय जनित लिप्स ग्रस्त संसार दिव्य प्रेम की शुद्धता को नहीं समझ पाता। शाब्दिक अर्थों से परे गोपियों संग कृष्ण लीलाओं का प्रतीकात्मक अर्थ, ब्रह्म और सृष्टि के उस रास से है, जो ईश्वरीय लीला को संसार में व्यक्त करता है। कृष्ण की वंशी की मधुर तान भक्तों को ध्यान जनित समाधि के मंडप में आने को पुकारती हैं, ताकि वह आनंददायक ईश्वरीय प्रेम का पान कर सकें। कृष्ण के जीवन का दर्शन हमें भौतिक जीवन के दायित्वों के निर्वहन और उन्हीं के बीच ईश्वर का सानिध्य पाने के प्रयासों के मध्य सामंजस्य साधना सिखाता है। कृष्ण सिखाते हैं कि परिवेश कुछ भी हो, ईश्वर को वहीं ले आओ, जहां उसने तुम्हें रखा है। कृष्ण ने अपने राजसी दायित्व निभाने हेतु दुष्ट शासकों के विरुद्ध कई अभियान किए, जिनमें कौरव-पांडवों के बीच हुए महाभारत युद्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बहुत सारे काम के बदले एक काम को बेहतर करे

संकलित
प्रेरणा

पुराने समय में भारद्वाज मुनि थे। वे देवगुरु बृहस्पति के पुत्र थे। भारद्वाज बहुत सारा ज्ञान हासिल करना चाहते थे। उनकी सोच ये थी कि उन्हें संसार की सारी बातों का ज्ञान हो जाए। इसके लिए वे लगातार अध्ययन करते रहते थे। एक दिन बृहस्पति ने अपने पुत्र भारद्वाज से कहा कि पूरे संसार का ज्ञान वेदों में है। अगर तुम वेद पढ़ लोगे तो समझ लो कि तुमने पूरा ज्ञान हासिल कर लिया है। पिता की बात मानकर भारद्वाज वेद पढ़ने लगे। भारद्वाज मुनि की संकल्प शक्ति और पढ़ाई की एकाग्रता देखकर देवराज इंद्र प्रसन्न हो गए और वे भारद्वाज के सामने प्रकट हुए। इंद्र ने कहा कि मैं तुम्हारी लगन देखकर बहुत प्रसन्न हूं। तुम मुझसे कोई भी वर मांग सकते हो। भारद्वाज ने इंद्र से कहा कि संसार में ज्ञान बहुत सारा है, लेकिन मेरी उम्र बहुत कम है। कृपया करके मेरी उम्र सौ साल बढ़ा दीजिए। इंद्र ने भारद्वाज की उम्र सौ वर्ष और बढ़ा दी। भारद्वाज मुनि को ज्ञान हासिल करते-करते सौ वर्ष भी बीत गए। इसके बाद देवराज इंद्र ने उनकी उम्र सौ साल और बढ़ा दी। अगले सौ साल और बीत गए, लेकिन भारद्वाज को पूरा ज्ञान नहीं मिल सका। जब अगले 100 भी बीत गए गए, तब इंद्र भारद्वाज के सामने प्रकट हुए और बोले कि भारद्वाज सामने तीन पहाड़ हैं। क्या हम इन पहाड़ों से एक मुट्ठी मिट्टी लेकर इन पहाड़ों की व्याख्या कर सकते हैं? ये संभव नहीं है। ठीक इसी तरह संसार का ज्ञान है। संसार का ज्ञान अथाह है। किसी एक व्यक्ति के लिए पूरा ज्ञान हासिल करना संभव नहीं है।

अंतर्मन

आज की पाती

बच्चों को सोशल मीडिया से दूर रखें

सोशल मीडिया के लगातार उपयोग ने बच्चों में चिंता, अवसाद, नींद की कमी, साइबर बुलिंग, पढ़ाई में गिरावट, आत्मविश्वास में कमी, हिंसक या भ्रामक सामग्री का संपर्क जैसी समस्याएं तेज़ी से बढ़ाई हैं। राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग सहित कई संस्थाओं ने बार-बार चेतावनी दी है कि सोशल मीडिया कंपनियां नाबालिगों को प्लेटफॉर्म से दूर रखने में विफल रही हैं। इस बढ़ती चिंता के बीच दुनिया के दूसरे कोने से एक बेहद साहसिक और ऐतिहासिक निर्णय सामने आया, ऑस्ट्रेलिया ने 16 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया पर सख्त प्रतिबंध लागू कर दिया। फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, स्नैपचैट, टिकटॉक जैसे सभी प्लेटफॉर्म अब 16 वर्ष से कम आयु के बच्चों को अकाउंट बनाने की अनुमति नहीं देंगे। भारत में भी ऐसा ही होना चाहिए। *– मोहन जोशी, राजनांदगांव*

करंट अफेयर

भारतवंशी कुलकर्णी आरएएस के स्वर्ण पदक से सम्मानित

भारतवंशी खगोलशास्त्री प्रोफेसर श्रीनिवास कुलकर्णी को खगोलशास्त्र में उनकी महत्वपूर्ण खोजों के लिए लंदन स्थित 'रॉयल एस्ट्रोनॉमिकल सोसाइटी' (आरएएस) द्वारा प्रतिष्ठित स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। महाराष्ट्र में जन्मे कुलकर्णी कैलिफ़ोर्निया इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी (कैलटेक) में खगोलशास्त्र और ग्रह विज्ञान के प्रोफेसर हैं, जहां उन्होंने 'ब्राउन ड्वार्फ़' और दूरस्थ गामा किरणों के विस्फोट सहित खगोलीय पिंडों की एक विस्तृत श्रृंखला की खोज की है। पिछले सप्ताह उन्हें मिले आरएएस स्वर्ण पदक प्रशस्ति पत्र में 'खगोल भौतिकी में उनके निरंतर, नवोन्मेषी और अभूतपूर्व योगदान' को मान्यता दी गई है। वर्ष 1824 से हर साल दिया जाने वाला यह सर्वोच्च सम्मान प्राप्त करके वह स्टीफन हॉकिंग, जोसेलिन बेल बर्नेल, अल्बर्ट आइंस्टीन और एडविन हबल जैसी महान वैज्ञानिक प्रतिभाओं की श्रेणी में शामिल हो गए हैं। कुलकर्णी ने कहा, यह जानकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ, खासकर पिछले विजेताओं की शानदार सूची को देखते हुए। उन्होंने कहा, मैं अपने दीर्घकालिक सहयोगियों और पालोमर ट्रांजिएंट फैक्टरी और ज़्विकी ट्रांजिएंट प्रतिष्ठान की इंजीनियरिंग टीम और सदस्यों को परियोजनाओं में उनके अमूल्य योगदान के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं।

ऑफ बीट

बच्चों में पढ़ने की रुचि बढ़ाने साझा पठन-पाठन जरूरी

ब्रिटेन में बच्चों और युवाओं के बीच किताबें पढ़ने की रुचि लगातार घट रही है। एक सर्वेक्षण में यह सामने आया है कि आनंद के लिए किताबें पढ़ने वाले बच्चों का अनुपात पिछले दो दशकों में सबसे निचले स्तर पर पहुंच गया है। इस स्थिति को देखते हुए ब्रिटेन सरकार, नेशनल लिटरेसी ट्रस्ट और अन्य संगठनों ने वर्ष 2026 को 'राष्ट्रीय पठन वर्ष' घोषित किया है, ताकि लोगों को पढ़ने के लिए फिर से प्रेरित किया जा सके। अभियान का उद्देश्य बच्चों और परिवारों को उनकी मौजूदा रुचियों के अनुरूप पढ़ने से जोड़ना है। विशेषज्ञों के अनुसार, माता-पिता और अभिभावकों के लिए बच्चों में पढ़ने का शौक विकसित करने का सबसे प्रभावी तरीका उनके साथ मिलकर पढ़ना है, चाहे बच्चा पढ़ने में रुचि रखता हो या नहीं। अध्ययनों से पता चलता है कि बचपन से बच्चों के साथ पढ़ने से सामाजिक और आर्थिक असमानताओं के प्रभाव को कम किया जा सकता है। छोटे बच्चों को पढ़कर सुनाने से उनके शुरुआती विकासात्मक लक्ष्यों को हासिल करने में मदद मिलती है और वे आगे चलकर स्कूल में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। कम उम्र से पढ़ने वाले बच्चों में भाषा सीखने की क्षमता तेज होती है और उनकी शब्दावली भी अधिक समृद्ध होती है, जिससे वे अच्छे पाठक बनते हैं।

ट्रेंड

समाज के प्रति जिम्मेदारी

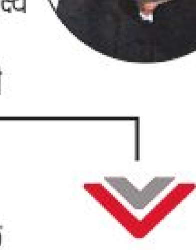

जेएनयू की डिग्री केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि समाज के प्रति जिम्मेदारी है। मेरा विश्वास है कि यहां की समावेशिता, सामाजिक न्याय और जिम्मेदारी की परंपरा आगे बढ़ाते हुए छात्र विकसित भारत के लक्ष्य की सिद्धि मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे।
- धर्मेंद्र प्रधान, केंद्रीय शिक्षा मंत्री

सड़क सुरक्षा माह

31 जनवरी तक हम प्रदेश भर में 'सड़क सुरक्षा माह' आयोजित कर रहे हैं। यह हमारे परिवारों और भविष्य की रक्षा का संकल्प है। प्रदेश की सड़कें सभी के लिए सुगम-सुरक्षित हों, इसके लिए पुलिस तो नियमों को कड़ाई से लागू करेगी ही, परंतु सभी का सहयोग भी अपेक्षित है।
- योगी आदित्यनाथ, सीएम, उप्र

सबसे सुव्यवस्थित राज्य

अगर किसी को ऋणों पर आत्मनिरीक्षण करना चाहिए तो वह कांग्रेस पार्टी है, जिसकी कर्नाटक सरकार ने ऋण लेने में नया रिकॉर्ड बनाया है। असम भारत का सबसे सुव्यवस्थित और सबसे तेजी से विकासशील राज्य है और इस तथ्य की पुष्टि आरबीआई ने भी की है।
- हिमंता बिस्वा सरमा, सीएम, असम

क़ानून का डर ज़रूरी

मेरठ के सरधना क्षेत्र में ही कश्यप समाज के युवक को जलाकर मार देने की अति क्रूर व शर्मनाक घटना की जितनी भर्त्सना की जाए, वह कम है। ऐसे आपराधिक तत्वों को क़ानून का डर होना ज़रूरी।
- मायावती, पूर्व सीएम, उप्र

अपने विचार
हरिभूमि कार्यालय
टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से **hbcgpati@gmail.com** पर भेज सकते हैं।

राज ठाकरे की चुनौती पर भाजपा नेता अन्नामलाई बोले

मुंबई आऊंगा, मेरे पैर काटकर दिखाओ, मैं ऐसी धमकियों से नहीं डरता

अन्नमलाई ने कहा कि आदित्य ठाकरे और राज ठाकरे मुझे धमकी देने वाले कौन होते हैं? मुझे किसान का बेटा होने पर गर्व है। उन्होंने सिर्फ मुझे गाली देने के लिए मीटिंग रखी हैं। मुझे नहीं पता कि मैं इतना महत्वपूर्ण हो गया हूं

एजेंसी ▶▶ चेन्नई/ मुंबई

भाजपा नेता के. अन्नामलाई ने राज ठाकरे के रसमलाई वाले बयान पर पलटवार करते हुए मुंबई आने की चुनौती कबूल कर ली है। राज ठाकरे ने रविवार को एक जनसभा में उन्हें मुंबई में घुसने की चुनौती दी थी। राज ठाकरे ने अन्नामलाई को लुंगी पुंगी, रसमलाई बोलकर मजाक उड़ाते हुए मुंबई आने पर पैर काटने की धमकी दी थी। सोमवार को चेन्नई में प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हुए अन्नामलाई ने कहा कि मुंबई आऊंगा, मेरे पैर काटकर दिखाओ। मैं ऐसे धमकियों से नहीं डरता।

मुंबई एक विश्वस्तरीय शहर का मतलब महाराष्ट्र के लोगों ने इसे बनाया

राज ठाकरे और भाजपा नेता के. अन्नामलाई

किसान का बेटा होने पर गर्व

अन्नामलाई ने कहा कि कुछ लोगों ने कहा है कि अगर मैं मुंबई आया तो वे मेरे पैर काट देंगे। मैं मुंबई आऊंगा। मेरे पैर काटकर दिखाओ। अगर मैं ऐसी धमकियों से डरता, तो अपने गांव में ही रहता। उन्होंने कहा कि आदित्य ठाकरे और राज ठाकरे मुझे धमकी देने वाले कौन होते हैं? मुझे किसान का बेटा होने पर गर्व है। उन्होंने सिर्फ़ मुझे गाली देने के लिए मीटिंग रखी हैं। मुझे नहीं पता कि मैं इतना महत्वपूर्ण हो गया हूं।

ये लोग नासमझ

तमिलनाडु भाजपा के पूर्व अध्यक्ष ने कहा कि अगर मैं कहता हूं कि कामराज भारत के सबसे महान नेताओं में से एक हैं, तो क्या इसका मतलब है कि वह अब तमिल नहीं रहे? अगर मैं कहता हूं कि मुंबई एक विश्वस्तरीय शहर है, तो क्या इसका मतलब है कि इसे महाराष्ट्र के लोगों ने नहीं बनाया? ये लोग बस नासमझ हैं।

हटाओ लुंगी, बजाओ पुंगीः राज ठाकरे

रविवार को ठाकरे ने अन्नामलाई पर मुंबई को अंतरराष्ट्रीय शहर बताने पर निशाना साधा था। इस दौरान राज ठाकरे ने 1960 और 1970 के दशक के अपने चाचा बालसाहेब ठाकरे के नारे 'हटाओ लुंगी, बजाओ पुंगी' का भी जिक्र किया। राज ठाकरे ने कहा था कि एक रसमलाई तमिलनाडु से आई, तुम्हारा यहां से क्या लेना-देना है?

लात मारकर बाहर निकाल देंगे

रैली के दौरान, राज ठाकरे ने कहा कि अगर बिहार और यूपी के लोग हिंदी थोपने की कोशिश करेंगे तो वह उन्हें महाराष्ट्र से 'लात मारकर' बाहर निकाल देंगे। यूपी और बिहार के लोगों को समझना चाहिए कि हिंदी आपकी भाषा नहीं है।

सीएम फडणवीस ने अजित पवार पर साधा निशाना

कहा- जीत मिले या हार, अपराधी जाएंगे जेल

अजित पवार द्वारा भाजपा पर की गई टिप्पणी के बाद अब सीएम देवेंद्र फडणवीस ने कड़ा जवाब दिया है। पुणे में फडणवीस ने राष्ट्रवादी कांग्रेस (अजित पवार गुट) पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि अपराध के खिलाफ बोलने वाले ही अगर अपराधियों को टिकट देंगे, तो इसका कोई औचित्य नहीं रह जाता।

आपराधिक पृष्ठभूमि वालों को टिकट क्यों?

सीएम ने कहा कि पुणे में आपराधिक पृष्ठभूमि वाले लोगों को उम्मीदवार के तौर पर टिकट देना क्यों जरूरी था? जिन लोगों ने अपराधों को समाप्त करने की बात कही थी वही लोग अब अपराधियों को टिकट दे रहे हैं और उनके सपोर्ट में बोल भी रहे हैं। मैं साफ कर देना चाहता हूं कि अगर कोई अपराधी चुनाव जीत भी जाता है, तो उसकी जगह नगर निगम में नहीं होगी, जेल में होगी।

खबर संक्षेप

सम्मान के साथ तमांग का होगा अंतिम संस्कार

दार्जिलिंग। रियलिटी शो में जीत के बाद कोलकाता पुलिस के सिपाही से राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने वाले गायक-अभिनेता प्रशांत तमांग का पार्थिव शरीर सोमवार को दार्जिलिंग स्थित उनके आवास लाया गया और इस दौरान पूरे क्षेत्र में शोक का माहौल रहा। तमांग का रविवार को दिल्ली में दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया था।

जस्टिस पॉल होंगे हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश

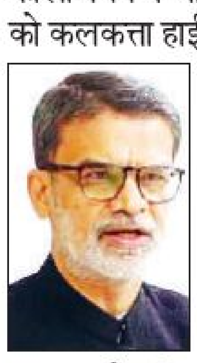

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने जस्टिस सुजॉय पॉल को कलकत्ता हाईकोर्ट का मुख्य न्यायाधीश नियुक्त करने की सिफारिश की है। 9 जनवरी, आयोजित कॉलेजियम की बैठक में इस प्रस्ताव को अंतिम रूप दिया गया। वर्तमान में वे कलकत्ता हाईकोर्ट में ही कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीशके रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

लुधियाना में ड्रम में कटा सिर मिला, दो गिरफ्तार

लुधियाना। जालंधर बाइपास के पास एक खाली प्लॉट में सफेद प्लास्टिक के ड्रम और बोरे में युवक की कटी हुई लाश मिली। मृतक 35 वर्षीय दविंदर कुमार लुधियाना की भारती कॉलोनी का रहने वाला था। पुलिस ने मृतक के दोस्त शमशेर सिंह और उसकी पत्नी कुलदीप कौर को गिरफ्तार कर पूछताछ कर रही है।

कथावाचक श्रीकृष्ण शुभम की ट्रेन में मौत

चक्रधरपुर। कुर्ला एक्सप्रेस में यात्रा के दौरान छत्तीसगढ़ के कथावाचक भागवताचार्य श्री कृष्ण शुभम महाराज की मौत चलती ट्रेन में शौचालय के दरवाजे के सामने गिरने से हो गई। वे 31 साल के एक युवा कथावाचक के रूप में प्रसिद्ध थे और वह छत्तीसगढ़ के राजानंदगांव के निवासी थे।

चुनाव आयुक्तों को कानूनी कार्रवाई से आजीवन छूट को कांग्रेस की चुनौती

विपक्ष का आरोप संविधान पीठ के आदेश के विरुद्ध नया बिल लाए

सीजेआई बोले- जांच करेंगे, केंद्र व ईसी को सुप्रीम कोर्ट ने भेजा नोटिस

चुनाव आयुक्त की नियुक्ति से जुड़े कानून में एक प्रावधान जोड़ा गया था, जिसके तहत अगर चुनाव कराते समय या उससे जुड़े किसी फैसले में कोई गलती या विवाद होता है, तो मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य चुनाव आयुक्तों पर निजी तौर पर केस नहीं किया जा सकेगा। यह सुरक्षा उनके पूरे जीवन तक लागू रहेगी

चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति से जुड़े 2023 के कानून से जुड़ा है मामला

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

कांग्रेस नेता जया ठाकुर की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को केंद्र सरकार और चुनाव आयोग को नोटिस जारी किया है। यह नोटिस उस याचिका पर दिया गया है, जिसमें मुख्य चुनाव आयुक्त और चुनाव आयुक्तों को कानूनी कार्रवाई से आजीवन छूट देने वाले कानून को चुनौती दी गई है।

याचिका पर सीजेआई सूर्यकांत की बेंच ने कहा कि वह इस कानून की जांच करना चाहती है। कांग्रेस नेता जया ठाकुर की याचिका में कहा गया कि यह प्रावधान मुख्य चुनाव आयुक्त और चुनाव आयुक्तों को उनके कामकाज से जुड़े मामलों में पूरी जिंदगी के लिए नागरिक और आपराधिक कार्रवाई से बचाव देता है।

ऐसी सुरक्षा संविधान बनाने वालों ने न्यायाधीशों को भी नहीं दी थी। इसलिए संसद ऐसा संरक्षण नहीं दे सकती, जो संविधान में दूसरे बड़े पदों पर बैठे लोगों को नहीं मिला।

याचिकाकर्ता कांग्रेस की जया ठाकुर व सुप्रीम कोर्ट

नियुक्ति में सीजेआई को शामिल करना

2 मार्च 2023 को सीईसी और ईसी की नियुक्ति पर सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति एक पैनल करेगा। इसमें पीएम, लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और सीजेआई भी शामिल होंगे। इससे पहले सिर्फ केंद्र सरकार इनका चयन करती थी। यह पैनल सीईसी और ईसी के नामों की सिफारिश राष्ट्रपति से करेगा। इसके बाद राष्ट्रपति मुहर लगाएंगे। तब जाकर उनकी नियुक्ति हो पाएगी। कोर्ट ने यह भी कहा कि यह प्रक्रिया तब तक लागू रहेगी, जब तक संसद चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति को लेकर कोई कानून नहीं बना लेती।

नए बिल में सीजेआई बाहर

केंद्र सरकार सीईसी और ईसी की नियुक्ति, सेवा, शर्तें और अवधि से जुड़ा नया बिल लेकर आई। इसके तहत चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति तीन सदस्यों का पैनल करेगा। इसमें पीएम, लोकसभा में विपक्ष का नेता और एक कैबिनेट मंत्री शामिल होंगे। पैनल से सीजेआई को बाहर रखा गया। 21 दिसंबर 2023 को शीतकालीन सत्र के दौरान यह बिल संसद के दोनों सदनों में पास हो गया। विपक्षी दलों का कहना था कि सरकार सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ के आदेश के खिलाफ बिल लाकर उसे कमजोर कर रही है। मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा। तत्कालीन चीफ जस्टिस संजीव खन्ना ने इस मामले की सुनवाई से खुद को अलग किया।

नए कानून का विपक्ष जता चुका विरोध

दरअसल, मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति से जुड़े 2023 के कानून को लेकर विपक्ष का विरोध है। इनमें एक प्रावधान जोड़ा गया था, जिसके तहत अगर चुनाव कराते समय या उससे जुड़े किसी फैसले में कोई गलती या विवाद होता है, तो मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य चुनाव आयुक्तों पर निजी तौर पर केस नहीं किया जा सकेगा। यह सुरक्षा उनके पूरे जीवन तक लागू रहेगी, भले ही वे पद पर न हों।

सुप्रीम कोर्ट के फैसले का उल्लंघन

कांग्रेस कार्यकर्ता जया ठाकुर ने अपनी याचिका में आरोप लगाया है कि धारा 7 और 8 स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव के सिद्धांत का उल्लंघन है क्योंकि यह चुनाव आयोग के सदस्यों की नियुक्ति के लिए स्वतंत्र तंत्र प्रदान नहीं करता है। याचिका में कहा गया है कि यह कानून सुप्रीम कोर्ट के मार्च 2023 के फैसले को पलटने के लिए बनाया गया, जिसने सीईसी और ईसी को एकतरफा नियुक्त करने की केंद्र सरकार की शक्तियां छीन ली थीं। यह वो प्रथा है जो देश की आजादी के बाद से चली आ रही है।

आयुक्तों की संख्या तय नहीं

चुनाव आयुक्त कितने हो सकते हैं, इसे लेकर संविधान में कोई संख्या तय नहीं की गई है। संविधान का अनुच्छेद 324 (2) कहता है कि चुनाव आयोग में मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य चुनाव आयुक्त हो सकते हैं। यह राष्ट्रपति पर निर्भर करता है कि इनकी संख्या कितनी होगी। आजादी के बाद देश में चुनाव आयोग में सिर्फ एक चुनाव आयुक्त होता था।

दो दिन तक राष्ट्रमंडल देशों के स्पीकर और पीठासीन अधिकारी करेंगे विभिन्न विषय पर चर्चा

पीएम मोदी 15 को करेंगे राष्ट्रमंडल स्पीकरों के सम्मेलन का उद्घाटन

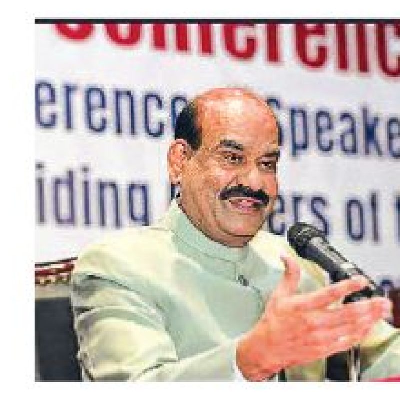

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला करेंगे दो दिवसीय सम्मेलन की अध्यक्षता

हरिभूमि ब्यूरो ▶▶ नई दिल्ली

राष्ट्रमंडल स्पीकरों और पीठासीन अधिकारियों का 28वां सम्मेलन (सीएसपीओसी) 15 से 16 जनवरी तक नई दिल्ली में होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 15 जनवरी को प्रातः 10:30 बजे संसद भवन परिसर स्थित संविधान सदन के ऐतिहासिक केंद्रीय कक्ष में इस सम्मेलन का उद्घाटन करेंगे। 28वें सीएसपीओसी का अध्यक्ष होने के नाते लोक सभा अध्यक्ष 14 जनवरी को दिल्ली स्थित लाल किले के संगीति सम्मेलन कक्ष में सायं 7:30 बजे स्थायी समिति की बैठक की अध्यक्षता करेंगे।

सीएसपीओसी में राष्ट्रमंडल के 53 संप्रभु देशों की राष्ट्रीय संसदों के अध्यक्ष और पीठासीन अधिकारी शामिल हैं। इस सम्मेलन में ज्यादातर देशों ने हिस्सा लेने पर सहमति जताई है। हालांकि बंग्लादेश और पाकिस्तान सम्मेलन में नहीं आ रहे हैं। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सोमवार को बताया कि सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य पीठासीन अधिकारियों की निष्पक्षता और उनकी भूमिका पर चर्चा करना है। यह सम्मेलन राष्ट्रमंडल देशों के बीच संसदीय सहयोग को मजबूत करने का एक महत्वपूर्ण प्लेटफॉर्म होगा जहां विभिन्न विषयों पर चर्चा के माध्यम से आगे की दशा दिशा तय की जाएगी।

उन्होंने बताया कि भारत को यह मेजबानी का अवसर 1971, 1986 और 2010 के बाद अब 16 साल बाद प्राप्त हुआ है। सम्मेलन में स्पीकरों के बीच नवाचार, नई तकनीकों का उपयोग, और केवल मतदान तक सीमित न रहकर जनता को संसद से जोड़े रखना आदि विभिन्न विषयों पर चर्चा होगी। लोकसभा अध्यक्ष ने बताया कि इस बार सम्मेलन पूरी तरह से पर्यावरण अनुकूल होगा, यानि इसमें किसी भी कागज का इस्तेमाल नहीं किया जाएगा। पूरी व्यवस्था वेब-बेस्ड मैनेजमेंट तकनीक पर आधारित है, और सारा आयोजन एक ऐप के जरिए किया जा रहा है। इसके अलावा, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से सभी परिपत्र उपलब्ध कराए जाएंगे। बिरला ने कहा कि अब तक हुए सम्मेलनों में इस बार सबसे ज्यादा स्पीकर हिस्सा लेंगे।

सीएसपीओसी की परंपरा के अनुरूप, 17–18 जनवरी को आगंतुक प्रतिनिधियों के लिए जयपुर का सम्मेलन के बाद भ्रमण आयोजित किया जाएगा। लोक सभा अध्यक्ष ने राजस्थान सरकार के सहयोग से प्रतिनिधियों के लिए व्यापक व्यवस्थाएं की हैं। प्रतिनिधि 17 जनवरी को जयपुर जाएंगे तथा 18 जनवरी को दिल्ली वापस लौटेंगे।

बजट पूर्व कृषि एवं ग्रामीण विकास से जुड़े विभिन्न पक्षों पर प्राप्त सुझावों की रिपोर्ट वित्त मंत्री को सौंपी

केंद्रीय मंत्री चौहान ने दिल्ली में वित्त मंत्री सीतारमण से की मुलाकात

हरिभूमि ब्यूरो ▶▶ नई दिल्ली

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह ने सोमवार को दिल्ली में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से मुलाकात की। चौहान ने हाल के सप्ताहों में देश के विभिन्न राज्यों का दौरा किया और राज्यों के अलावा दिल्ली में भी प्रगतिशील किसानों, कृषि विशेषज्ञों, स्वयं सहायता समूहों, सहकारी संस्थाओं तथा ग्रामीण उद्योगों एवं दोनों मंत्रालयों से संबंधित राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं के वरिष्ठ प्रतिनिधियों से व्यापक संवाद स्थापित किया। इन चर्चाओं से प्राप्त विचारों और सुझावों को एक समग्र कृषि एवं ग्रामीण विकास के सुझाव के रूप में तैयार कर उन्होंने वित्त मंत्री को सौंपा।

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ग्रामीण भारत को आत्मनिर्भर और समृद्ध बनाने के लिए निरंतर कार्यरत है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के कुशल और दूरदर्शी नेतृत्व में आगामी आम बजट किसानों और ग्रामीण समाज के लिए प्रेरक होगा। चौहान भरोसा व्यक्त किया कि वित्त वर्ष 2026-27 का बजट प्रधानमंत्री के "समृद्ध किसान, सशक्त गांव" के संकल्प को साकार करने में मील का पत्थर सिद्ध होगा।

भाजपा शासित राज्यों में दलितों पर अत्याचार बढ़ेः कांग्रेस दलितों के खिलाफ अपराधों पर योगी सरकार की उदासीनता पर सवाल

हरिभूमि ब्यूरो ▶▶ नई दिल्ली

कांग्रेस ने आरोप लगाया कि भाजपा शासित राज्यों में दलितों के खिलाफ अपराध और अत्याचार लगातार बढ़ रहे हैं, क्योंकि वहां अपराधियों को सरकारों का संरक्षण और संरक्षण मिल रहा है। पार्टी ने कहा कि दलितों के मामलों में कानून का समान रूप से पालन नहीं किया जा रहा है।

पार्टी मुख्यालय में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अनुसूचित जाति विभाग के अध्यक्ष राजेंद्र पाल गौतम ने उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले की एक हालिया घटना का हवाला दिया। उन्होंने बताया कि एक दलित बच्ची का अपहरण कर लिया गया और उसे बचाने की कोशिश में उसकी मां की बेरहमी से हत्या कर दी गई। गौतम ने कहा कि जब वे अन्य नेताओं के साथ पीड़ित परिवार से मिलने गए, तो स्थानीय प्रशासन और पुलिस ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया और पूरे इलाके को पुलिस छावनी में तब्दील कर दिया गया। यदि उत्तर प्रदेश सरकार अपराधियों के खिलाफ इसी तरह की सख्ती दिखाती, तो राज्य में दलितों के खिलाफ इतने बड़े पैमाने पर अपराध और अत्याचार नहीं होते।

गौतम ने आरोप लगाया कि योगी सरकार दलितों, पिछड़ों और अल्पसंख्यकों के प्रति पूरी तरह उदासीन और भेदभावपूर्ण रवैया अपना रही है। जब आरोपी दलित या अल्पसंख्यक समुदाय से होता है, तो उसके घर पर तुरंत बुलडोजर चला दिया जाता है, लेकिन जब अपराधी ऊंची जाति से होता है और पीड़ित दलित या अल्पसंख्यक होते हैं, तो ऐसी कोई कार्रवाई नहीं की जाती। उन्होंने टिप्पणी की, "दलितों के खिलाफ अपराध के मामलों में योगी के बुलडोजर जंग खा जाते हैं।"

कांग्रेस नेता ने केंद्र सरकार पर भी दलितों के खिलाफ अपराधों को हल्के में लेने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि वर्ष 2022 के बाद से दलितों पर होने वाले अत्याचारों से संबंधित कोई आंकड़ा सार्वजनिक नहीं किया गया है। गौतम ने कहा कि दलितों के खिलाफ अपराध और अत्याचार तभी रोके जा सकते हैं, जब ऐसे मामलों की समयबद्ध जांच हो, मुकदमे चलें और दोषियों को सख्त सजा दी जाए।

उन्होंने दिल्ली पुलिस की भी आलोचना की, जिसने मेरठ की घटना के विरोध में जंतर-मंतर पर प्रदर्शन की अनुमति देने से इनकार कर दिया और कहा कि प्रदर्शन की अनुमति के लिए दस दिन पहले आवेदन करना होता है।

युवा नेतृत्व के लिए समर्पण, एकाग्रता और आत्मबल आवश्यक गुणः शिवराज

विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग में चौहान ने किया संवाद

हरिभूमि ब्यूरो ▶▶ नई दिल्ली

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने सोमवार को विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग 2026 के तहत भारत मंडपम में आयोजित केंद्रीय मंत्रियों के पैनल के समक्ष प्रस्तुतियों के दौरान देशभर से आए युवा नेताओं से संवाद किया। यह सत्र डायलॉग का एक महत्वपूर्ण पड़ाव रहा, जिसमें वरिष्ठ नीति-निर्माताओं और प्रतिभाशाली युवाओं के बीच सीधे संवाद का अवसर मिला।

इस दौरान युवा नेताओं ने विभिन्न विषयों पर अपने विचार, नीतिगत सुझाव और ज़मीनी स्तर पर किए गए नवाचार प्रस्तुत किए। इनमें हरित और सतत विकसित भारत का निर्माण, स्मार्ट और टिकाऊ कृषि के माध्यम से उत्पादकता बढ़ाना, तथा परंपरा के साथ नवाचारः आधुनिक भारत का निर्माण जैसे विषय शामिल थे। प्रस्तुतियों में युवाओं की विविध सोच, रचनात्मकता और समस्याओं के समाधान की क्षमता स्पष्ट रूप से दिखाई दी, जो समावेशी और टिकाऊ विकास की राष्ट्रीय सोच के अनुरूप है।

कांग्रेस नेता कन्नन गोपीनाथन ने कैग रिपोर्ट का दिया हवाला

कांग्रेस ने की प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना में दस हजार करोड़ के घोटाले की उच्चस्तरीय जांच की मांग

हरिभूमि ब्यूरो ▶▶ नई दिल्ली

कांग्रेस ने कैग की रिपोर्ट में प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) में सामने आए दस हजार करोड़ के घोटाले को लेकर मोदी सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए उच्चस्तरीय जांच की मांग की है।

कांग्रेस नेता कन्नन गोपीनाथन ने कैग (नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक) की रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि 2015 से 2022 तक की पीएमकेवीवाई की परफॉर्मेंस ऑडिट रिपोर्ट में योजना के हर स्तर पर भयंकर घोटाला सामने आया है। योजना में कुल 14 हजार करोड़ रुपए का प्रावधान था, जिसमें से लगभग 10 हजार करोड़ रुपए खर्च किए गए। 94.53 प्रतिशत लाभार्थियों के बैंक खाता के विवरण फर्जा पाए गए। 61 लाख प्रशिक्षकों का डेटा पूरी तरह खाली या गायब है; कहीं नाम दर्ज नहीं हैं, कहीं मोबाइल नंबर नहीं हैं और अन्य आवश्यक जानकारियां भी मौजूद नहीं हैं। प्रशिक्षण का मूल्यांकन करने वाले 97 प्रतिशत असेसर्स की जानकारी उपलब्ध नहीं हैं। लगभग एक करोड़ लोगों को ट्रेनिंग दिखाई गई है, जबकि प्रशिक्षुओं के ईमेल आईडी केवल एक-डेढ़ लाख ही दर्ज हैं।

गोपीनाथन ने बताया कि पांच-छह साल से बंद नीलिमा मूविंग पिक्चर्स नाम की कंपनी ने कथित तौर पर 33 हजार लोगों को ट्रेनिंग दी। एक ही फोटो को बिहार और उत्तर प्रदेश की अलग-अलग ट्रेनिंग बताकर इस्तेमाल किया गया। जयपुर कल्चरल सोसाइटी ने 31 फरवरी 2021 जैसी अस्तित्वहीन तारीख को ट्रेनिंग आयोजित करने का दावा किया और इसकी न्यूज क्लिपिंग भी सीएजी रिपोर्ट में शामिल की गई। उन्होंने कहा कि भाजपा राज में घोटालेबाज इतने कुशल हो गए हैं कि वे उस तारीख को भी काम कर रहे हैं जो कैलेंडर में होती ही नहीं। एक बंद दुकान वाली कंपनी रेडिए डिजाइन्स ने करीब 15 हजार लोगों को ट्रेनिंग देने का दावा किया। सीएजी रिपोर्ट में ऐसे कई उदाहरणों का उल्लेख है जहां बिना ईमेल आईडी, बिना फ़ोन नंबर और बिना बैंक खाते नंबर के प्रशिक्षकों और मूल्यांकनकर्ताओं को 7 साल में 10 हजार करोड़ बांटे गए। प्रशिक्षुओं के 41 प्रतिशत प्लेसमेंट के दावे भी फर्जी हैं।

गोपीनाथन ने जोर देते हुए कहा कि यह करदाताओं का पैसा है, जो भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ा है। उन्होंने कहा कि युवाओं के साथ यह धोखाधड़ी सिर्फ टैक्सपेयर्स को ही नहीं, बल्कि पूरे देश के भविष्य को नुकसान पहुंचा रही है।

खबर संक्षेप

रुपया डॉलर के मुकाबले बढ़कर 90.16 पर बंद

मुंबई। रुपया सोमवार को निचले स्तर से उबरते हुए अमेरिकी डॉलर के मुकाबले दो पैसे की बढ़त के साथ 90.16 (अनंतिम) पर बंद हुआ। अमेरिकी मुद्रा में गिरावट और कच्चे तेल की कीमतों में कमी से रुपया लाभ में रहा। विदेशी मुद्रा विश्लेषकों ने कहा कि भारत में अमेरिका के नए दूत सर्जियो गोर के उस बयान के बाद शेयर बाजार की धारणा में भी सुधार हुआ, जिसमें उन्होंने कहा था कि दोनों पक्ष व्यापार समझौते को अंतिम रूप देने में सक्रिय रूप से जुटे हुए हैं।

अदाणी समूह कच्छ में करेगा 1.5 लाख करोड़ रुपए निवेश

अहमदाबाद। अदाणी पोर्ट्स एंड एसईजेड लिमिटेड (एपीएसईजेड) के प्रबंध निदेशक करण अदाणी ने कहा कि अदाणी समूह अगले पांच वर्षों में गुजरात के कच्छ क्षेत्र में 1.5 लाख करोड़ रुपये का निवेश करेगा। करण अदाणी राजकोट में कच्छ और सौराष्ट्र क्षेत्रों के लिए आयोजित 'वाइब्रेंट गुजरात क्षेत्रीय सम्मेलन' (वीजीआरसी) को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल, उपमुख्यमंत्री हर्ष संघवी और कई प्रमुख उद्योगति मौजूद थे।

एचसीएल टेक के लाभ में 11 प्रतिशत की गिरावट

नई दिल्ली। सूचना प्रौद्योगिकी सेवा कंपनी एचसीएल टेक का चालू वित्त वर्ष की अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में एकीकृत शुद्ध लाभ 11.2 प्रतिशत गिरकर 4,076 करोड़ रुपये रहा। एचसीएल ने सोमवार को शेयर बाजार को अक्टूबर-दिसंबर, 2025 तिमाही के इस वित्तीय नतीजे की सूचना दी। एक साल पहले की समान तिमाही में उसने 4,591 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ (कंपनी के मालिकों के लिए देय) दर्ज किया था।

सूचना

सभी पाठकों से अनुरोध है कि हरिभूमि समाचार-पत्र में प्रकाशित विज्ञापनों (डिस्प्ले/क्लासीफाईड) में दिए गए तथ्यों/दावों के बारे में अपने विवेक से निर्णय लें और विज्ञापन के दावों की विश्वसनीयता को परखें। हरिभूमि समूह के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की विज्ञापनों के तथ्यों से सम्बन्धित कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

राशिफल

मेष — मन परेशान हो सकता है। माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। रहन-सहन कष्टमय हो सकता है। पिता का साथ मिलेगा। नौकरी में यात्रा पर जा सकते हैं।

वृष — नौकरी में तरक्की के अवसर मिल सकते हैं। शैक्षिक या बौद्धिक कार्यों में मान-सम्मान मिलेगा। घर-परिवार में धार्मिक कार्य होंगे। खर्च अधिक रहेंगे।

मिथुन — कार्यक्षेत्र में परिश्रम अधिक रहेगा। जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। खर्च बढ़ेंगे। मन प्रसन्न रहेगा। व्यर्थ के क्रोध से बचें।

कर्क — किसी मित्र के सहयोग से रोजगार के अवसर मिल सकते है। क्रोध एवं आवेश के अतिरेक से बचें। पारिवारिक समस्याएं परेशान कर सकती हैं।

सिंह — परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। सम्मान में वृद्धि होगी। मित्रों का सहयोग मिलेगा। पिता से धन की प्राप्ति हो सकती है। यात्रा पर जाना हो सकता है।

कन्या — संयत रहें। क्रोध के अतिरेक से बचें। नौकरी में तरक्की के मार्ग प्रशस्त हो सकते हैं। अफसरों से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

तुला — नौकरी में कार्यक्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है। वाणी में मधुरता रहेगी। अपनी भावनाओं को वश में रखें। कारोबार की स्थिति में सुधार होगा।

वृश्चिक — मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। सेहत का ध्यान रखें। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। नौकरी में कोई अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

धनु — सन्तान के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। खर्च बढ़ेंगे। पठन-पाठन में रुचि रहेगी। शैक्षिक कार्यों में सफल रहेंगे। परिवार में व्यर्थ के वाद-विवाद से बचें।

मकर — किसी भवन या सम्पत्ति से आय के साधन बन सकते हैं। कारोबार में परिवर्तन के योग बन रहे हैं। परिश्रम अधिक रहेगा। भाई-बहनों का साथ मिलेगा।

कुंभ — आय में वृद्धि तो होगी, परन्तु अनियोजित खर्चों में वृद्धि होगी। धैर्यशीलता बनाये रखने के प्रयास करें। शैक्षिक या बौद्धिक कार्यों के लिए यात्रा पर जा सकते

मीन — शासन-सत्ता का सहयोग मिलेगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। आय भी बढ़ेगी। क्रोध के अतिरेक से बचें। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा।

चांदी में 'सुनामी': एक दिन में 15,000 का उछाल, गोल्ड ने भी मचाया बवाल

नई दिल्ली। सिर्फ देश के वायदा बाजार में ही नहीं बल्कि चांदी की सुनामी दिल्ली के सराफा बाजार में भी देखने को मिल रही है। खास बात तो ये है कि चांदी की कीमतों में एमसीएक्स के मुकाबले में दिल्ली सराफा बाजार में ज्यादा तेजी देखने को मिली है। वहीं दूसरी ओर गोल्ड की कीमतों ने भी बवाल मचा हुआ है। जिसकी वजह से दोनों कीमती मेटल्स दिल्ली सराफा बाजार में रिकॉर्ड लेवल पर पहुंच गए हैं। सोमवार को देश की राजधानी दिल्ली में चांदी की कीमतों में 15,000 रुपए की तीव्र वृद्धि दर्ज की गई और यह 2,65,000 रुपए प्रति किलोग्राम के लाइफटाइम हाई पर पहुंच गई।

वैश्विक बाजार में भी सराफा तेज

इसके अलावा, 99.9 फीसदी प्योरिटी वाला गोल्ड 2,900 रुपए या 2.05 प्रतिशत की वृद्धि हुई और यह 1,44,600 रुपए प्रति 10 ग्राम (सभी करों सहित) के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया। शुक्रवार को यह 1,41,700 रुपए प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में, हाजिर सोने की कीमत पहली बार 4,600 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस के स्तर को पार कर गई।

चांदी 2,65,000 रुपए प्रति किलोग्राम के लाइफटाइम हाई पर पहुंच गई

सोने ने 4,600 डॉलर प्रति औंस का स्तर छुआ

लेमन मार्केट्स डेस्क के रिसर्च एनालिस्ट गौरव गर्ग ने कहा, "सोने ने सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हुए 4,600 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस का स्तर छू लिया है, जबकि चांदी में और भी तेज उछाल आया है और यह 84 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस तक पहुंच गई है, जो जोखिम-संवेदनशील वातावरण में इसकी उच्च बीटा को दर्शाता है।" अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में स्पॉट चांदी 4.3 अमेरिकी डॉलर या लगभग 6 प्रतिशत बढ़कर 84.61 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई।

क्यों आई सोने और चांदी में तेजी?

ऑगमोंट की रिसर्च हेड रेनिशा चैनानी ने कहा कि बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव और इस बढ़ती उम्मीद के चलते कि अमेरिकी फेडरल रिजर्व को ब्याज दरों में और कटौती करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा, चांदी ने 84 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस को पार करते हुए नए रिकॉर्ड उच्च स्तर को छू लिया है।

एमसीएक्स पर भी सोना-चांदी ने बनाया रिकॉर्ड?

देश के वायदा बाजार मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज पर सोने और चांदी दोनों की कीमतों में तेजी देखने को मिली है। खास बात तो ये है कि दोनों के दाम नए लेवल पर पहुंच गए हैं। आंकड़ों को देखें तो चांदी के दाम कारोबारी सत्र के दौरान 12,756 रुपए की तेजी के साथ 2,65,481 रुपए के रिकॉर्ड लेवल पर पहुंच गई है। वैसे शाम 6 बजकर 30 मिनट पर चांदी की कीमत करीब 12 हजार रुपए की तेजी के साथ 2,64,700 रुपए पर कारोबार कर रही है।

खुदरा महंगाई बढ़कर तीन महीने के हाई 1.33 फीसदी पर पहुंची

आम आदमी पर पड़ी क्रीम, शैंपू, सब्जी और दाल की मार, 3 महीने की ऊंचाई पर पहुंची महंगाई

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

भले ही जीएसटी रिफॉर्म के बाद काफी प्रोडक्ट्स की कीमतों में गिरावट देखने को मिली हो और महंगाई के आंकड़ों में कमी आई हो, लेकिन दिसंबर के महीने में रिटेल महंगाई 3 महीने के हाई पर पहुंच गई है। सरकारी रिपोर्ट के अनुसार पर्सनल केयर प्रोडक्ट्स यानी शैंपू, क्रीम, नहाने का साबुन और बाकी प्रोडक्ट्स की कीमतों में इजाफा होने से रिटेल महंगाई में इजाफा देखने को मिला है।

दूसरी और सब्जियों, मीट व फिश की डिमांड ने महंगाई बढ़ाई

वहीं दूसरी ओर सब्जियों की कीमतों में तेजी और सर्दियों में मीट और फिश की बढ़ती डिमांड की वजह से कीमतों में आई तेजी ने भी रिटेल महंगाई को बढ़ाने में अहम योगदान दिया है।

नवंबर में खुदरा महंगाई 0.71 प्रतिशत पर थी

महंगाई चार फीसदी पर बनी रही

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) ने उपभोक्ता मूल्य सूचकांक के आंकड़े जारी करते हुए कहा कि दिसंबर 2025 के दौरान प्रमुख महंगाई और फूड इंफ्लेशन में वृद्धि मुख्य रूप से पर्सनल केयर प्रोडक्ट्स और प्रभाव, सब्जियों, मांस और मछली, अंडे, मसालों तथा दालों एवं उनके उत्पादों की मुद्रास्फीति में वृद्धि के कारण हुई है। दिसंबर में खुदरा मुद्रास्फीति लगातार चौथे महीने भारतीय रिजर्व बैंक की निचली संतोषजनक सीमा से नीचे रही।

शहरी महंगाई

शहरी क्षेत्र की खाद्य महंगाई नवंबर 2025 के 1.40 फीसदी से बढ़कर दिसंबर 2025 में 2.03 फीसदी (अस्थायी) हो गई। खाद्य महंगाई में भी वृद्धि देखी गई है, जो नवंबर 2025 में -3.60 फीसदी से बढ़कर दिसंबर 2025 में -2.09% (अस्थायी) हो गई है।

इन पांच राज्यों में बढ़ी सबसे ज्यादा महंगाई

अगर बात राज्यों की करें तो सबसे ज्यादा महंगाई केरल में बढ़ती हुई दिखाई दी है। आंकड़ों को देखें तो केरल में रिटेल महंगाई 9.49 फीसदी देखने को मिली है। उसके बाद कर्नाटक में महंगाई 2.99 फीसदी रही, जो अभी भी आरबीआई के 4 फीसदी के लोअर बैंड से नीचे है। आंध्र प्रदेश में महंगाई का आंकड़ा 2.71 फीसदी देखने को मिला। जबकि तमिलनाडु में 2.67 फीसदी और जम्मू-कश्मीर में महंगाई का आंकड़ा 2.26 फीसदी देखने को मिला है।

महंगाई को लेकर प्रमुख आंकड़े

रिटेल महंगाई: सीपीआई पर आधारित दिसंबर 2025 के लिए दिसंबर 2024 की तुलना में सालाना महंगाई दर 1.33 फीसदी देखने को मिली। नवंबर 2025 की तुलना में दिसंबर 2025 की रिटेल महंगाई में 62 बेसिस प्वाइंट्स की वृद्धि हुई है।

खाद्य महंगाई: सीएफपीआई पर आधारित दिसंबर 2025 के लिए दिसंबर 2024 की तुलना में सालाना फूड इंफ्लेशन -2.71 फीसदी (अस्थायी) है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों से संबंधित महंगाई दर क्रमशः -3.08 फीसदी और -2.09 फीसदी हैं। नवंबर 2025 की तुलना में दिसंबर 2025 में फूड इंफ्लेशन में 120 आधार अंकों की वृद्धि देखी गई है। दिसंबर 2025 के महीने के दौरान रिटेल महंगाई और फूड महंगाई में वृद्धि मुख्य रूप से पर्सनल केयर और सामान, सब्जियों, मांस और मछली, अंडे, मसालों और दालों और प्रोडक्ट्स की महंगााई में वृद्धि के कारण हुई है।

ग्रामीण महंगाई: दिसंबर 2025 में ग्रामीण क्षेत्र में रिटेल महंगाई और खाद्य महंगाई में वृद्धि देखी गई। दिसंबर 2025 में खाद्य महंगाई 0.76% (अस्थायी) रही, जबकि नवंबर 2025 में यह 0.10 फीसदी थी। सीएफपीआई आधारित खाद्य महंगाई दिसंबर 2025 में -3.08% (अस्थायी) रही, जबकि नवंबर 2025 में यह -4.05 फीसदी थी।

आवास महंगाई: दिसंबर 2025 के लिए वार्षिक आधार पर आवास महंगाई दर 2.86% (अस्थायी) है। नवंबर 2025 के लिए यह दर 2.95% थी। हाउसिंग इंडेक्स केवल शहरी क्षेत्र का संकलित किया गया है।

एजुकेशन महंगाई: दिसंबर 2025 के लिए वार्षिक आधार पर एजुकेशन महंगाई दर 3.32% (अस्थायी) है। नवंबर 2025 के लिए यह दर 3.38 फीसदी थी।

इंडियनऑयल-मारुति सुजुकी का पेट्रोल पंपों पर वाहन सर्विस नेटवर्क विस्तार के लिए समझौता

नई दिल्ली। भारत की प्रमुख ऊर्जा कंपनी इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड और देश की अग्रणी यात्री वाहन निर्माता कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड (एमएसआईएल) ने ग्राहकों की सुविधा बढ़ाने के लिए समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। इस समझौते के तहत, देश भर में चुनिंदा इंडियनऑयल पेट्रोल पंपों पर मारुति सुजुकी सर्विस सेंटर स्थापित किए जाएंगे। यह सहयोग इंडियनऑयल के राष्ट्रव्यापी नेटवर्क का लाभ उठाकर विभिन्न मारुति सुजुकी सर्विस सेंटर स्थापित करने में सहायक होगा। इससे ग्राहकों को अपनी मारुति सुजुकी कारों के लिए नियमित आवधिक रखरखाव और छोटी-मोटी मरम्मत की सुविधा उन्हीं स्थानों पर मिलेगी जहां वे ईंधन भरवाते हैं, जिससे उन्हें अधिक कुशल और सुगम अनुभव प्राप्त होगा। इंडियनऑयल अपनी व्यापक खुदरा उपस्थिति के साथ मारुति सुजुकी के 5,780 से अधिक सर्विस केंद्रों को और मजबूत करेगा।

मालीगांव में 70वां जोनल रेल सप्ताह पुरस्कार समारोह आयोजित

मालीगांव। मालीगांव स्थित रंग भवन में 70वां जोनल रेल सप्ताह पुरस्कार समारोह 10 जनवरी, 2026 को पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे के महाप्रबंधक श्री चेतन कुमार श्रीवास्तव की मौजूदगी में आयोजित हुआ। इस समारोह में पू. सी. रेलवे मुख्यालय के प्रधान विभागाध्यक्ष और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे, जिन्होंने इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई और अपने-अपने क्षेत्र में लगन और बेहतरीन परफॉर्मेंस के लिए पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को बधाई दी। पू. सी. रेलवे के पांच मंडलों और मुख्यालय के विभिन्न विभागों के अधिकारियों और कर्मचारियों को उनकी बेहतरीन सेवा, प्रोफेशनल उत्कृष्टता और दक्षता, संरक्षा और यात्री सेवाओं को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान के लिए प्रतिष्ठित विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार (वीआरएसपी), 2025 से सम्मानित किया गया। कुल 49 पुरस्कार विजेताओं को उनके समर्पण और विभिन्न कार्य क्षेत्रों में शानदार परफॉर्मेंस के लिए सम्मानित किया गया।

सिग्नेचर ग्लोबल की बिक्री बुकिंग 27 प्रतिशत घटी

नई दिल्ली। रियल एस्टेट कंपनी सिग्नेचर ग्लोबल ने बताया कि घरों की मांग के लिए प्रमुख त्योहारी सत्र होने के बावजूद दिसंबर तिमाही में उसकी बिक्री बुकिंग 27 प्रतिशत घटकर 2,020 करोड़ रुपये रह गई।

भारत-अमेरिका व्यापार समझौते को लेकर नई उम्मीद

शेयर बाजार ने पांच दिनों की गिरावट का सिलसिला तोड़ा, सेंसेक्स 302 अंक मजबूत

एजेंसी ▶▶| मुंबई

पिछले पांच कारोबारी सत्रों में भारी गिरावट के बाद सोमवार को स्थानीय शेयर बाजार उतार-चढ़ाव भरे कारोबार में बढ़त के साथ बंद हुए। बीएसई सेंसेक्स में 302 अंक की तेजी रही जबकि एनएसई निफ्टी 107 अंक चढ़ गया। कारोबारियों ने कहा कि भारत-अमेरिका व्यापार समझौते को लेकर नई उम्मीद जगने और ऊर्जा, बैंकिंग एवं धातु शेयरों में निचले स्तरों पर खरीदारी आने से बाजार को सहारा मिला। हालांकि भू-राजनीतिक तनाव और विदेशी निवेशकों की लगातार बिकवाली ने तेजी को सीमित रखा। बीएसई का 30 शेयरों पर आधारित मानक सूचकांक सेंसेक्स भारी उतार-चढ़ाव के बाद 301.93 अंक चढ़कर 83,878.17 अंक पर बंद हुआ। सुबह के कारोबार में एक समय यह 715.17 अंक गिरकर 82,861.07 अंक तक फिसल गया था लेकिन बाद में यह संभला और बढ़त लेने में सफल रहा। वहीं, निफ्टी 106.95 अंक की बढ़त के साथ 25,790.25 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स के समूह में शामिल कंपनियों में से टाटा स्टील, एशियन पेंट्स, ट्रेंट, भारतीय स्टेट बैंक, हिंदुस्तान यूनिलीवर, अल्ट्राटेक सीमेंट, आईसीआईसीआई बैंक और भारती एयरटेल प्रमुख रूप से लाभ में रहीं। इसके उलट, इन्फोसिस, बजाज फाइनेंस, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स, लार्सन एंड टुब्रो और एचडीएफसी बैंक के शेयर नुकसान के साथ बंद हुए।

■ ऊर्जा, बैंकिंग एवं धातु शेयरों में खरीदारी से बाजार को सहारा

निवेशकों की धारणा में आया सुधार

जियोजित इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा, अमेरिकी राजदूत की टिप्पणियों से निवेशकों की धारणा में सुधार हुआ और हाल की गिरावट के बाद उपभोक्ता एवं बैंकिंग शेयरों में मूल्य-आधारित खरीदारी देखने को मिली।

एशियाई बाजार में रही बढ़त

एशिया के अन्य बाजारों में दक्षिण कोरिया का कॉस्पी, चीन का शंघाई कम्पोजिट और हांगकांग का हैंग सेंग सूचकांक बढ़त के साथ बंद हुए। यूरोपीय बाजारों में मिला-जुला रुख रहा। शुक्रवार को अमेरिकी बाजार सकारात्मक क्षेत्र में बंद हुए थे। अंतरराष्ट्रीय तेल मानक ब्रेंट क्रूड 0.27 प्रतिशत टूटकर 63.17 डॉलर प्रति बैरल पर रहा।

नई दिल्ली राइट्स टेबल 2026 का शुभारंभ

नई दिल्ली। नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2026 की एक प्रमुख बिजनेस-टू-बिजनेस पहल नई दिल्ली राइट्स टेबल का आज भारत मंडपम में शुभारंभ हुआ। इस पहल के माध्यम से एनडीडब्ल्यूबीएफ ने अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन व्यापार और राइट्स एक्सचेंज के एक महत्वपूर्ण वैश्विक मंच के रूप में अपनी स्थिति को और मजबूत किया है। शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा संचालित एनडीआरटी प्रकाशकों को विभिन्न भाषाओं और क्षेत्रों में अनुवाद तथा वितरण अधिकारों पर बातचीत के लिए एक सुव्यवस्थित बाजार उपलब्ध कराता है। विशेष रूप से एक पेशेवर व्यावसायिक मंच के रूप में डिजाइन किए गए एनडीआरटी (नई दिल्ली राइट्स टेबल) 2026 में कुल 85 प्रकाशक भाग ले रहे हैं, जिनमें लगभग 40 विदेशी प्रकाशक शामिल हैं।

गेल ने राष्ट्रीय पीएनजी अभियान 2.0 को दिया समर्थन

नई दिल्ली। गेल (इंडिया) लिमिटेड ने राष्ट्रीय पीएनजी अभियान 2.0 के तहत देश व्यापी नॉनस्टॉप जिंदगी अभियान में भागीदारी की है। यह अभियान पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड द्वारा चलाया जा रहा है। इसका उद्देश्य पूरे देश में पाइप से मिलने वाली प्राकृतिक गैस और संपीड़ित प्राकृतिक गैस को बढ़ावा देना है। यह अभियान प्राकृतिक गैस से जुड़े सभी प्रमुख पक्षों की एकजुटता को दर्शाता है, जो घरों, व्यापार, उद्योग और परिवहन क्षेत्र के लिए स्वच्छ, सुरक्षित और बेहतर ऊर्जा समाधान अपनाने की दिशा में काम कर रहे हैं। राष्ट्रीय पीएनजी अभियान 2.0 का आयोजन 1 जनवरी से 31 मार्च 2026 तक किया जा रहा है। यह अभियान माननीय प्रधानमंत्री के उस लक्ष्य के अनुरूप है, जिसके तहत वर्ष 2030 तक देश की ऊर्जा खपत में प्राकृतिक गैस की हिस्सेदारी 15 प्रतिशत तक बढ़ाई जानी है।

ग्लोबल सोलर एक्सपो: सौर ऊर्जा से बदलता भारत, व्यापार और घरों के लिए सुनहरा अवसर

रायपुर। भारत तेजी से स्वच्छ और हरित ऊर्जा की ओर बढ़ रहा है, और सौर ऊर्जा इस परिवर्तन का सबसे बड़ा आधार बनकर उभरी है। केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी योजनाओं, बढ़ती बिजली लागत और पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता ने सोलर को आज सबसे लाभकारी निवेश बना दिया है। इसी कड़ी में ग्लोबल सोलर एक्सपो जैसे बड़े आयोजन देश में सोलर बिजनेस, निवेश और तकनीक को नई दिशा दे रहे हैं। व्यवसायों के लिए सोलर: लागत कम, मुनाफा ज़्यादा आज एमएसएमई, फैक्ट्रियाँ, कमर्शियल बिल्डिंग्स और इंडस्ट्रियल यूनिट्स सोलर पावर अपनाकर 30% से 70% तक बिजली बिल की बचत कर रही हैं। 4–5 वर्षों में पूरा निवेश वसूल 25 वर्षों तक लगभग मुफ्त बिजली कार्बन फुटप्रिंट में भारी कमी ईएसजी और सस्टेनेबिलिटी लक्ष्यों की पूर्ति नेट मीटरिंग की सुविधा के कारण अतिरिक्त बिजली को ग्रिड में भेजकर अतिरिक्त आय भी संभव है।

उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक द्वारा पठानकोट जोगिंदरनगर नैरो गेज सेक्शन का निरीक्षण

नई दिल्ली। उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक, श्री अशोक कुमार वर्मा ने आज दिनांक 12 जनवरी 2026 को सबसे पहले जम्मू मंडल के पठानकोट सिटी रेलवे स्टेशन का विस्तृत निरीक्षण किया । इस दौरान जम्मू मंडल के मंडल रेल प्रबंधक, श्री विवेक कुमार तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।जिसमें उन्होंने सबसे पहले पठानकोट रेलवे स्टेशन के स्टेशन मास्टर कार्यालय, बुकिंग, रिटायरिंग रूम व स्टेशन पर चल रहे, पुनर्विकास कार्यों का विस्तृत निरीक्षण किया। साथ पुनर्विकास कार्यों में संबंधित अधिकारियों को विशेष निर्देश जारी किए। इसके बाद महाप्रबंधक ने पठानकोट-जोगिंदरनगर नैरो गेज (762 मिमी) रेलवे लाइन के महत्वपूर्ण खंड के मुख्य रेलवे स्टेशन जिसमें नूरपुर रोड, तलारा, ज्वाली का भी विस्तृत निरीक्षण किया, जिसका उद्देश्य सुरक्षा मानकों की समीक्षा करना, यात्री सुविधाओं का मूल्यांकन करना और इस ऐतिहासिक मार्ग के आधुनिकीकरण की संभावनाओं का पता लगाना था । महाप्रबंधक ने नेरो गेज सेक्शन में आने वाले ट्रैक, पुलों, स्टेशनों और सिग्नलिंग प्रणालियों का गहन निरीक्षण किया। उन्होंने रेलवे अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ बातचीत की और लाइन के सुचारु संचालन को सुनिश्चित करने के लिए उठाए जा रहे कदमों पर विस्तृत जानकारी ली।

शब्द पहेली - 6107

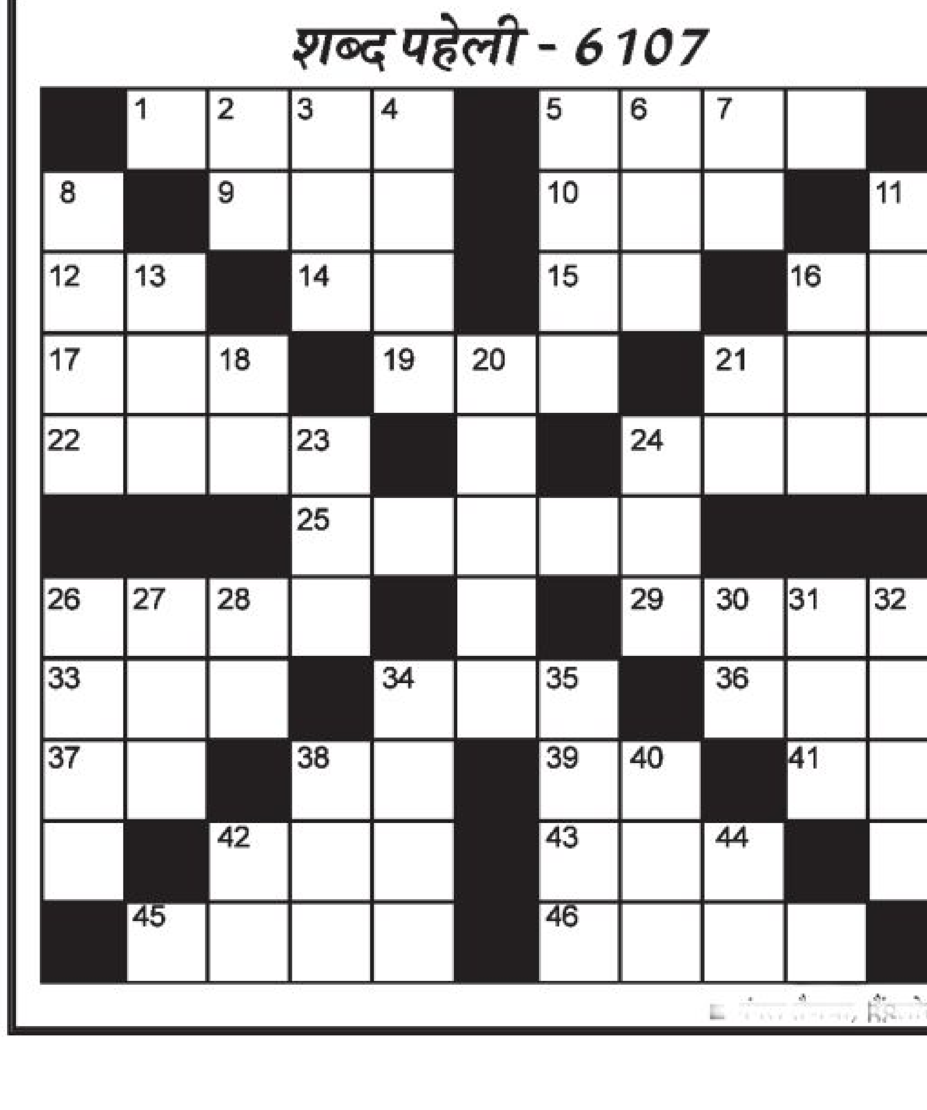

बाएँ से दाएँ
1.लूटमार,डाका–4
5.रपटना –4
9.डोली उठानेवाले–3
10.पुत्र,लड़का–3
12.अधिकार–2
14.नवीन,नया–2
15.एक विदेशी शराब–2
16.कला,हुनर–2
17.मां का प्यार–3
19.दम,बल,जोर–3
21.पपीहा,पपीहरा–3
22.करामात,कारनामा–4
24.शमशीर,कृपाण–4
25.तरंगित,लहरीय–5
26.बोरिया–बिस्तर–4
29.साले की पत्नी–4
33.प्रयास,यत्न–3
34.सहायता,सहयोग–3
36.लीन,तल्लीन–3
37.गहन वन,बुनाई कर्म–2
38.टुकड़ा,कण–2
39.मैं का बहुवचन–2
41.भीगा हुआ–2
42.अंधकार,अंधेरा–3
43.द्रव मापने की इकाई–3
45.प्राचीर,स्तंभ–4
46.बादला,जरबाफ–4

ऊपर से नीचे
2.अधिकार–2
3.जगत,दुनिया–3
4. सुनसान शांति,–4
5.आदत–4
6.साजन, बालम–3
7.क्रमबद्धता–2
8.मूर्ख,बेवकूफ–4
11.बुनाई करने वाला–4
13.कटि,मध्यांग–3
16.धार्मिक आज्ञा–3
18.पितामह–2
20.कमर में पहनने वाला आभूषण –5
21.चलने का ढ़ंग–2
23.पिया,साजन–3
24.दया,रहम–3
26.बेमिसाल, अनूठा–4
27.स्वदेश,मातृभूमि–3
28.जनता,आम लोग –2
30.मैं का बहुवचन–2
31.अभिरुचि,तल्लीनता–3
32.जनता की राय–4
34.उपाधि,पदवी–4
35.देहरी,चौखट–4
38.कक्ष,रूम–3
40.बटाणा,काबुली–3
42.स्तर,परत–2
44.ईश्वर,खुदा,भगवान–2

शब्द पहेली- 6106 का हल